वार्षिक 150/- रुपये नव.-दिस. (संयुक्तांक) 2024 वर्ष 27, अंक 01-02 पृष्ठ - 100 मूल्य 30/-रु.

गोसम्पदा

गोपाष्टमी विशेषांक

सभी को हार्दिक मंगलकामनाएं

भारत माता के ललाट पर गोहत्या का कलंक नेहरु जी उत्तरदायी

FITWELL
YOUR QUALITY OUR PASSION

FITWELL FASTENERS AND FITTINGS INDUSTRIES

(AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED COMPANY)

Backside Nirankari Bhawan,
Dharour, Dehlon Road, Sahnewal,
District Ludhiana, Punjab (INDIA)

+91-98780-05709, +91-62830-22822

sales@fitwellfastener.com
info@fitwellfastener.com

www.fitwellfastener.com

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

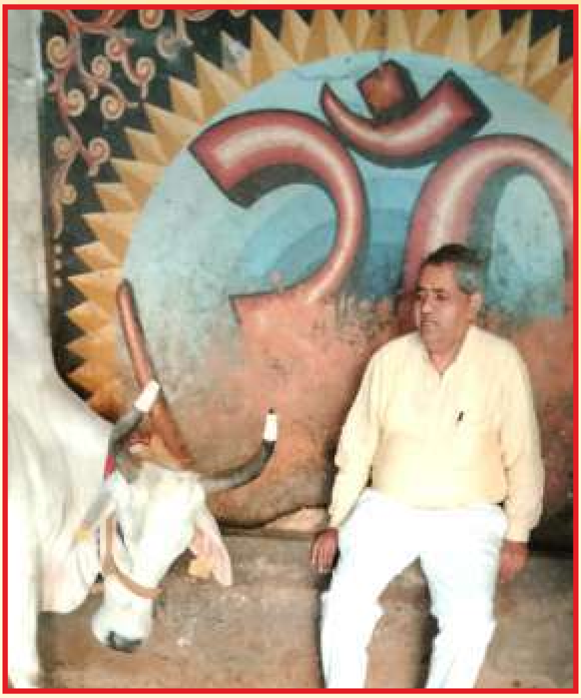

विजेंद्र तंवर

विभाग मंत्री, आर. के. पुरम, नई दिल्ली
विश्व हिन्दू परिषद्

संपर्क : 9810976081

447, डेरा गाँव, नजदीक गवर्नमेंट स्कूल, नई दिल्ली - 110074

॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥

गोमाता की सेवा ईश्वर की आराधना है ।

BHAGWATI MARBLES

A Destination of Satisfaction

Ram Ratan Sharma
Proprietor

Pillor No. 72, Salarpur, Sec-101, Noida

+91 98186 81260
+91 98180 71260

Pillor No. 23, Barola, Sec-49, Noida

rssnoida@yahoo.com

www.bhagwatimarbles.com

www.shridurgamarbles.com

गोपाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ!

With Best Compliments from

YOGENDRA SHARMA

PRESIDENT

Federation of Noida Residents Welfare Associtions (Regd.)

Office FONRWA: A-111, Sector-52, Noida - 201307, G.B. Nagar (U.P.)
Tel.: 0120 4309111, Email: fonrwa52@gmail.com
Residence: BR-2, Sector-45, Noida -201301, G.B. Nagar (U.P.)
Email: yogisharma713.ys@gmail.com
+91-9873308070

॥गावो विश्वस्य मातरः॥
"सनातन भारतीय
धर्म-संस्कृति की
प्राण हैं गोमाता"

With best compliments from

नैवेद्य शर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी, चेयरमैन

ELCON

ELCON ALLOYS (P) LTD.

Plot number 252-256, Jindal Nagar,
Hapur road, Ghaziabad, UP- 201015, India
+917503041500, +918750041500
sales@elconalloys.com
vedant@elconalloys.com
www.elconalloys.com

इन्दौर नगर पालिक निगम
स्वच्छ इन्दौर, स्वस्थ इन्दौर
स्वच्छ सर्वेक्षण 2024
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
लगातार 7 वर्षों से
देश का सबसे स्वच्छ शहर "इंदौर"
स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 में भी
इंदौर रहेगा नंबर 1
इंदौर 8
एक दौर
स्वच्छता में सिरमौर
पुष्यमित्र भार्गव, महापौर, इंदौर
श्री मुन्नालाल यादव, सभापति
-: महापौर परिषद सदस्य :-
श्री राजेन्द्र राठौर, श्री अश्विनी शुक्ल, श्री निरंजनसिंह चौहान (गुड्डू),
श्री राजेश उदावत, श्री अभिषेक शर्मा (बबलू), श्री नंदकिशोर पहाड़िया,
श्रीमती प्रिया डांगी, श्री मनीष शर्मा (मामा),
श्री जीतेन्द्र यादव (जीतू), श्री राकेश जैन

पी.के. बिल्डर्स
(इंजीनियर्स एण्ड कॉन्ट्रेक्टर्स)

E-mail : pkbuilders999@gmail.com

9582222484, 9311555595, 9999036123

1504, सेक्टर-5, वसुन्धरा, गाजियाबाद

पवन त्यागी
9582222484

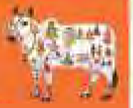

विश्व हिन्दू परिषद्
मेरठ क्षेत्र, गोशाला सम्पर्क प्रमुख
भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद

केन्द्रीय कार्यालय - संकट मोचन आश्रम (हनुमान मन्दिर)
सेक्टर-6, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली, 110022

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. कल्पना सैनी जी
(राज्य सभा सांसद)

210, उत्तराखण्ड सदन, चाणक्यपुरी,
नई दिल्ली-110021

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय गौवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद

संजीव कोल डिपो
झरिया स्टीम, आर ओम, आसाम, यू.एस.ए.
आदि कोयला के थोक व फुटकर विक्रेता

संजीव गुप्ता
जिला कार्यकारी अध्यक्ष - गोरक्षा
संयोजक - पूर्ण सावन भण्डारा समिति
प्रबन्धक - द्वादश ज्योर्तिलिंग महादेव मंदिर

बी.एल.गुप्ता ट्रेडिंग कम्पनी
कृष्णा ब्रिक्स इण्डस्ट्रीज
बी.एल गुप्ता इन्फ्रास्ट्रक्चर कम्पनी
लाला ब्रजलाल जगदीस सरन चैरिटेबिल ट्रस्ट

कोविड़-19 में निशुल्क सेवा कार्य
जरूरतमंदों के लिए
भोजन एव चिकित्सा का प्रबंध

द्वादश ज्योर्तिलिंग, महादेव मंदिर, हरिद्वार रोड, अगवानपुर, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

पवित्र-पावन पर्व
"दीपावली-गोपाष्टमी और
श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव" के
शुभ अवसर पर सभी
देशवासियों को हार्दिक
शुभकामनाएँ

धन्यवाद

धन्यवाद

हिंदू शास्त्रों के अनुसार गाय को देवी का दिव्य रूप माना जाता है जो मनोकामनाएं पूरी करती है। कामधेनु को एक पवित्र और परोपकारी प्राणी के रूप में भी देखा जाता है जो समृद्धि, प्रचुरता और प्रकृति के उपहारों का प्रतीक है।

मै. दीपान फूड्स प्राइवेट लिमिटेड

एम 24- एम आई डी सी तलोजा, नवी मुंबई- 410208 (महाराष्ट्र)

संपर्क - 9321886622

Symbol for
Happiness

BABA NAGA AGRO PVT.LTD
Customer Care
+91 9780599277

Sh. Vinod Chadha

Sh. Sunil Chadha

Abida
BASMATI RICE

Jandiala Road, Village Kadgill, 3 Mile Stone,
Taran Taran, Pincode - 143401 (Punjab)

गोसम्पदा

(गोपाष्टमी विशेषांक-2024)

संकट मोचन आश्रम, सैक्टर 6, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली - 110 022 फोन - 011-26174732

।। ॐ ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल नागपुर. 440 032

दूरभाष : 0712 – 2723003, 2720150. Email- sachivalay@sanghngp.org.in

सरसंघचालक : मोहन भागवत | सरकार्यवाह : दत्तात्रेय होसबाले

आश्विन शु 6. युगाब्द 5126 | 09.10.2024

हार्दिक मंगलकामनाएँ

प्राचीन काल से गीता गंगा गायत्री तथा गौ माता भारत के सनातन धर्म का आधार, परिचय एवं अभिमान का विषय रहा है। गो आधारित कृषि व्यवस्था परंपरा से भारत में स्थापित हुई। गो आधारित कृषि पूर्ण रूप से पर्यावरण पूरक व्यवस्था है। 'आरोग्यम् धनसंपदा' का आधार गो संपदा ही है। प्राचीन काल से जन्म से लेकर मृत्यु तक गौ माता जनजीवन के केंद्र बिंदु में स्थिरपद रही है। ग्रामीण क्षेत्र में गोपालन समाज का सर्वमान्य, सर्वप्रिय अर्थार्जन का साधन सदा रहा है। भारतीय गो वंश का आर्थिक, धार्मिक, पौराणिक, आध्यात्मिक महत्व सर्वोपरि है। तदर्थ प्रयासरत भारतीय गो वंश संरक्षण संवर्धन परिषद अपने विविध प्रकल्पों द्वारा यह कार्य निरंतर दृढ़ता से चला रही है, यह अभिनंदनीय, प्रशंसनीय है।

गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर 'गोसंपदा' पत्रिका का गोपाष्टमी विशेषांक भारतीय गो वंश संरक्षण संवर्धन के समग्र विषयों पर अभ्यास पूर्ण, उपयुक्त, अनुकरणीय उपक्रमों के लेखों से समृद्ध होने के कारण यह विशेषांक समाज में 'गो रक्षा - मम दीक्षा' मंत्र की जागृति करेगा तथा प्रत्यक्ष कृषि एवं कृषि वाणिज्य से जुड़े बंधुओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा। आप सभी को गोपाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं तथा गोपाष्टमी विशेषांक के व्यापक प्रचार प्रसार हेतु अनेक मंगल कामनाएं।

मोहन भागवत

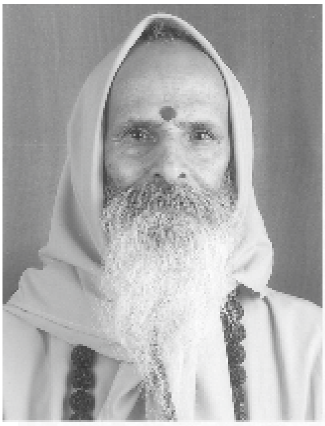

संदेश

अखण्ड परम धाम,
रानी गली, सप्त सरोवर
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सच्चिदानन्द परमेश्वर सृष्टि के समस्त रूपों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। लेकिन कुछ विशेष रूपों में उनके दैवी गुण प्रत्यक्ष अनुभव हो रहे हैं। गाय, गंगा इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। यही कारण है कि हमारे ऋषियों, मुनियों व चिन्तकों ने गो-महिमा का मुक्तकंठ से गुणगान किया है। इतिहास साक्षी है कि गो-रक्षा हेतु हमने समय-समय पर अनेकों बलिदान भी दिए हैं। शास्त्रों ने गो सेवा को मानव जीवन के चार पुरुषार्थ "धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष" की प्राप्ति का सरल व सहज साधन माना है।

गोसेवा के संरक्षण व संवर्धन में संलग्न सभी बंधु इस पवित्र उद्देश्य में सफल हों एवं गो-सम्पदा विशेषांक प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं हार्दिक आशीर्वाद।

(म.म. युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि)
स्वामी : श्रीराम अन्नक्षेत्र तीर्थ सेवा न्यास

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

टेलीफैक्स : 91-11-26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली - ११००२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHARAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

शुभ संदेश

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी, ५१२६ - नवबर ५, २०२४

भारत के सांस्कृतिक व आर्थिक जीवन का आधार - गौपालन

सहस्त्राब्दियों से भारतवर्ष में गौपालन इसके सांस्कृतिक, पारिवारिक और आर्थिक जीवन का इतना सशक्त संबल रहा है कि यह गौपालन कालावधि में गौपूजन तक प्रोन्नत हो गया। गौ में समस्त देवों का निवास देखने की हिंदू दृष्टि इस संबल का सटीक प्रमाण है। सांस्कृतिक रूप से गौ का महत्व इसके मातृवत सरल स्वभाव, पारिवारिक सदस्य जैसा व्यवहार तथा वेद आदि ग्रंथों में इसके आध्यात्मिक स्वरुप के निरुपण के कारण सुस्थापित है। पृथ्वी पर जन्मदायनी जननी के बाद आज तक माँ के पवित्र और सम्माननीय आसन पर गौ को ही प्रतिष्ठित किया गया है। विभिन्न सनातनी परम्पराओं में अनेक धार्मिक विषयों पर विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है, परन्तु गौ के देवतुल्य सम्मान के विषय में प्रत्येक कालखड में समस्त परम्पराओं में मतैक्य रहा है। इससे भारत में अभी तक गौ के प्रति भावात्मक पक्ष अत्यंत सबल रहा है जो पिछले कुछ दशकों से क्षीण होता दिखाई देता है।

अतएव वर्तमान कालखंड में भारत में गौ के आर्थिक महत्व को रेखांकित करना अनिवार्य हो गया है। सम्पूर्ण विश्व रसायनिक उत्पादों के माध्यम से अधिक उत्पादकता एवं कीटनाश के भ्रमजाल में जकड चुका है। कृषि के यंत्रीकरण और परिवहन साधनों के आधुनिकीकरण के कारण गौपुत्र की उपादेयता समाप्तप्राय मान ली गई है। परन्तु रसायनिक उत्पादों के कृषि में उपयोग के कारण मानव स्वास्थ्य, भूमि और जल के प्रदूषित के चलते पर्यावरण पर पड़ रहे घातक प्रतिकूल प्रभाव का अभी तक सही आकलन और मूल्यांकन नहीं किया गया है। साथ ही गौ-उत्पादों का मानव जीवन में अनेक लाभकारी उपयोगों के बारे में कुछ सतही जानकारी तो अवश्य है परन्तु पूर्ण आश्वस्ति के स्तर से ये अभी भी वंचित हैं।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में गौ-उत्पादों को समाज में स्थापित करने के लिए दो स्तरों पर एक साथ कार्य करना आवश्यक है। पहले, इनकी उपयोगिता को आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर सिद्ध करने हेतु अनुसंधान, पेटेंट, जागरण और विपणन की महती आवश्यकता है। साथ ही, रसायनिक उत्पादों के उपयोग से मानव जीवन और पर्यावरण पर होने वाली स्थाई हानि के बारे में सही आकलन कर जागरण करने से प्राकृतिक और जैविक कृषि को प्रोत्साहन मिलेगा।

अन्य के साथ भारतीय गौवंश रक्षण-संवर्धन परिषद् इन विषयों पर अनेक दशकों से कार्य करती रही है। जागरण के प्रयासों में इसकी नियमित प्रकाशित हो रही पत्रिका और विशेषांक बड़े महत्व के हैं। मैं गोपाष्टमी ५१२६ के अवसर पर प्रकाशित हो रहे विशेषांक की सफलता की कामना करता हूँ।

(बजरंग बागड़ा)
महामंत्री

Website : www.vhp.org, E-mail : hinduvishwa@gmail.com, vhpintlhqs@gmail.com

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

टेलीफैक्स : 91- 11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

हार्दिक मंगलकामनाएं

27 अक्टूबर, 2024

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि गोपाष्टमी के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद के गोरक्षा विभाग द्वारा "गोपाष्टमी विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत की संस्कृति ऋषि–कृषि आधारित रही है और मानव–प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी रही है। इस सब का आधार गोमाता हैं। वर्तमान में भारतीय नस्ल की गायों का भारत में तथा कई अन्य देशों में शोध के आधार पर अध्ययन बड़ी तेजी के साथ किया जा रहा है, उसके जो परिणाम निकल कर आ रहे हैं उनके आधार पर गोमाता की सुरक्षा–सेवा–संवर्धन करने से भविष्य में विश्व कल्याण (आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि) होने वाला है। भारत के द्वारा जो कहा जा रहा था, कहा जा रहा है वह विश्व के मानव स्वीकार करने की स्थिति में आते जा रहे हैं, यह स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर हो रहा है।

सत्यतः गोमाता–गोवंश मनुष्य सहित सम्पूर्ण सृष्टि के लिए परमपिता परमेश्वर की दिव्य देन है, इसमें तैंतीस कोटि देवी–देवताओं का वास है। विशेषरुप से गोमाता ही धर्म–अर्थ–काम एवं मोक्ष दिलाने में सक्षम हैं, अन्य कोई भी प्राणी नहीं।

आशा है गोपाष्टमी विशेषांक के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी समस्त पाठकों एवं गोभक्तों तक पहुंचेगी, जिससे वे गोसेवा–रक्षा एवं सम्वर्धन हेतु प्रेरित होंगे।

विशेषांक का उद्देश्य सफल हो, ईश्वर से यही मंगलकामना। इस महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न गोरक्षा विभाग के सभी बंधुओं को भी मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

भवदीय

दिनेश चन्द्र

(दिनेश चन्द्र)
प्रबंध समिति सदस्य

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

टेलीफैक्स : 91-11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM | HANUMAN MANDIR|, SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM , NEW DELHI-110 022 |BHARAT|

09 अक्टूबर, 2024

हार्दिक शुभकामनाएं

बंधुवर।

गोपाष्टमी के शुभ प्रसंग पर गाय–गोवंश के संबंध में विशेषांक प्रकाशित करने का अर्थात् गोवंश के संबंध में अधिक जानकारी समाज तक पहुंचाने का आपका प्रयास प्रशंसनीय है।

गोमाता की रक्षा एवं पालन से हमारा देश रोगमुक्त, कर्जमुक्त, प्रदूषण व कुपोषणमुक्त, साथ–ही–साथ शुद्ध अन्न से भरपूर होगा। भूमि बंजर नहीं होगी, खेती सस्ती होगी, किसान को कर्ज से दबकर आत्महत्या नहीं करनी पड़ेगी। साथ ही वर्तमान में मौजूद जटिल व ज्वलंत समस्याओं का समाधान भी संभव हो सकेगा।

हमारा भारत स्वावलंबी, सुखी व संपन्न बनने की ओर अग्रसर होने लगेगा। गाय–गोवंश का यह तत्व ज्ञान हमारे देश के नीति–निर्धारकों और वैज्ञानिकों को समझ में आ जाए, यही परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

भवदीय

चम्पतराय

(चम्पतराय)
केन्द्रीय उपाध्यक्ष

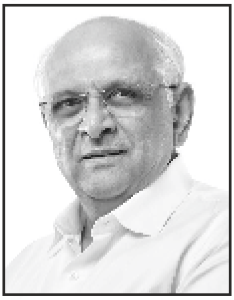

भूपेन्द्र पटेल
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

दि. १७-१०-२०२४

संदेश

हिन्दू संस्कृति में गाय को माता के रूप में पूजी जाती है। **भारतीय गोवंश रक्षण – संवर्धन परिषद, नई दिल्ली** द्वारा विश्व हिन्दू परिषद, का गोरक्षा विभाग अंतर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विक्रम संवत २०८१ में ०९ नवम्बर, २०२४, गोपाष्टमी के अवसर पर **"गोसम्पदा"** पत्रिका का **"गोपाष्टमी विशेषांक"** गायमाता के विविध पहलुओं पर प्रकाशित हो रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई।

इस विशेषांक में भारतीय गोवंश के नस्ल का सुधार, गोमूत्र सहित पंचगव्य का वैज्ञानिक विश्लेषण, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक जानकारी, प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण इत्यादि आलेखों से पत्रिका रसप्रद बनी रहेगी।

भारतीय गोवंश रक्षण – संवर्धन परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका का **"गोपाष्टमी विशेषांक"** सफलता प्राप्त करें यही शुभेच्छा।

आपका,
(भूपेन्द्र पटेल)

To,
Shree Dinesh Upadhyay, President,
Akhil Bharatiya Goraksha,
Sankat Mochan Ashram, Sector – 6,
Ramkrishnapuram, New Delhi – 110022.
Email : gosampada@gmail.com
Mo. 9644642644, 9810055638

Apro/ sb/2024/10/17/jp

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

01 नवंबर, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 09 नवंबर, 2024 को गोपाष्टमी के अवसर पर 'गोसम्पदा' पत्रिका का 'गोपाष्टमी विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में गाय को माता का स्थान दिया जाता है। यह हमारे जीवन से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी है। गौमाता की सेवा करना सभी का कर्तव्य है। इसके दृष्टिगत संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। मुझे आशा है कि विशेषांक में गोवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु उपयोगी सामग्री का संकलन किया जाएगा।

'गोपाष्टमी विशेषांक' के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2289017 / 2289010 / 2289167 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

ড° হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা
Dr. Himanta Biswa Sarma

सत्यमेव जयते

মুখ্যমন্ত্ৰী, অসম
Chief Minister, Assam

02 November, 2024

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बदलते परिपेक्ष्य में गोवंश के महत्त्व को पुनः आख्यायित करने के लिए विश्व हिन्दू परिषद का गोरक्षा विभाग प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विक्रमी संवत् 2081 में आगामी गोपर्व गोपाष्टमी 09 नवंबर, 2024 के शुभ अवसर पर 'गोसम्पदा' पत्रिका का "गोपाष्टमी- विशेषांक" भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद की ओर से प्रकाशित करने जा रहा है।

भारतीय परम्परा में समृद्धि की गणना गोधन से ही की जाती थी। प्राचीन काल से ही भारत की सनातन वैदिक संस्कृति 'गौसंस्कृति' मानव के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास पर आधारित रही है। यह एक पारंपरिक धन है जो हमें स्वाभाविक ढंग से चतुर्दिक समृद्धि की ओर ले जा सकता है।

गोवंश आधारित कृषि से अमृततुल्य अन्न, साग - सब्जियां एवं फल पैदा होते हैं। गोवंश आधारित कृषि से रोजगार में आठ से दस गुणा वृद्धि होती है। जल व वायु प्रदूषित नहीं होते, उत्पादन में सभी की भागीदारी होने से आय का समान वितरण होता है। देश के हर नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि वे गोवंश पालन, संवर्धन और संरक्षण में तन-मन-धन से सहभागी बनें।

मुझे विश्वास है कि 'गोसम्पदा' पत्रिका के "गोपाष्टमी- विशेषांक" के माध्यम से सभी गोवंश के महत्त्व को जान पाएंगे और अपने जीवन और कर्म में गौ-स्नेह को नये रूप में पुनर्स्थापित कर सकेंगे।

मैं भारतीय गोवंश रक्षण- संवर्धन परिषद के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ साथ ही पत्रिका के प्रकाशन एवं उसकी व्यापक उपयोगिता हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भवदीय,

(डॉ. हिमंत विश्व शर्मा)

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय गौवंश रक्षण–संवर्धन परिषद
विश्व हिन्दू परिषद, पंजाब प्रान्त

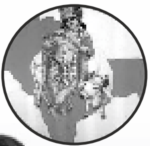

नवनीत शर्मा
प्रांत प्रमुख

कन्हेया लाल प्रोहित
प्रांत अध्यक्ष

विनय वष्शिट
प्रांत मंत्री

जारी कर्ता:- गो रक्षा प्रांत समिति M. 73553-61135, 94171-73221

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

देवेंद्र पाल
प्रांत प्रमुख

विनोद त्यागी
प्रांत कोषाध्यक्ष

भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद उत्तराखंड

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

प्रमोद कुमार गोयल
प्रदेश उपाध्यक्ष
प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल, उत्तराखण्ड
अध्यक्ष, गौशाला सभा, रूड़की
संरक्षक, भारत विकास परिषद, शाखा मंगलौर

177/15, कमला कुटीर, 10, सिविल लाईन्स,
रूड़की, हरिद्वार मो. 9837048751

गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-01-02 नवम्बर-दिसम्बर - 2024 पृष्ठ - 100

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी
उपाध्यक्ष, विहिप

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 30/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	20
गाय का मातृत्व	22
हमारी संस्कृति का आधार हैं गोमाता	24
असंभव कुछ भी नहीं	26
ब्रह्माण्ड के अंदर सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं गोमाता	28
वैज्ञानिक मेरी माँ	30
विकसित भारत का मूल आधार गोवंश आधारित खेती	34
गोमाता की सेवा-रक्षा है सर्वोपरि धर्म	36
पंचगव्य और चिकनगुनिया	37
सृष्टि की सतत् गतिशीलता के लिए गोवंश अपरिहार्य	38
चकित करते हैं गाय पर हो रहे शोध	42
पद्मा गाय	46
आर्थिक समृद्धि का आधार : गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन	47
आईपीसी की धारा 272 : दूध में मिलावट पर आजीवन कारावास	54
पर्यावरण रक्षक : गैया मैया	58
ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार बन रहा गोधन	62
गो-घृत की स्वास्थ्य संवर्द्धन और रोग निवारण में अहम् भूमिका	66
शहर के लिए तीन स्तंभ गौशाला : एक कारगर विकल्प	70
गोधन का धार्मिक-वैज्ञानिक माहात्म्य	74
गोवंश रक्षार्थ कानून (संशोधित)	78
Women and Indigenous Caw	86
Gopasthami : Gou Pooja Maha-Utsav	88
Animal Custody Rules 2017 and Section 325 of new BNS 2023	90

सम्पादकीय

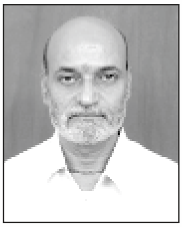

गाय मरी तो बचता कौन, गाय बची तो मरता कौन

भारतमाता के ललाट पर गोहत्या का कलंक

नेहरू जी उत्तरदायी

– लाला हरदेव सहाय

भारत जैसे आध्यात्मिक–अहिंसक राष्ट्र में अशोक महान् सहित अनेकानेक चक्रवर्ती सम्राट, राजा–महाराजाओं के राज्य में जीव–हत्या पर ही सम्पूर्णरूप से प्रतिबंध था; गोहत्या का विषय तो सभी लोगों के लिए अकल्पनीय दुष्कृत्य था। गोहत्या को महापाप माना–स्वीकारा गया था और अभी भी है। मानव–हत्या से भी बड़ा अक्षम्य अपराध गोहत्या को माना गया है। इस विषय का हमारे सम्पूर्ण आर्ष साहित्य में सविस्तारपूर्वक उल्लेख भी किया गया है। इस संदर्भ में पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर का **'न्याय'** जगविख्यात है। इसके अलावा चक्रवर्ती सम्राट महाराजा दिलीप सहित अनेक ऋषि–मुनियों की सत्य कथाएं (काल्पनिक नहीं) वेदों–पुराणों में मिलती हैं जिसमें वे 'गाय' की रक्षा के लिए अपने प्राण त्यागने हेतु भी उद्यत हो गये।

इस ऐतिहासिक स्वर्णिम पृष्ठभूमि के बावजूद हमारे देश में अभी भी गोहत्या और गोमांस–भक्षण जारी है, जिस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए कानून नहीं बनाया जा सका है। उल्लेखनीय है कि आजादी मिलने के पूर्व ही प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं ने एक स्वर में घोषणा की थी – "आजादी मिलते ही पहला कानून 'गोहत्या' रोकने हेतु बनाया जाएगा।" इस संबंध में महात्मा गांधी ने तो यह भी कहा था – "गोहत्या का प्रश्न आजादी के प्रश्न से भी अधिक महत्वपूर्ण है।" स्मरण रहे, 1857 की क्रांति की जन्मदात्री हमारी 'गोमाता' ही थीं। इस सब के बाद भी हमारा हिन्दुस्थान आजादी की 78वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी में जुटा हुआ है, दूसरी ओर गोहत्या गोमांस–भक्षण जारी है, कितनी हृदय विदारक बात है। सत्य तो यह है कि गोमाता जैसा परोपकारी–कल्याणकारी, दिव्य प्राणी संपूर्ण ब्रह्मण्ड में है ही नहीं, क्योंकि गोामता इस पृथ्वी पर साक्षात ईश्वरस्वरूप हैं, जो मनुष्य को सब कुछ (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष) देने में समर्थ हैं, पूरी मानवजाति का भरण–पोषण करने की सामर्थ्य रखती हैं। ऐसी सर्वदेवमयी गोमाता की सेवा–रक्षा के लिए स्वयं भगवान को भी मानवस्वरूप (गोपाल–गोविंद) में जन्म लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसीलिए यह सोचने–समझने के लिए विवश होना पड़ता है कि आखिर गोहत्या एवं गोमांस–भक्षण को अभी तक क्यों नहीं रोका जा सका। इसके लिए कौन दोषी–उत्तरदायी है? इस विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाल रहे हैं परम गोभक्त लाला हरदेव सहाय जी।

सहाय जी के अनुसार नेहरू जी अपनी **'आत्मकथा'** में लिखते हैं कि "किस प्रकार से भारतवासियों ने, विशेषकर हिन्दुओं ने पवित्र गाय से विनम्रता एवं अहिंसा जैसे गुण ग्रहण किए।" इसी विषय पर आगे नेहरू जी के शब्द – "विभिन्न देशों ने विभिन्न पशुओं को अपनी महत्वाकांक्षा या अपने चरित्र का प्रतीक माना है। अमेरिका और जर्मनी ने **गरुड़ को**, इंग्लैंड ने **सिंह एवं बुलडॉग** (एक किस्म का भारी भरकम कुत्ता) को, फ्रांस ने लड़ते हुए **मुर्गों को** और पुराने रूस ने **भालू को** अपना प्रतीक माना है। ये संरक्षक पशु किस प्रकार इन देशों के राष्ट्रीय चरित्र को ढालते हैं? इनमें से अधिकतर आक्रामक, लड़ने वाले शिकारी पशु ही हैं। तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इन देशों के लोग, जो हमेशा यह उदाहरण या आदर्श अपने सामने रखते हैं, इन्हीं पशुओं के अनुरूप अपना चरित्र ढालते हैं और आक्रामक दृष्टिकोण अपनाते हुए गरजते हैं और दूसरों का शिकार करने के लिए झपटते हैं। और न ही यह आश्चर्य की बात है कि हिन्दू सौम्य स्वभाव का है, अहिंसक है, क्योंकि उसका संरक्षक प्राणी **गाय** (गोमाता) है।"

लाला जी के मन में पहले नेहरू जी के प्रति आदरभाव था, लेकिन समय बीतने के साथ–साथ लाला जी के दिल में नेहरू जी के प्रति आदरभाव घटता गया और एक दिन ऐसा आया जब वह उनके कट्टर विरोधी हो गये। इस विरोध का मुख्य कारण गोरक्षा का प्रश्न ही था। जिस समय देश स्वतंत्रता के सन्निकट था, उस समय असंख्य लोगों ने लाला जी व अन्य महानुभावों के नेतृत्व में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए सरकार, विशेषकर नेहरू जी, पर दबाव डालने के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ दिया। इस संबंध में लाला जी, सतगुरू प्रताप सिंह नामधारी तथा अन्य सदस्यों का एक शिष्टमंडल 8 अगस्त, 1947 को नेहरू जी से मिला। नेहरू जी ने शिष्टमंडल की बात बड़े धैर्यपूर्वक सुनी और उन्हें आश्वासन दिया कि सरकार इसके लिए विशेषज्ञों की एक समिति का गठन करेगी और उसकी सिफारिशों पर अमल करेगी। नेहरू जी ने इस समिति की रिपोर्ट आने तक आंदोलन वापस लेने का अनुरोध किया। शिष्टमंडल ने यह अनुरोध स्वीकार करते हुए अपना आंदोलन तत्काल स्थगित कर

दिया।

लाला जी के अनुसार बाद की घटनाओं से यह पता चलता है कि **गोरक्षा के प्रश्न पर नेहरू जी की कथनी और करनी में बहुत अंतर था।** एक उदाहरण देते हुए लाला जी निम्नलिखित शब्दों में उनका पर्दाफाश करते हैं –

"हमें आशा थी कि नेहरू जी 8 अगस्त 1947 के अपने वचनों का पालन करेंगे और पूरे देश में तत्काल गोहत्या पर प्रतिबंध लगाएंगे। किन्तु नेहरू जी ने तो इसके विपरीत 20 दिसंबर 1950 के अपने पत्र (संख्या एफ. 13–15/49 एल.) के माध्यम से राज्यों को निर्देश दिया कि वे संविधान की धारा 48 की इस प्रकार व्याख्या न करें कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लग गया है।" लाला जी गोरक्षा के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। 27 अगस्त, 1953 को गोभक्तों का एक और शिष्टमंडल फिर नेहरू जी से मिला। बातचीत के दौरान, लाला जी के अनुसार–**"नेहरू जी ने न केवल संविधान में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने के प्रावधान को स्वीकार किया, बल्कि उन्होंने शिष्टमंडल को यह आश्वासन भी दिया कि इस विषय में उनका 'अनुकूल रवैया' रहेगा।"** किन्तु जब लाला जी को नेहरू जी की कार्रवाई का पता चला तो उन्हें बड़ा आघात पहुंचा। लाला जी लिखते हैं – "अभी शिष्टमंडल से हुई मुलाकात को एक महीना भी नहीं बीता था कि 24 सितंबर, 1953 को नेहरू जी ने राज्यों के कृषि मंत्रियों को निर्देश दिया कि गोहत्या पहले की तरह जारी रखी जाए। यह निर्देश देते समय वह अपने शब्दों **"अनुकूल रवैया"** को पूरी तरह भूल गये थे।" लाला जी की नेहरू जी से एक और महत्वपूर्ण मुलाकात 3 फरवरी, 1954 को आनंद भवन, इलाहाबाद में एक शिष्टमंडल के साथ हुई। इस मुलाकात में नेहरू जी को देश के 111 प्रमुख संतों के हस्ताक्षरों वाला एक ज्ञापन भी दिया गया, जिसमें गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की गई थी। इस ज्ञापन में लिखा था – "गोहत्या भारत–माँ के चेहरे पर बहुत बड़ा धब्बा है। यह हमारे देश की परम्परा, धर्म और युगों पुरानी संस्कृति के विरुद्ध है। अतः हम गंभीरतापूर्वक सरकार से अनुरोध करते हैं कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।" जहां तक लाला जी समझ पाये थे, नेहरू जी कानून के द्वारा गोहत्या बंद करने के पक्ष में नहीं थे। इसका एक उदाहरण उस घटना से मिलता है, जब सेठ गोविंददास जी ने 27 नवंबर, 1953 को संसद में गोरक्षा बिल पेश किया। सेठ जी कांग्रेस के सांसद थे, फिर चाहे यह उनका व्यक्तिगत गैर सरकारी बिल था। नेहरू जी ने बड़ी चतुराई से बिना खुला विरोध किए इस बिल को पास नहीं होने दिया। नेहुरू जी के इशारे पर कांग्रेस सदस्यों पर दबाव डाला गया। यह सब कैसे हुआ, लाला जी के शब्दों में – **"पहले कुछ कांग्रेसियों द्वारा सेठ गोविंददास जी पर इस बिल को वापस लेने के लिए दबाव डाला गया। फिर जिस दिन इस बिल पर मतदान हुआ, उस दिन कुछ उच्च पदाधिकारियों ने कांग्रेस के संसद सदस्यों को सदन छोड़ कर चले जाने को कहा।"**

नेहरू जी ने अपने गाय विरोधी रवैये का एक और स्पष्ट प्रमाण दिया – जब सेठ गोविंददास जी के बिल पर संसद में बहस के समय उन्होंने त्यागपत्र देने की धमकी दी। लोकसभा के इस दृश्य का वर्णन करते हुए लाला जी 17 जनवरी, 1956 को लिखते हैं – 2 अप्रैल, 1955 को इस बिल पर बोलते हुए नेहरू जी ने लोकसभा के सदस्यों से इस बिल को पूरी तरह अस्वीकार करने को कहा। इस पर संसद सदस्यों–सर्वश्री नंदलाल जी शास्त्री (रामराज्य पार्टी) और एन. सी चटर्जी एवं वी. जी. देशपांडे (हिन्दू महासभा) ने कहा – "इसका अर्थ यह है कि आप चाहते हैं कि गोहत्या होती रहे।' इसके परिणामस्वरूप सदन में हंगामा खड़ा हो गया और नेहरू जी ने इस्तीफा देने तक की धमकी दी।" नेहरू जी के इस्तीफा देने की धमकी से लाला जी को गहरा धक्का लगा। अब गोरक्षा के संबंध में नेहरू पर से लालाजी का विश्वास पूरी तरह से उठ गया। एक अन्य बात जिसने लाला जी को नेहरू जी का घोर विरोधी बना दिया, वह थी दिल्ली के अशोका होटल में गोमांस का परोसा जाना। यह होटल भारत सरकार के द्वारा चलाया जा रहा था, जिसके प्रमुख नेहरू जी थे। अपने हृदय की पीड़ा व्यक्त करते हुए लाला जी 1961 में लिखते हैं – "अशोका होटल कोई निजी व्यापार संस्थान नही है, यह सरकारी व्यापारिक संस्थान है। सम्राट अशोक अहिंसक शासक थे। उनके साम्राज्य में कोई पशु, यहां तक कि चिड़िया मारने की भी मनाही थी। यह एक बड़ी विडंबना ही है कि अशोक के नाम पर बने इस होटल में गोमांस परोसा जाता है। यह तो अशोक महान के नाम का उपहास है। अतः मैं सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह या तो यहां गोमांस परोसना बंद कर दे या इस होटल का नाम **'नेहरू होटल' रख दिया जाए।**" इसी प्रकार अपने मन का दुःख व्यक्त करते हुए लाला जी सन 1961 में लिखते हैं –

कांग्रेस ने अपना चुनाव चिह्न बनाया है **'बैलों की जोड़ी'**, क्योंकि कांग्रेस पार्टी हिन्दुओं को अपनी ओर खींचना चाहती है, विशेषकर किसानों और महिलाओं को। चूंकि कांग्रेस पार्टी शासन करने वाली पार्टी है और गोहत्या के लिए मुख्यतया दोषी है, इसलिए इसका **चुनाव चिह्न बैलों की जोड़ी के बजाय 'बूचड़खाना' होना चाहिए।**"

लाला जी ने नेहरू जी के खिलाफ अनेक पुस्तकें लिखीं, लेकिन जो सबसे आक्रामक पुस्तक लिखी, वह है **"भारत माँ की दुर्दशा क्यों?"** यह पुस्तक मार्च 1961 में दिल्ली से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में गोहत्या के लिए मुख्यतः नेहरू जी को उत्तरदायी ठहराया गया है।

उपर्युक्त तथ्यों–विवरणों के अलावा और भी अनेकानेक प्रमाण हैं जिससे स्पष्ट होता है कि 'गोहत्या' जारी रहने के लिए केवल और केवल जवाहर लाल नेहरू उत्तरदायी हैं, अन्य कोई नहीं।

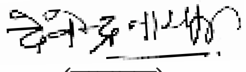

(सम्पादक)

जय श्रीराम!!   जय श्रीगोमाता!!   जय श्रीगोपाल!!

श्रद्धेय स्व. बालकृष्ण नाईक (वरिष्ठ प्रचारक, विहिप)

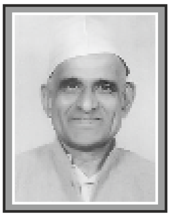

पूज्य अशोक सिंहल जी का पावन स्मरण

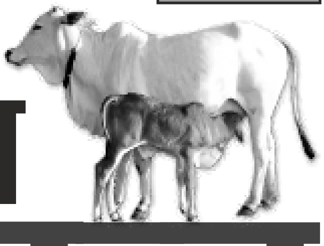

गाय का मातृत्व

काल प्रवाहमान है। परिवर्तन स्वाभाविक है। सद्यः के बदलाव में कोरोना ने अपना अमंगलकारी रूप प्रकट किया था। जनसमाज में उस कारण भय भी था। अमंगल में मंगल छिपा होता है। हमारी बाहर की भागदौड़ काफी कम हुई थी। कुछ मात्रा में ही सही हमारी अंतर्मुखता बढ़ी थी। सद्ग्रंथों का अध्ययन हो रहा था। पूजा–अर्चन बढ़ा था। पारिवारिक जीवन का अनुभव हो रहा था, उसकी गहराई हृदय को छू रही थी।

रामकृष्ण परमहंस जी ने कहा है कि भगवाती मां करुणामयी हैं। वह जीवात्मा को विविध अनुभवों में से ले जाती हैं। सुख–दुःख, प्रसन्नता–विषण्णता इत्यादि द्वन्द्वों में से ले जाती हैं। उनकी अनित्यता का बोध कराती हैं। इनके परे जाने की भावना प्रकट होती है, धीरे–धीरे बलशाली होती है। परम सत्य की अनुभूति की दिशा में जीवात्मा अग्रसर होने लगता है।

स्टैचू–मूर्ति नाम का खेल बचपन में खेलते थे। गोल चक्कर में दौड़ना होता था। "मूर्ति" कहा जाता था। तत्काल जिस स्थिति में हो उसी में स्थिर अडोल रहना होता था। रोमांचक खेल है। आज प्रकृति माता ने "मूर्ति" कहा है। कोरोना का

गोमाता देती हैं। हम भी दें। उसकी भी सेवा करें। उसमें हमारा भी कल्याण है। परम श्रद्धेय अशोकजी का पावन स्मरण (17 नव. 2015) हमें इसी दिशा में प्रेरणा देता है। हम उसे हृदय से स्वीकारें, जीवन में उतारें, सम्प्रसारित करें, सभी समाज का मंगल हो, इस हेतु आशुतोष बन नीलकंठ–सा आचरण स्वीकारें तो ही शिव सधेगा।

रूप लिया था। कुछ अवधि के लिए ही सही हम अपने–अपने स्थानों में आबध्य हो गये, लॉक–डाउन हो गये।

पश्चिम बंगाल में प्रचारक था। हावड़ा जिले में बागनान स्टेशन के पास दुर्लभपुर नाम का छोटा गांव था। भीमाचरण मित्र नामक भाई वहां की संघ शाखा के कार्यवाह थे। एक दिन उनके घर में बातचीत के अंतर्गत उन्होंने कहा, "कोष्टोदा, हमारा एकान्तवर्ती (संयुक्त) परिवार है, उसमें इक्यावन से अधिक सदस्य हैं। भाई–बहन संतानादि मिलाकर 13–14 संख्या थी। उसमें गोवंश की संख्या को जोड़ा। कुत्ते एवं बिल्ली की संख्या जोड़ी। वह इक्यावन से अतिक्रम कर गयी। हम प्राणीमात्र को अपना मानते हैं। गोमाता–गोवंश का उसमें विशेष स्थान है। अपनी संस्कृति की यही एकात्म दृष्टि है।

कोरोना के कारण मार्च से सितम्बर 2020 तक केन्द्रीय कार्यालय में रहना हुआ। सुबह शाखा के बाद गोशाला में जाने का आनंद प्राप्त होता रहा। परम श्रद्धेय अशोकजी के निर्देशन में ही गोशाला प्रारंभ हुई है। उनका गोशाला में जाना, गौओं को सहलाना, गुड़ आहार देना, प्यार से बात करना सब स्मरण आता है। मैं सुबह गोशाला जाता हूं तो 12 गोवंश के सत्संग में रहने का सौभाग्य मिलता रहा। ब्राह्मणी, नन्दिनी, नारायणी, शुभि, सुरभी, हिमांशी, हेमंता, वासंती, बुधनी, शंकरा, मंगलू एवं हीरा इन 12 नामों का उच्चारण करना द्वादश ज्योतिर्लिंगों के नामों का उच्चारण करने का समाधान देता रहा है। गायें संतानों को दुग्ध पिलाती हैं, वह दृश्य अत्यंत सुखद रहता था। संतान मां से दूध मांगता है और मां अत्यधिक प्यार से दूध पिलाती है। यह दृश्य ह्रदयस्पर्शी होता था। गौ और शिव के तीन गुणों में समानता प्रतीत हुई। दोनों ही नीलकंठ हैं, अन्यों के दुःख–दर्द–संकट दूर करते हैं। दोनों आशुतोष हैं–अत्यंत अल्प में संतुष्ट होते हैं। दोनों शुभकारी हैं, शिव हैं। इस साम्य के चिंतन में जो समय बीतता वह आनंदप्रद था।

गोमाता देती हैं। हम भी दें। उसकी भी सेवा करें। उसमें हमारा भी कल्याण है। श्रद्धेय अशोकजी का पावन स्मरण हमें इसी दिशा में प्रेरणा देता है। हम उसे ह्रदय से स्वीकारें, जीवन में उतारें, सम्प्रसारित करें, सभी समाज का मंगल हो, इस हेतु आशुतोष बन नीलकंठ–सा आचरण स्वीकारें तो ही शिव सधेगा। परम करुणामय महादेव हमें शक्ति प्रदान करें, गोमाता का शुभाशीर्वाद हम मुक्त ह्रदस से स्वीकारें और अपने मानव जीवन की धन्यता अनुभव करने की दिशा में अग्रसर होते रहें, यह ही विनम्र निवेदन है।

दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

हमारी संस्कृति का आधार हैं गोमाता

करुणा, वात्सलता, प्रेम और सहजता मनुष्य की चाह होती है। यदि आप सुख पाना चाहते हैं तो आपको जीवन के संघर्षों को स्वीकारना पड़ेगा, क्योंकि बिना संघर्ष किए सुख नहीं मिलता। यदि आप संतोष चाहते हैं तो आपको अपने लिए शान्ति का मार्ग प्रशस्त करना होगा। यदि आप समृद्धि चाहते हैं तो फिर आपको परिश्रम करना होगा। सुख और शान्ति दोनों ही चाहिए तो फिर ये कैसे मिलेंगे? इसके लिए हमारी संस्कृति ने चतुष्ट वर्ग की कल्पना की। अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। अर्थ यानी धन चाहिए तो किसके लिए? धर्म को साधने के लिए अर्थ होना चाहिए। तो धर्म साधन क्या है? मनुष्यता को प्रसन्न रखना, उसे सुखी करना, प्रकृति को सन्तुलित रखना है हमारा वास्तविक धर्म। धर्म मात्र कर्मकाण्ड या कोई पूजा पद्धति नहीं बल्कि उसका एक छोटा–सा हिस्सा भर है। आप देखिये कि हमारी ही अनदेखियों के कारण धरती विषाक्त हुई, आसमान प्रदूषित हुआ, नदियां सूखीं, वृक्ष हरियाली से हीन हुए। क्या ये भारत की कल्पना है?

प्रातःकाल हमारे घरों और देवालयों से उठने वाला यज्ञ धूम्र, प्रकृति निर्मल, मनुष्य प्रफुल्लित, सन्तानें संस्कारवान, युवा उद्यमशील, वृद्धजन इतने शान्त कि संसार को उनके चरणों में झुकने का मन करे..., समाज की ऐसी कल्पना हमारे ऋषि–मुनियों ने आदर्श जीवन पद्धति के लिये की थी। तब हमारे बच्चे भी इतने निडर थे कि भरत के रूप में वे सिंहों के साथ खेले, उनका मुंह खोलकर उनके दांत भी गिन सके। आज क्या स्थिति है? लोगों के चित्त व्याकुल हैं। धरती–आकाश

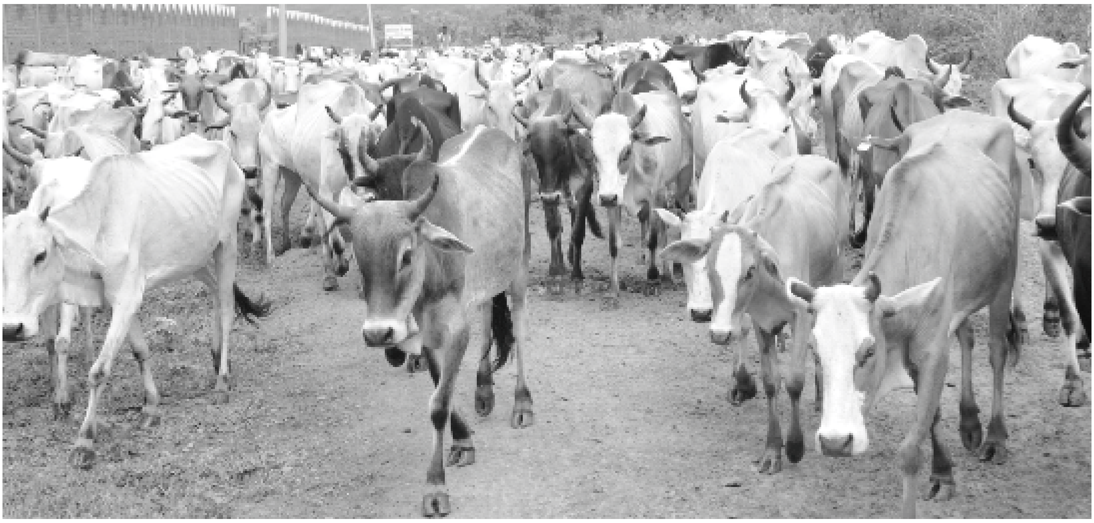

गोमाता हमारी संस्कृति का आधार हैं। उनकी उपस्थिति, उसका दुग्ध, उसका गोबर यहां तक कि उसका मूत्र भी हमारे चित्त और शरीर को अव्यक्त शान्ति तथा स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। हमारी सन्तानें हाथों में मक्खन के लौंदे उछाल–उछाल कर खेलती रहीं। दधि मंथन के स्वरों के साथ हमारी सन्तानें जागती थीं। उस काल में भी स्त्रियों ने चाहे जितना वैभव पाया हो लेकिन अपनी रसोई कभी किसी दूसरे को नहीं सौंपी थी। उन्हें यह मर्म पता था कि रसोई में सुन्दर भावों के साथ बनाया गया भोजन ही मेरी सन्तानों में संस्कारों का जागरण करेगा। ऐसा था हमारा भारत। अब हमें पुनः उसी भारत की संस्कृति को पुनर्स्थापित करना होगा। गोरक्षण और गोसंवर्धन भी इसी अभियान का एक हिस्सा है।

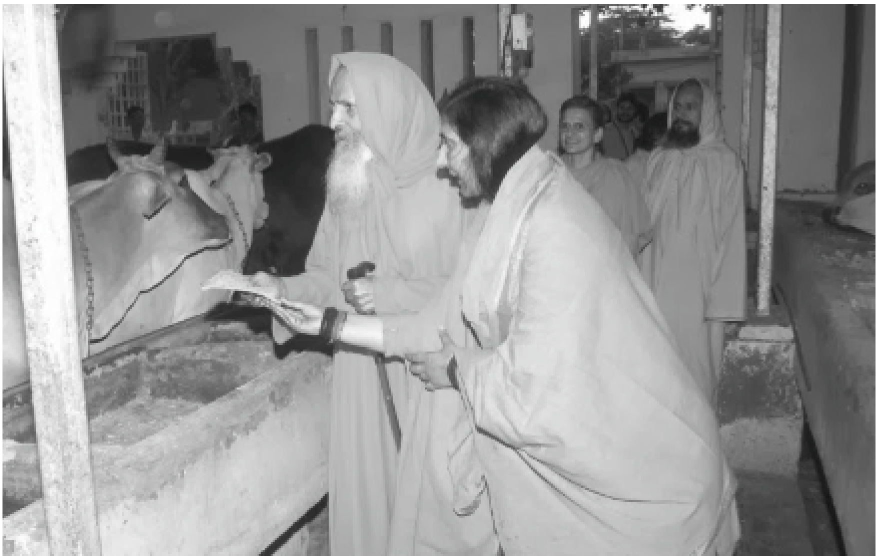

जहरीले प्रदूषण से विषाक्त हैं। पुण्य सलिला जीवनदायिनी नदियां धीरे–धीरे गन्दे नालों में बदल रही हैं। प्रकृति रुष्ट होकर अपना रौद्र रूप दिखा रही है। हमारी संस्कृति ने हमें जो पथ दिया था, आज उसे हम बकवास समझ रहे हैं और दूसरों की कचरा संस्कृति को भी अपने सिर–माथे बैठाने में गौरव का अनुभव कर रहे हैं। इसी का दुष्परिणाम आज हम सबको झेलना पड़ रहा है।

आओ, फिर से ऋषियों द्वारा स्थापित अपनी पुरातन संस्कृति की शरण में। उसका मार्गदर्शन अपनाकर दो दिशाओं की यात्रा एक साथ करो। एक बीज के समान अन्तर में भी उतरो और बाहर आसमान को छूने का प्रयत्न भी करो। निश्चय करो कि हम पदार्थों को त्यागपूर्वक भोगेंगे। माँ की छाती का दूध पिएंगे, उसका लहू नहीं। हम मनुष्य हैं और हमें आसुरी प्रवृत्तियों को धारण करना उचित नहीं। अपने सुख के लिए परिवार के सुख की उपेक्षा नहीं करेंगे, परिवार के सुख के लिए समाज के सुख की उपेक्षा नहीं करेंगे, समाज के सुख के लिए राष्ट्र को संकट में नहीं डालेंगे और राष्ट्र के सुख के लिए हम विश्व को त्रसित नहीं करेंगे। कुल मिलाकर दृश्य यह हो कि हम केवल अपने लिए नहीं बल्कि समष्टि के लिए जिएं, जिसमें जीव – जन्तु, मनुष्य और प्रकृति सब सम्मिलित हों। हमारी सोच केवल मानवाधिकार तक ही सीमित नहीं हो। मानव के कर्तव्य भी होते हैं। 'मानवाधिकार' पश्चिम जगत का विचार है लेकिन हमारे यहां तो उत्तरदायित्वों को प्रधानता दी गई है। पशु–पक्षी, जड़–जंगम तक के लिए हमारी संस्कृति हमें अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत करती है।

गोमाता हमारी संस्कृति का आधार हैं। उनकी उपस्थिति, उसका दुग्ध, उसका गोबर यहां तक कि उसका मूत्र भी हमारे चित्त और शरीर को अव्यक्त शान्ति तथा स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। हमारी सन्तानें हाथों में मक्खन के लौंदे उछाल–उछाल कर खेलती रहीं। दधि मंथन के स्वरों के साथ हमारी सन्तानें जागती थीं। उस काल में भी स्त्रियों ने चाहे जितना वैभव पाया हो लेकिन अपनी रसोई कभी किसी दूसरे को नहीं सौंपी थी। उन्हें यह मर्म पता था कि रसोई में सुन्दर भावों के साथ बनाया गया भोजन ही मेरी सन्तानों में संस्कारों का जागरण करेगा। ऐसा था हमारा भारत। अब हमें पुनः उसी भारत की संस्कृति को पुनर्स्थापित करना होगा। गोरक्षण और गोसंवर्धन भी इसी अभियान का एक हिस्सा है। आप अपने उद्देश्य में वांछित सफलता प्राप्त करें, मैं भगवान गोविन्द देव से ऐसी प्रार्थना करते हुए आप सबको इस सत्प्रयत्न के लिए शुभकामनाएं प्रदान करती हूं।

धर्म नारायण शर्मा (वरिष्ठ प्रचारक, विहिप)

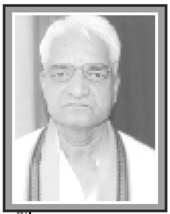

असंभव कुछ भी नहीं

गोवंश की रक्षा और पालन का समाधान

भारत में प्राचीनकाल से गोमाता को पूजनीय माना जाता रहा है। इस कारण कुछ त्योहार गोमाता से संयुक्त बने हैं। गोपाष्टमी पर्व पर विशेषरूप से गोमाता को स्नान कराकर उनकी पूजा की जाती है। गोमाता को फूलों से सजाकर, सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित कर उनकी आरती और परिक्रमा की जाती है। इस गोपूजा का प्रसाद भक्तों में वितरण करते हैं। भक्त भी गोमाता को फूल आदि द्वारा संतुष्ट करते हैं। इसी प्रकार गोवत्स का त्योहार भी आता है। उस दिन गोमाता व गोवत्स की पूजा की जाती है। गोवत्स ही बड़ा होकर ग्रामों में दौड़ द्वारा नाम कमाता रहा है। अनेक ग्रामों में किसका बैल स्वस्थ है इसके परीक्षण हेतु ग्राम में धरती पर पड़े एक भारी पत्थर को कौन कितना दूर तक खींच कर ले जाता है। यह परीक्षण अच्छी खेती करने के लिये अच्छे स्वास्थ्य, दमदार बैलों के निर्माण का माध्यम था।

एक समय नागोर (राजस्थान) में पशुओं का वार्षिक मेला लगता था। इस मेले में बहुत स्वस्थ, कद्दावर ऊँचाई वाले बैलों के जोड़े आते थे, ये बैल परिवार में निर्माण होते थे। घर की गाय का पूरा या आधा दूध इन्हें पीने को देते थे। यह बछड़ा बड़ा होते ही देखने लायक बनता था। वार्षिक मेले के समय देश के अनेक भागों के कृषक इस नागोर मेले में आकर बैल खरीदकर ले जाते थे। वह काल था जिस समय खेती व बैलगाड़ी द्वारा जीवन चलता था। हर कार्य में बैलों का महत्व था। सारा संचार बैलगाड़ी द्वारा संचालित था।

आज बैलों की मांग घटी है,

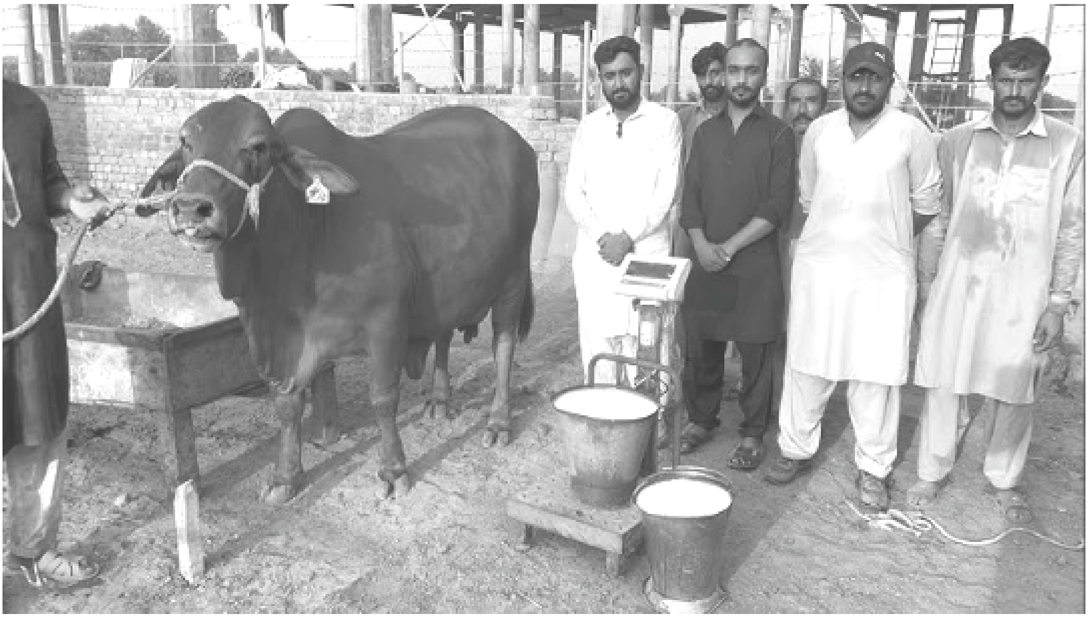

यदि मल्टीस्टोरेज भवनों में जैसे कारें रखी जाती हैं उसी प्रकार गायें रखने की व्यवस्था भी की जाय तो तो वहाँ रहने वालों को जीवन दान मिलेगा। प्रत्येक फ्लैटवासी अच्छी गाय खरीद कर वहाँ रखें। चारे– पानी का प्रबन्ध हो, प्रतिदिन अपनी गाय का दूध ग्वाला द्वारा उन्हें प्राप्त हो, तो दूध की बड़ी समस्या हल होगी तथा स्वास्थ्य की समस्या भी हल हो जायेगी। असंभव कुछ भी नहीं है।

परन्तु गोमाता का स्थान आज भी बना हुआ है। आज भी मानव गोदुग्ध की मांग कर रहा है। सस्ता मंहगा जैसा भी हो उसे मिले। कुछ गोशालाएँ श्रेष्ठ हैं, परन्तु अनेक गोशालाएँ केवल दिखावा मात्र हैं। दानदाताओं की कमी नहीं है, साधुओं द्वारा भी बड़ी–बड़ी गोशालाएँ संचालित हो रही हैं, परन्तु मांग बढ़ी है जिसकी पूर्ति संभव नहीं हो पा रही है। अन्ततः सरकारों से मांग करती हैं सरकार मांग की पूर्ति हेतु विदेशी दूध विदेशों से मंगवाती हैं, विदेशों में गायों के नाम पर विदेशी जर्सी आदि का दूध पाउडर रूप में भारी मात्रा में आ रहा है। वही पाउडर का दूध बड़ी–बड़ी डेरियों द्वारा मिला–मिला कर बाजार में आ रहा है।

सरकार से भी कई कदम आगे ये व्यापारी जो येनकेन प्रकार से धन कमाना चाहते हैं, सिंथैटिक दूध बनाकर लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। लोगों की जितनी मांग होती है ये व्यापारी उसकी पूर्ति करते हैं। पशुधन की संख्या कम है परन्तु दूध के नाम पर दूध की कमी नहीं है। बड़े–बड़े चिकित्सालय हैं, हजारों लोगों को प्रतिदिन दूध मिल रहा है, यह सब दूध मानव पी रहा है और सन्तुष्ट हो रहा है, पर क्या यह दूध शक्ति निर्माण करेगा? मरीज इस सबसे असन्तुष्ट होकर चिकित्सालय से दूर सा जा रहा है। झूठ–फरेब यही जैसे युग का व्यवहार बन गया है। आज मानव के पास पैसे की कमी नहीं है। यदि मल्टीस्टोरेज भवनों में जैसे कारें रखी जाती हैं उसी प्रकार गायें रखने की व्यवस्था भी की जाय तो तो वहाँ रहने वालों को जीवन दान मिलेगा। प्रत्येक फ्लैटवासी अच्छी गाय खरीद कर वहाँ रखें। चारे–पानी का प्रबन्ध हो, प्रतिदिन अपनी गाय का दूध ग्वाला द्वारा उन्हें प्राप्त हो, तो दूध की बड़ी समस्या हल होगी तथा स्वास्थ्य की समस्या भी हल हो जायेगी। असंभव कुछ भी नहीं है। क्रमशः भवनों का निर्माण इसी प्रकार से होने लगेगा। अगर यह योजना स्वीकार कर भवन बनने लगें तो हम गोरक्षा भी करेंगे तथा शुद्ध दूध का सेवन भी कर सकेंगे।

पवित्र–पावन पर्व "दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अक्षय प्रताप सिंह
वरिष्ठ नेता भारतीय जनता पार्टी
एवं प्रसिद्ध समाजसेवी
मो. : 9045710001

ओनर होटल सेन्टर पॉईन्ट, सिविल लाईन, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड

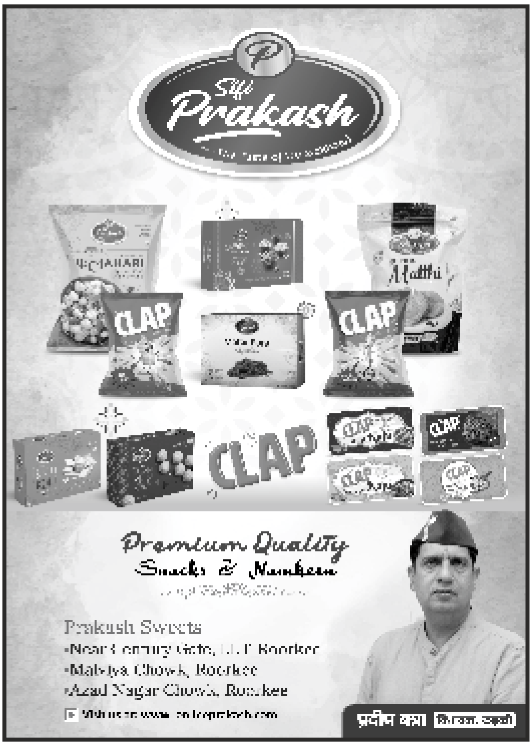

दिनेश उपाध्याय (अ. भा. गोरक्षा प्रमुख, विहिप)

ब्रह्माण्ड के अंदर सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं गोमाता

नैसर्गिक रूप से ही गोमाता–गोवंश में विलक्षण गुण और दिव्यता विद्यमान रही है और अभी भी है। हमारे ऋषि–मुनियों ने गहन शोध–अनुसंधान और साक्षातकार करने के पश्चात ही गोमाता को इस ब्रह्माण्ड के अंदर सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना और उसे हर परिवार में स्थापित कर दिया। सुपरिणामस्वरूप माताओं–बहनों के द्वारा गोमाता–गोवंश की सेवा की जाती रही है और अधिकांशतः गांवों में अभी भी उनकी सेवा–रक्षा की जा रही है। इसीलिए अनादिकाल से ही भारतीय गोवंश के महत्व और महत्ता से सुपरिचित हैं। इसी कारण हमारे पूर्वज ऋषियों ने इसका पालन–पोषण, सेवा और रक्षा मनुष्य का परमधर्म बताया है। इसकी सेवा–पूजा और रक्षा के अनेक आख्यान हमारे पौराणिक ग्रन्थों में भरे पड़े हैं। यही नहीं इसका मूल्य परमतपस्वी महर्षि च्यवन के मूल्य रूप अकूत धन से भी अधिक एक गाय के रूप में मानकर मछुवारों ने गाय के महत्व को स्वीकार किया था। महाराज ऋतम्भर, सम्राट दिलीप और जाबाला पुत्र सत्यकाम की गो सेवा और उसका प्रतिफल जगत् प्रसिद्ध आख्यान के रूप में पुराणों में वर्णित हैं। इनका अनुवाद विश्व की अधिकांश भाषाओं में होकर विख्यात है।

प्रश्न उठता है कि सृष्टि का इतना उत्कृष्ट लोकमंगलकारी प्राणी उस देश में ही, जहाँ इसके महत्व और महत्ता को जाना समझा ही नहीं अपितु व्यवहार में इसे माता–पिता ***'गो मे माता वृषभः पिता मे'*** मानकर आदरणीय– पूजनीय माना गया; जहाँ इसकी रक्षा हेतु चक्रवर्ती सम्राट महाराज दिलीप ने अपना शरीर सिंह को समर्पित कर इसे न मारने की प्रार्थना की थी। वहीं आज यह उपेक्षित–तिरस्कृत और अरक्षित होकर नितान्त असहाय स्थिति में गाँव–नगर, गली–गली मारा–मारा क्यों फिरता है? सड़कों पर वाहनों से चोटिल होकर, कसाइयों से भी क्रूर कथित किसानों के खेतों में धारदार तारों से बुरी तरह आहत होकर, आज हमारा गोवंश तड़प– तड़पकर तिल–तिल मरता हुआ विलुप्ति की कगार तक क्यों पहुँच रहा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि यह सब जानबूझकर किया जा रहा है और हम जाने–अनजाने ही उदासीन बनकर ऐसा करने वालों के इंगित पर नाच–नाचकर उनके लक्ष्य को पूरा करते जा रहे हैं।

उपर्युक्त प्रश्न में जो शंका व्यक्त की गयी है वह निराधार नहीं है। मशीनी औद्योगिक क्रान्ति ने मनुष्य में लोभ की प्रवृत्ति को ऐसा बढ़ाया जिसके कारण मनुष्य वैलासिक सुखभोग के बाजारी जाल में फँसकर अनुचित रूप से परिग्रही बनता गया। धन कुबेर बनने हेतु धनिकों ने समस्त मानव सदाचरणों (मानव मूल्यों) को ताक पर रख दिया। स्वतन्त्र भारत की प्रारंभिक सरकारों ने भी अन्तरराष्ट्रीय धन कुबेरों के आगे घुटने टेक दिये और बाजार के समक्ष आत्म समर्पण करते हुए परम्परागत कृषि उपकरणों में सुधार को रोककर कृषि कार्यों में बैलों को अनुपयोगी बनाने वाले यन्त्र ट्रैक्टर को ले आयी। यही नहीं देशज गोवंश की नस्ल सुधारने हेतु विदेशी कुकुदहीन गाय सदृश अधिक दुधारू पशु लाकर हमारे गोवंश को उपेक्षित करके अयोग्य ही बना दिया। इस प्रकार ***गोसम्पदा को मांस सम्पदा में*** बदलकर अलकबीर जैसे विशाल गोहत्या केन्द्र बनाकर हमारी गोसम्पदा को अपूर्णनीय क्षति पहुँचाने का महापाप देश के पहले प्रधानमंत्री की कथित मानसिक दुर्बलता एवं वैचारिक अदूरदर्शिता के कारण प्रारम्भ होकर यहाँ तक पहुँच चुका है कि गाँवों में किसान मन्दिर जाकर पत्थर के नन्दी को तो पूजते हैं किन्तु हाड़–मास के जीवित नन्दी को फूटी आँखों से भी नहीं देखना चाहते।

हमारी वर्तमान केन्द्रीय सरकार गोवंश की रक्षा हेतु चिन्तित तो है, किन्तु सत्य तो यह है कि वह भी इसके प्रदेशों के अपने अधिकार क्षेत्र का विषय होने के कारण कुछ नहीं कर पा रही है। अनेक प्रदेशों में गोहत्या पर प्रतिबन्ध तो लगा है किन्तु अपर्याप्त आश्रय स्थलों तथा जो हैं भी उनकी दुर्दशा के कारण गोवंश का कष्ट कम नहीं हुआ है। हाँ अंगुलियों पर गिनी जा सकने वाली निजी गौशालायें इस सम्बन्ध में अच्छा कार्य कर रही हैं किन्तु उनके सामर्थ्य की भी एक सीमा है।

यदि केन्द्र सरकार पूरी निष्ठा से चाहती है कि हमारा गोवंश आदर सम्मान के साथ अपना जीवनयापन करे तो इसका एकमात्र उपाय यह है कि गोशक्ति और गोसम्पदा का समुचित उपयोग सुनिश्चित किया जाय। इसके लिए कृषि के परम्परागत यन्त्रों तथा कृषि आधारित तैल, गुड़ आदि उद्योगों के यन्त्रों में वांछित सुधार करके कृषि आधारित उद्योगों में बैलों का उपयोग फिर से प्रारम्भ किया जाय। गोवंश की विलुप्ति होने के कारण होने वाले विनाश को रोकने का यही एकमात्र उपाय है।

हुकुमचन्द सावला (पूर्व केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विहिप)

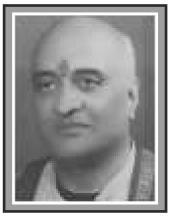

वैज्ञानिक मेरी मां

मेरी माँ वैज्ञानिक हैं, लेकिन उन्होंने कभी स्कूल की दहलीज नहीं लांघी। इसके बावजूद उनके पास जीवन और प्रकृति का गहन ज्ञान है, जो किसी भी औपचारिक शिक्षा से अधिक मूल्यवान है। उनके विचारों में विज्ञान और परंपराएं एक सुंदर संतुलन बनाते हैं। वह कहती हैं कि गाय, तुलसी, देवप्रतिमा की परिक्रमा करने से न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि मानसिक शांति भी मिलती है। गायों के आसपास रहना हमें सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है।

मेरी माँ वैज्ञानिक हैं, लेकिन उन्होंने कभी स्कूल की दहलीज नहीं लांघी। इसके बावजूद उनके पास जीवन और प्रकृति का गहन ज्ञान है, जो किसी भी औपचारिक शिक्षा से अधिक मूल्यवान है। उनके विचारों में विज्ञान और परंपराएं एक सुंदर संतुलन बनाते हैं। वह कहती हैं कि गाय, तुलसी, देवप्रतिमा की परिक्रमा करने से न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि मानसिक शांति भी मिलती है। गायों के आसपास रहना हमें सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है। इसी तरह, मूर्ति की परिक्रमा करते समय हमारी आस्था और श्रद्धा प्रकट होती है।

मेरी माँ का मानना है कि वृक्षों में भी जीवन होता है। वह कहती हैं, "रात में वृक्षों को मत सताओ, रात्रि

में तुलसी के पत्ते मत तोड़ो क्योंकि वे भी विश्राम करते हैं।" हमें उन्हें पानी देना चाहिए ताकि वे जीवित रहें और हमारे पर्यावरण का संतुलन बनाए रखें।

संध्या के समय माँ तुलसी के क्यारे (क्यारी) में दीपक जलाने की सलाह देती हैं। यह न केवल धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि वातावरण को शुद्ध करने का एक वैज्ञानिक तरीका भी है। तुलसी का पौधा हवा को शुद्ध करता है और दीप जलाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

माँ सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का संदेश देती हैं। वह कहती हैं, *"गाय को घास, कुत्ते को रोटी, पक्षियों को दाना, और मछलियों को आटे की गोलियां खिलाओ।"* यह सिर्फ दान या धार्मिक कार्य नहीं है, बल्कि पृथ्वी के सभी जीवों के साथ सामंजस्य और करुणा का भाव है। माँ हमें सिखाती हैं कि चींटियों को शक्कर, कबूतरों को अनाज, और गिलहरियों को मूंगफली खिलाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, जिससे इन जीवों का आशीष हमें मिलता है। वैज्ञानिक होने के साथ–साथ माँ घर के काम–काज में भी कुशल हैं। वह कहती हैं कि जैसे हमारे पुरखे डिलीवरी के समय घट्टी (आटा पीसने की हाथ चक्की) घुमाने का चलन रखते थे, वैसे ही आज डॉक्टर भी प्रसव के दौरान हल्की शारीरिक गतिविधि की सलाह देते हैं। घट्टी घुमाना या घर के काम–काज जैसे पोंछा लगाना केवल परंपरा नहीं थी, बल्कि इसके पीछे वैज्ञानिक तर्क था। यह शरीर को सक्रिय रखने और प्रसव को आसान बनाने का एक तरीका था। आज डॉक्टर भी गर्भावस्था में शारीरिक रूप से सक्रिय रहने की सलाह देते हैं, जो यह दर्शाता है कि प्राचीन मान्यताओं और आधुनिक विज्ञान के बीच गहरा संबंध है।

माँ का मानना है कि हमें धरती को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि भूमि एक जैविक इकाई है, यह हमें जीवन देती है। उनके अनुसार भूमि पूजन, कुआँ पूजन, और गंगा पूजन जैसी परंपराएँ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक हैं। इन परंपराओं में निहित वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि हमें अपनी धरती और पर्यावरण का

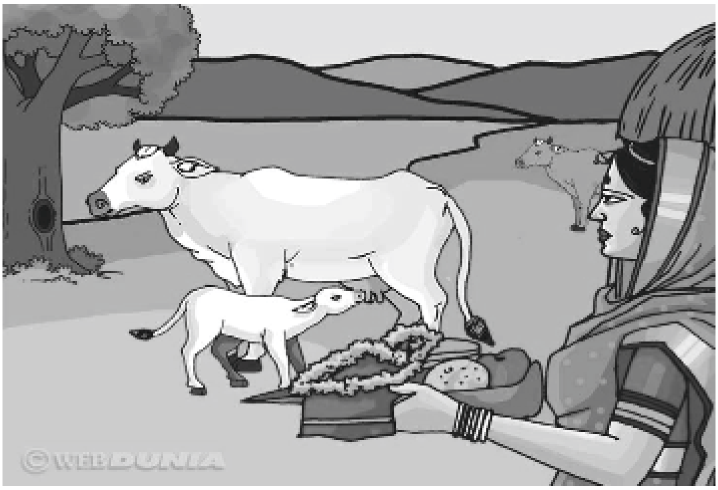

सम्मान करना चाहिए, क्योंकि यही हमारे अस्तित्व का आधार हैं।

माँ बताती हैं कि वैज्ञानिक भी जब रॉकेट छोड़ने से पहले पूजा करते हैं, तो यह इस बात का प्रतीक है कि चाहे हम कितने भी उन्नत हो जाएं, प्रकृति और परमात्मा के प्रति आदर का भाव नहीं भूलना चाहिए। माँ अकसर पंचतत्वों के बारे में बताती हैं – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश। यह पाँच तत्व हमारे जीवन का आधार हैं, और इनके असंतुलन से प्रकृति में बड़े परिवर्तन आते हैं। वह कहती हैं कि भूकंप धरती के असंतुलन का परिणाम है, उल्कापात आकाश की चेतावनी है, अतिवृष्टि और अनावृष्टि जल की अनियमितताओं से होती है, वायु से सुनामी आती है, और अग्नि से विस्फोट होते हैं।

स्नान के दौरान माँ हमेशा कहती हैं कि सिर पर सीधे पानी नहीं डालना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, सिर पर अचानक ठंडा पानी डालने से शरीर का तापमान अचानक बदल जाता है, जिससे रक्त प्रवाह पर असर पड़ सकता है और हृदय और मस्तिष्क को नुकसान पहुंच सकता है। यह तापमान का संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है, ताकि हमारे शरीर के अंग सुरक्षित रहें।

मंदिर में घंटा बजाने के पीछे भी माँ का तर्क है। वह कहती हैं कि घंटे की ध्वनि से न केवल हमारा ध्यान केंद्रित होता है, बल्कि वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी होता है। घंटे की ध्वनि ओम के समान होती है और यह वातावरण को शुद्ध करने में मदद करती है, जिससे कीटाणु और बैक्टीरिया भी नष्ट हो जाते हैं।

माँ यज्ञ या हवन की महत्ता पर भी जोर देती हैं। उनके अनुसार, हवन से उत्पन्न धुआं वातावरण को शुद्ध करता है, हानिकारक बैक्टीरिया और वायरस को नष्ट करता है और वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है। इसके अलावा हवन पंचतत्वों में संतुलन स्थापित करने में भी सहायक होता है। तीन गैस, प्रोपलीन ऑक्साइड कृतिम वर्षा का आधार formaldehyde, ओथोलाइन oxide (ऑपरेशन थिएटर को जीवाणु मुक्त करने के लिए)।

माँ हमें यह भी सिखाती हैं कि

पांच उंगलियों से भोजन करना तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करता है। उंगलियों के माध्यम से मस्तिष्क को संकेत मिलता है कि हम भोजन करने जा रहे हैं। यह न केवल भोजन के तापमान को पहचानने में मदद करता है, बल्कि पंचमहाभूतों का प्रतिनिधित्व भी करता है

- ✓ अंगूठा अग्नि तत्व
- ✓ तर्जनी वायु तत्व
- ✓ मध्यमा आकाश तत्व
- ✓ अनामिका पृथ्वी तत्व
- ✓ कनिष्ठा जल तत्व

बैठकर पानी पीने का महत्व भी माँ ने हमें सिखाया। उनका कहना है कि बैठकर पानी पीने से पाचन तंत्र बेहतर होता है और शरीर पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता है। इससे घुटनों और मांसपेशियों पर भी तनाव कम होता है। तांबे के पात्र में पानी पीने के पीछे माँ का मानना है कि यह प्राकृतिक रूप से जीवाणुरोधी और विषाणुरोधी होता है, जो हमारे शरीर में त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को संतुलित करने में मदद करता है। इसके अलावा यह पानी को उदासीन बनाता है, जिससे शरीर में रक्त की शुद्धि होती है और हमारी कोशिकाओं को एंटीऑक्सीडेंट मिलते हैं। माँ ने यह भी बताया कि दक्षिण दिशा में सिर करके सोना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के अनुसार जब हम उत्तर की ओर सिर करके सोते हैं, तो हमारा शरीर इस क्षेत्र के विपरीत दिशा में होता है, जिससे रक्त प्रवाह और हृदय पर बुरा असर पड़ सकता है। जबकि दक्षिण दिशा में सिर रखने से शरीर पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के साथ सामंजस्य में होता है, जिससे रक्तचाप सामान्य रहता है और नींद की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी दक्षिण दिशा में सिर करके सोना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना गया है। अंत में, माँ कहती हैं कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में उपवास को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उनका मानना है कि जब शरीर को भोजन नहीं मिलता, तो यह जमा हुई वसा का उपयोग ऊर्जा के रूप में करता है, जिससे अतिरिक्त चर्बी समाप्त होती है। यह न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि वैज्ञानिक रूप से भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।

मेरी माँ ने कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, परंतु उनके जीवन का ज्ञान, उनकी समझ, और उनकी दूरदर्शिता उन्हें एक सच्चा वैज्ञानिक बनाते हैं। वह हमें सिखाती हैं कि शिक्षा सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों से भी प्राप्त की जा सकती है। उनके जीवन में विज्ञान और आस्था का सुंदर संतुलन है, जो हमें यह सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा को साथ –साथ कैसे जिया जा सकता है।

मेरी माँ ने कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, परंतु उनके जीवन का ज्ञान, उनकी समझ, और उनकी दूरदर्शिता उन्हें एक सच्चा वैज्ञानिक बनाते हैं। वह हमें सिखाती हैं कि शिक्षा सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों से भी प्राप्त की जा सकती है। उनके जीवन में विज्ञान और आस्था का सुंदर संतुलन है, जो हमें यह सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा को साथ –साथ कैसे जिया जा सकता है।

मेरी माँ के जीवन में विज्ञान और परंपराओं का अद्भुत मेल है। उन्होंने हमें यह सिखाया है कि प्राचीन रीति–रिवाजों में न केवल सांस्कृतिक धरोहर, बल्कि गहरे वैज्ञानिक तर्क भी छिपे हुए हैं। उनकी दृष्टि में परंपरा और विज्ञान साथ–साथ चलते हैं और यही दृष्टिकोण हमें जीवन में संतुलन और समृद्धि की ओर ले जाता है।

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

BIKANER WALA

Lohe ka super Market

RATAN ISPAT INDUSTRIES

TRUSTED NAME IN THE WORLD OF STEEL

PLOT NO. 736, ROAD NO. 9F2, V.K.I. AREA JAIPUR-13

Tel.: 0141-4012401, 2333825

Supplying a Superior Range of

PEB STRUCTURE

MIS
MET INFRA SOLUTIONS

APPLICATIONS OF PEB :

- WAREHOUSES/COLD STORAGES
- FACTORIES/ INDUSTRIAL BUILDINGS
- LOW RISE OFFICE BUILDINGS/ SUPERMARKETS
- SHOWROOMS/ WORKSHOPS
- AIRCRAFT HANGARS/ METRO STATIONS
- SCHOOLS/ COLLEGES/ HOSPITALS

Advantages :

- Cost Effective
- Low Maintenance
- Strong and Durable
- Flexible and Adaptable
- Eco Friendly
- Energy Efficient

+91 9314620489
+91 9314505359

metinfra.jaipur@gmail.com
www.metinfra.in
Plot No. B-202(B), Road No. 9F, VKI Area, Jaipur

राजेन्द्र सिंहल (महामंत्री, गोरक्षा विभाग, विहिप)

विकसित भारत का मूल आधार गोवंश आधारित खेती

गोरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ एवम विश्व हिन्दू परिषद अपने आरम्भ काल से ही सक्रिय है। पू.डा. हेड गेवार एवम श्रद्धेय गुरुजी की गोरक्षा हम सबके लिए अनुकरणीय है। गोरक्षा के क्षेत्र में विशेष कार्य हो इसके लिये सन ***1994 में भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद का विधिवत गठन किया गया***। परिषद के आरम्भ काल में सम्पूर्ण भारत में राजकीय राजधानियो में बड़े–बड़े सम्मेलन, विचार गोष्ठियां आयोजित कर गोरक्षा की अलख जगाई गई एवं गोरक्षा के क्षेत्र में ठोस कार्य की रूप रेखा बनाई गई, जिसमें यान्त्रिक कत्लखाने न खुलने देना व पूरे भारत में सम्पूर्ण गोवंश–हत्या पर प्रतिबन्ध पर विशेष जोर दिया गया। गोवंश की उपयोगिता जन–जन के हदृय में पुनः प्रतिष्ठित हो, इसके लिये गोवंश आधारित कृषि का पुनः सूत्रपात किया गया।

गोवंश आधारित कृषि की मूल अवधारणा जैविक कृषि, (आगर्निग कृषि), जीरो बजट कृषि वास्तव में गोवंश आधारित कृषि नही है, बल्कि गोवंश आधारित कृषि का मतलब है एक एकड़ में किसान ज्यादा–से–ज्यादा गोवंश पालते हुए अपनी शुद्ध आमदनी को किस प्रकार उच्चतम स्तर पर ले जा सकता है। कृषि कार्य जैसे–हल चलाना, यातायात का साधन, तेल कोल्हू में इस्तेमाल करना, आटा चक्की, चावल, दाल आदि निकालने की प्रक्रिया में नर गोवंश (बैल) का अधिकतम प्रयोग, कृषक अपनी समस्त खाद व कीट नियन्त्रक दवाइयों में गोमूत्र– गोबर का प्रयोग करना है। गोवंश आधारित कृषि से प्राप्त खाध पदार्थों का महत्व व उपयोगिता आम जनता को समझाना ताकि किसान को फसल का उचित व अधिकतम मूल्य मिल सके।

नर गोवंश से कृषि करने से पानी की आवश्यकता एक तिहाई रह जाती है और अनुमानतः आठ गुणा रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। सम्पूर्ण कृषि में गोमूत्र–गोबर की खाद प्रयोग करने से खेत का स्वास्थ्य अच्छा रहता है व कृषक को

जो अनावश्यक डीएपी, यूरिया व जहरीले कीटनाशकों पर खर्च करना पडता है उसकी बचत होती है।

गोवंश आधारित कृषि से खाध पदार्थों की स्वास्थ्य की दृष्टि से गुणवत्ता उच्च कोटी की होती है। कोल्हू तेल की गुणवत्ता से वैज्ञानिक, डाक्टर आदि सभी भलीभांति परिचित हैं। इसी प्रकार आटा–दाल–चावल आदि यदि धीमी प्रक्रिया से बनाये जाते हैं तो उनकी गुणवत्ता नष्ट नहीं होती। अनुभवी व प्रशिक्षित वैधाचार्य पंचगव्य से निर्मित उच्च गुणवत्ता की औषधि से कैंसर, हिस्टीरिया, मनोरोग, अपंगता, प्रजनन शक्ति आदि अनेक गम्भीर बीमारियों का सफलता पूर्वक ईलाज बहुत कम खर्च पर कर रहे हैं। भारतीय अर्थ व्यवस्था में गोवंश की अहम भूमिका हो इसलिए निम्न विषयों पर गहरे शोध व अनुसंधान की आवश्यकता है–

- गोवंश आधारित कृषि बनाम स्वचालित बड़े यन्त्रों से कृषि। रोजगार पर प्रभाव, लागत पर प्रभाव
- बहु उद्देशीय–बहु फसली खेती बनाम गेंहू–धान–गन्ने आदि की कृषि
- गोबर–गोमूत्र से खाद व कीट नियन्त्रक बनायें और रासायनिक खाद व महंगे पेस्टी साइड कीटनाशक आदि का प्रयोग रोका जाये
- पंचगव्य निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों का इलाज व अच्छे स्वास्थ्य के लिए शोध किया जाय। महंगी ऐलोपैथी चिकित्सा का स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं शोध
- गोवंश आधारित उत्पादित अमृत तुल्य खाद्य पदार्थ बनाम रासायनिक खाद से उत्पादित खाद्य पदार्थ। वास्तव में गोवंश आधारित कृषि से कर्जमुक्त समृद्धशाली किसानों, नशामुक्त रोजगार नवयुवकों से ही स्वस्थ, समृद्ध व विकसित भारत का निर्माण होगा।

अतः सभी से प्रार्थना है कि अपने–अपने स्तर पर गोवंश आधारित कृषि को बढ़ावा देने में अपना–अपना अमूल्य योगदान देकर कृतार्थ करें।

पवित्र–पावन पर्व
"दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ
धन्यवाद

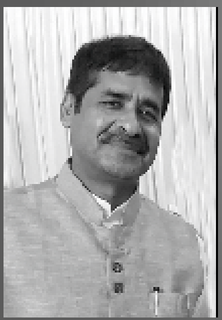

अनिल कुमार गोयल
प्रान्त अध्यक्ष
गोरक्षा विभाग, विहिप, मेरठ प्रान्त
भारतीय गोवंश संरक्षण संवर्द्धन परिषद (रजि. ट्रस्ट)

ए.के.ए.जी.
फूड्स एंड बेवरेज़ेज प्रा. लि.
रोडवेज बस स्टैंड के सामने, धामपुर, बिजनौर – 246761 (उ.प्र.)
मोबाईल – 9412217171, 9412117171

डॉ. नरेश शर्मा, (गोसम्पदा प्रचार-प्रसार प्रमुख)

गोमाता की सेवा-रक्षा है सर्वोपरि धर्म

गाय माता सनातन भारतीय संस्कृति की प्राण है। शास्त्र और विज्ञान दोनों यह प्रतिपादित करते हैं कि गाय भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था के जीवन–चक्र की केंद्र बिंदु है, वहीं विज्ञान के अनुसार गाय मानव जीवन की आधार है। यथार्थ में गोमाता धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्रदाता हैं और गोमाता भगवान श्रीकृष्ण की भी आराध्य हैं एवं भवसागर से पार लगाने वाली साक्षात् देवी हैं। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण स्वयं गोसेवा का आदर्श प्रस्तुत कर गोपाल कहलाये। अतः मानव जाति के समस्त कल्याण के लिए गोमाता–गोवंश की निम्न प्रकार से सेवा कर जीवन को कृतार्थ करें :–

1. प्रत्येक दिन पहली रोटी गाय को खिलाएँ अर्थात गो ग्रास निकालें।
2. यह संकल्प करें कि भारतीय देसी गाय के दूध, दही, घी का ही प्रयोग करें।
3. यदि संभव हो तो घर में गाय रखें या फिर किसी गऊशाला में गाय गोद लें और उसके रख–रखाव की जिम्मेदारी लें तथा गऊशाला जाएँ और वहाँ गोसेवा करें।
4. गाय के धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व का प्रचार–प्रसार करें।
5. गोवंश रक्षार्थ राष्ट्रव्यापी जनांदोलन को सफल बनाने में मन–वचन–कर्म और तन–मन–धन से सहयोग दें।
6. गोपाष्टमी पर्व मनाएँ और गोमाता का दर्शन–पूजन करें और सर्वतीर्थमयी–सर्वदेवमयी गोमाता की परिक्रमा करें तथा मधुर पकवान गुड़ या मीठी रोटी खिलाएँ और इस प्रकार सब प्रकार से गोमाता–गोवंश की सेवा करें।
7. घायल, बीमार, असहाय गाय की सेवा जी–जान से करें। यह सबसे बड़ा योग, यज्ञ, जप, तप, पूजा–पाठ तथा दान–पुण्य है। गायों से कभी द्वेष न करें। उन्हें सदा सुख पहुँचाएँ, उनका उचित सत्कार और पूजन करें।
8. गोमूत्र सर्वोत्तम स्वास्थ्य टॉनिक है। गोमूत्र तथा पञ्चगव्य (दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर) से निर्मित औषधियों एवं पदार्थों का प्रयोग कर स्वास्थ्य लाभ उठाएँ।
9. रासायनिक खाद की जगह गोवंश के गोबर और मूत्र से निर्मित खाद व कीटनाशक का प्रयोग करें। गोमूत्र और गोबर के प्रयोग से पैदा अनाज का ही उपयोग करें
10. गोमाता स्वयं साक्षात ईश्वर हैं। गोमाता की सेवा मात्र से समस्त देव गणों का आशीर्वाद, उनकी प्रसन्नता एवं अनुकूलता प्राप्त होती है।
11. गोसेवा, गोरक्षा, गोदान, गोपालन, गोसंवर्धन व गोपूजा प्रत्येक सनातनी भारतीय का अनिवार्य कर्तव्य है। अतः आप सभी अपने आस–पास अथवा शहर में गौशाला स्थापित करें तथा उसे मंदिर मानकर तन, मन, धन एवं हर विधि से सहभागिता कर अपना जीवन सार्थक करें।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी. आयुर्वेद)

पंचगव्य और चिकनगुनिया

संधियों में जकडन, सूजन, बुखार, कमजोरी आदि लक्षणों से भारत के अनेक प्रदेशों में जनता त्रस्त है, परेशान है। ज्वर/बुखार तो ठीक हो जाता है लेकिन जकडाहट, सूजन आदि से लोग महीनों तक दैनिक कार्य ठीक से नहीं कर पा रहे हैं। बीमारी कोई भी हो, हमारे अंदर व्याधि प्रतिकार क्षमता की कमी होना, सर्वप्रथम कारण होता है। अब आने वाला समय स्वास्थ्य अच्छा करने के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अतः हमें इसका पूर्ण लाभ लेना चाहिए। स्वास्थ्यवर्धक नियमों का अधिक–से–अधिक पालन हो, इसकी तरफ विशेष ध्यान दें। आयुर्वेदिक चिकित्सकों के मार्गदर्शन में पंचकर्म कराना भी अत्यंत लाभदायक होता है।

पंचकर्म में सर्वप्रथम संपूर्ण शरीर का तैलाभ्यंग कुनकुने तेल द्वारा किया जाता है। आयुर्वेद शास्त्र में शरीर की आवश्यकता को समझकर उसके अनुरूप विभिन्न प्रकार के तैलों का वर्णन किया गया है। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में भी अलग–अलग प्रकार के तैल शास्त्रशुद्ध पद्धति से बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थ **कामधेनु मालिश तैल** – संधियों की जकड़ाहट, दर्द के लिए उपयुक्त है।

नारायण तैल – बढती आयु में होने वाली संधियों की वेदना, संधिशूल न हो इसलिए जब तकलीफ नहीं है तब भी कुनकुने तेल से मालिश कर संधियों को स्वस्थ बनाए रखें। आयुर्वेद वैद्य की निगरानी में इस तैल का आभ्यंतर सेवन या बस्ति में उपयोग भी लाभदायक है। बस्ति लेने से लाभ अत्यंत शीघ्र होता है।

बलादि तैल – संधियों द्वारा उनके बल से अधिक कार्य कराने से होने वाले दर्द में इसका उपयोग कुन–कुना कर लगाने से लाभ प्राप्त होता है।

लाक्षादि तैल – बुखार से आने वाली कमजोरी, खुजली, जुकाम एवम् श्वांस में तकलीफ होने पर सीने में तैल हल्का गरम करके लगाएं। शरीर की दुर्गंधी को दूर करता है। गर्भिणी स्त्री में गर्भ की पुष्टी हेतु हल्के हाथ से तैल कुनकुना कर पेट एवम् पीठ पर लगाना, इससे नाभीपूरण करना गर्भ स्वस्थ हेतु बताया गया है। हमारे घरों में तिल का तैल या सरसों का तैल भी होता है, जिसे गरम करके भी लगाया जा सकता है। गोविज्ञान अनुसंधान केंन्द्र, देवलापार द्वारा नागपुर में दो चिकित्सा केन्द्र चलाए जाते हैं। यहाँ संधियों में वेदना लेकर अनेक रुग्ण (रोगी) आ रहे थे। बुखार आने का इतिहास बता रहे थे। महिनों से संधियों में सूजन होने से वेदना भी थी। उन सभी की अवस्था के अनुरूप चिकित्सा की जा रही है।

कामधेनु हरडे चूर्ण से पचन में लाभ होकर भूक अच्छी लग रही है, पेट साफ होने से शरीर में हलकापन भी लोग अनुभव कर रहे हैं। पंचकर्म के बस्तिकर्म द्वारा तो लोग जादू जैसा लाभ बता रहे हैं। साथ में परहेज पालन भी बताते हैं। दशमूल काढ़ा, महासुदर्शन काढ़ा, महारास्नादि काढ़ा, हिंग्वाद्य घृत, पंचगव्य घृत आदि का उपयोग आवश्यकता के अनुरूप बताते हैं। कामधेनु गोमूत्र अर्क को सेवन के साथ–साथ लगाने के लिए भी बताते है। अधिकतम रूग्णों को कामधेनु गोमूत्र अर्क लगाने और सेवन करने से तुरंत आराम अनुभव हो रहा है। चिकित्सा परामर्श हेतु गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के चिकित्सालय से 9405701253 पर संपर्क सुबह 10 से 12 एवम् शाम 5 से 7 के बीच किया जा सकता है। प्रत्यक्ष दिखाना अधिक लाभकारी हो सकता है।

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

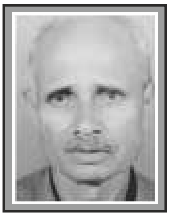

सृष्टि की सतत् गतिशीलता के लिये गोवंश अपरिहार्य

विडम्बना ही तो है कि हम जिस गोवंश का आदर–सम्मान माता–पिता तुल्य करते हैं, जिसका पालन–पोषण और रक्षा दासताकाल में भी करते रहे हैं, वही गोवंश स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे ही द्वारा उपेक्षित–तिरस्कृत होकर मारा–मारा फिरता विलुप्ति की कगार तक पहुँचाया जा रहा है। आधुनिक मशीनी औद्योगिक दुष्क्रान्ति ने हमारे लोकमंगलकारी बाजार पर अधिकार कर, उसे विनाशकारी बाजार के रूप में पुनर्स्थापित करके, धरती की शिव–सुन्दर, जैविक सृष्टि पर ऐसा अप्रत्यक्ष आघात किया है जो निकट भविष्य में इसके विनाश का कारण बनता जा रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि हम जानते हुए भी इससे बचने का गम्भीर प्रयास नहीं कर रहे हैं। जबकि ईश्वर ने हमें सृष्टि को निरन्तर गतिशील बनाये रखने वाली अपनी माया प्रकृति के सहायक–सहचर गोवंश का पालन –पोषण और रक्षा करते हुए, उसकी शक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग करते हुए, प्रकृति की शक्ति पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के निमित्त ही उत्पन्न किया है।

प्रश्न उठता है कि हमारा आदरणीय सर्वदेवमय गोवंश आज हमारे द्वारा ही उपेक्षित तिरस्कृत क्यों है? हम त्याग भाव से जीवनयापन करने वाले लोग भोगवादी दुष्प्रवृत्तियों के जाल में फँसकर, विलासी बनकर परिश्रम विमुख क्यों हो गये? तो इसके उत्तर के लिये हमें अपने स्वतन्त्रताकाल से अब तक के इतिहास को देखना होगा।

1857 के स्वातन्त्र समर से

रूस के वाममार्ग और मशीनी कृषि से अति की सीमा तक प्रभावित प्रथम सत्ता प्रमुख ने सर्वप्रथम कलहलों (ट्रैक्टरों) का प्रचलन कृषि कार्य में कराकर गोवंश पर प्रथम और इसके पश्चात् गो सदृश-अधिक दुधारू विदेशी पशु लाकर इनसे गर्भाधान द्वारा देशी गायों की पवित्रता- गुणवत्ता नष्ट कराकर दूसरा आघात किया। इस पर भी घोर आश्चर्य की बात यह है कि भोली-भाली ग्रामीण जनता को लुभाने के लिए इसने अपने दल का चुनाव चिह्न दो बैलों की जोड़ी रखा था जिससे ग्रामीण मतदाता आकर्षित होकर इसकी पार्टी को जिताते रहें।

भयभीत अंग्रेजों ने अपने प्राण और लूट के धन सहित सुरक्षित निकल जाने के लिये हमारे देश में ''भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस'' का 1885 ई. में गठन किया। इस संगठन में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों का वर्चस्व था। आगे चलकर इस संगठन ने अहिंसात्मक आन्दोलन के आधार पर जो आजादी प्राप्त की, उसमें साम्प्रदायिक आधार पर आबादी के अनुपात में जमीन बांटने के बाद भी आबादी की अदला–बदली न करके ऐसा भारी अक्षम्य अपराध किया गया जिसके कारण लाखों नर हत्यायें ही नहीं हुईं अपितु हजारों युवा स्त्रियों का अपहरण–बलात्कार और अरबों की धन सम्पत्ति हिन्दू समुदाय की लूटी गयी। लाखों की संख्या में गोवंश को भी छोड़कर हिन्दुओं को सिन्ध, पंजाब और बंगाल से भागना पड़ा। यह सब हुआ उस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कारण जिसने मुस्लिमलीग की कुटिल शतरंजी चाल में फँसकर बँटवारे के साथ ही आबादी की अदला–बदली नहीं की। जबकि मुस्लिम आबादी के अनुपात में भूमि पाकिस्तान को मिल गयी थी। इस अदूरदर्शी निर्णय का दुष्परिणाम हमारा देश अब तक भोग रहा है और न जाने कब तक भोगेगा?

आजादी के बाद हमारे गोवंश पर जिसके द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से कुठाराघात हुआ वह देश की सत्ता के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुआ था। उसने अपनी ***आत्मकथा 'मेरी कहानी'*** में स्वयं को दुर्घटनावश हिन्दू होना कहा है, किन्तु यह दुर्घटना क्या थी यह नहीं बताया गया है। रूस के वाममार्ग और मशीनी कृषि से अति की सीमा तक प्रभावित इस सत्ता प्रमुख ने सर्वप्रथम कलहलों (ट्रैक्टरों) का प्रचलन कृषि कार्य में कराकर गोवंश पर प्रथम और इसके पश्चात् गो सदृश–अधिक दुधारू विदेशी पशु लाकर इनसे गर्भाधान द्वारा देशी गायों की पवित्रता–गुणवत्ता नष्ट कराकर दूसरा आघात किया। इस पर भी घोर आश्चर्य की बात यह है कि भोली–भाली ग्रामीण जनता को लुभाने के लिए इसने अपने दल का चुनाव चिन्ह दो बैलों की जोड़ी रखा था जिससे ग्रामीण मतदाता आकर्षित होकर इसकी पार्टी को जिताते रहें।

आजादी के समय हमारे देश में सत्तर करोड़ गोवंश था जो प्रतिव्यक्ति दो से अधिक के अनुपात में था। इसमें से चौदह करोड़ बैल थे जो सात करोड़ हलों के लिए पर्याप्त थे। छत्तीस करोड़ दुधारू गायें और शेष में बछिया, बछड़े और वृद्ध गोवंश था। कृषि में ट्रैक्टरों के कारण गोवंश की संख्या क्रमशः घटने लगी और 1981 में लगभग

तीस करोड़ रह गयी। आज हमारे देश में इनकी संख्या कितनी होगी इसका अनुमान पाठक ट्रैक्टरों की बढ़ती संख्या के आधार पर लगा सकते हैं क्योंकि आज उपेक्षित–तिरस्कृत गोवंश की संख्या के आंकड़े अनुपलब्ध हैं।

आजादी के आस–पास हमारे देश में ट्रैक्टरों का आना प्रारम्भ हुआ जो 1961 में हरित क्रान्ति के समय 62 हजार थे। 1973 में यह आँकड़ा 3 लाख 66 हजार, 1985 में 55 लाख और 1995 में 85 लाख से अधिक हो चुका था। (आंकड़े राष्ट्र धर्म अप्रैल 1995 पृष्ठ 121 से) अनुमान है कि इस समय लगभग डेढ़–दो करोड़ ट्रैक्टर कृषि कार्यों में लगे होंगे। इस प्रकार यदि हम एक करोड़ ट्रैक्टरों को कृषि की जुतायी बुआयी से हटा दें तो बीस–तीस करोड़ बैलों की आवश्यकता कृषि क्षेत्र में होगी। यदि बैल चालित पाँच फाल वाले ट्रैक्टरों के निर्माण के साथ ही गुड़ और तेल बनाने के उन्नत कोल्हुओं का निर्माण किया जाये तो कृषि कार्य में बैलों की जो संख्या कम होगी वह तेल–गुड़ उद्योग में उपयोग होगी। इस प्रकार हम गोवंश को उसका सम्मानित स्थान पुनः देकर प्रतिष्ठित कर अपना ही नहीं अपनी भावी सन्तति के जीवन को सुखमय बनाते हुए अपने कर्तव्यों (धर्म) का पालन कर अपने सृष्टा ईश्वर के भी कृपापात्र हो सकेंगे।

सत्य तो यह है कि वर्तमान सरकार गोवंश का हित चाहते हुए भी उसका यथोचित हित नहीं कर पा रही है। सरकार जानती है कि कान्हा उपवन जैसे गो आश्रयस्थल समस्या का समुचित समाधान नहीं हैं। इसका समाधान इसकी शक्ति सम्पदा का सदुपयोग ही है। गोवंश मनुष्य के परिवार का महत्वपूर्ण अंग है। हमारे घर के प्रवेश द्वार के पश्चात् ही हमारे गोवंश का स्थान सुरक्षित है। यहीं एक ओर उसकी नाँदें–चरही और दूसरी ओर विश्राम स्थल है। यह स्थान छप्परों द्वारा शीत–ताप और वर्षा से सुरक्षित रहता है और प्रवेश द्वार के साथ होने के कारण नित्य साफ सुथरा भी रखा जाता है। स्वच्छता गोवंश को रुचिकर भी है जो इसे स्वस्थ भी रखती है।

अन्त में अपने लेख के माध्यम से मैं सरकार से विनम्रतापूर्वक आग्रह करना चाहता हूँ कि गोवंश को विलुप्त होने से बचाने के लिए उचित पग उठाते हुए इसकी शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग कृषि तथा आधारित धन्धों के यन्त्रों–उपकरणों को उन्नतकर सुनिश्चित करने का लोकमंगलकारी कार्य अपनी देश ही नहीं अपितु धरती की समग्र शिव–सुन्दर जैविक सृष्टि के हित में यह ध्यान रखते हुए करें कि ईश्वर की रची इस सृष्टि में समस्त प्राणी हमारे अग्रज हैं, ज्येष्ठ हैं। ईश्वर ने हमें प्रकृति के सहायक–सहचर गोवंश की रक्षा करते हुए उसका पालन–पोषण कर उसकी शक्ति सम्पदा का सदुपयोग करते हुए जीवनयापन करने और प्रकृति की शक्ति पर्यावरण को शुद्ध करते रहने के लिए ही सबसे बाद में रचा–सिरजा है। वस्तुतः जो मनुष्य अपने इस दायित्व का निर्वाह करते हुए प्राकृतिक रूप से निर्वाण करता है वह अपनी भावी सन्ततियों तक का भविष्य मंगलमय बनाता है। आज हमारे द्वारा गोवंश की उपेक्षा–तिरस्कार के कारण कृषि क्षेत्र तक में होने वाला प्रदूषण निकट भविष्य में धरती की शिव सुन्दर, जैविक रचना के लिये अति घातक सिद्ध होने वाला है। यह ध्रुव सत्य है जिसे हम भलीभांति जानते हैं फिर भी मानते नहीं हैं।

चलभाष – 8765805322

पवित्र-पावन पर्व ''दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

डॉ. विवेक

केन्द्रीय मंत्री, भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद

सम्पर्क करें

09999722727

65, किरण विहार, (कड़कड़डूमा), दिल्ली-110092

अनुसंधान // **उमेश चतुर्वेदी** (कंसल्टेंट, प्रसार भारती)

चकित करते हैं गाय पर हो रहे शोध

मौजूदा राजनीतिक माहौल में हमारे देश में गाय को लेकर दो सोच विकसित हुई हैं। एक तरफ सनातन समाज है, जो गाय को माता और देवताओं की तरह पवित्र मानता है तो दूसरी तरफ सनातन धारा की विरोधी सेकुलरवादी सोच है, जो कथित वैज्ञानिकता के आधार पर सदियों से चली आ रही सनातनी सोच को हास्यास्पद और ढपोलशंखी बता रही है। यूरोप के उभार के बाद भारतीय ज्ञान परंपरा को झुठलाने और गलत साबित करने की जो कोशिश शुरू हुई, वह मौजूदा सेकुलरवादी वर्चस्व के दौर में और बढ़ी ही है। जाहिर है कि इस सोच के निशाने पर अपनी गऊ माता भी है। लेकिन अब पश्चिमी वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं कि गायों को लेकर भारत की जो सोच रही है, वह जेनुइन है और उसका वैज्ञानिक आधार भी है।

कुछ महीने पहले ब्रिटेन की ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी ने एक शोध रिपोर्ट जारी की थी। उस शोध के अनुसार गोबर से अगली पीढ़ी के सेल्यूलोसिक पदार्थों का निर्माण किया जा सकता है। ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं को इसमें भी गाय के गोबर से ज्यादा बेहतर परिणाम मिले हैं। सेलुलोस के बारे में यहां कुछ जान लेना जरूरी है। सेल्यूलोस एक कार्बनिक यौगिक है, जो पौधों की कोशिका भित्ति का मुख्य घटक होता है। सेल्यूलोस एक तरह से जटिल कार्बोहाइड्रेट होता है, जिसे पॉलीसैकेराइड भी कहा जाता है।

यहां यह बताना भी जरूरी है कि सेल्यूलोस से बने पदार्थों का इस्तेमाल कागज़, रेयान, सेल्यूलॉइड, सेल्यूलोस एसीटेट, और सेलोफ़ेन आदि बनाया जाता है। इसके साथ ही सेल्यूलोस के जरिए प्रयोगशाला में विस्फोटक भी तैयार किए जा सकते हैं। इतना ही नहीं, सेल्यूलोस से प्लास्टिक भी तैयार किया जाता है।

पूरी दुनिया में आमतौर पर गोबर का उपयोग खाद या हरित ऊर्जा के लिए बायोगैस के स्रोत के रूप में किया जाता है, लेकिन ब्रिस्टल और एडिनबर्ग विश्वविद्यालयों के सहयोग से स्कॉटलैंड के ग्रामीण कॉलेज में हुए एक अध्ययन ने गोबर के कई उपयोगों की राह खोल दी है। यहां के वैज्ञानिक दरअसल जुगाली करने वाले मवेशियों से बेहतरीन खाद पाने की तकनीक पर अध्ययन कर रहे थे। इसी अध्ययन में उन्होंने पाया कि गोबर की क्षमता का अब तक सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया गया है या फिर उस ओर दुनिया ने ध्यान नहीं दिया है।

अभी तक गोबर के खाद का इस्तेमाल उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ ही उसमें कुछ तत्वों को मिलाकर प्लास्टिक, पुनर्नवीनीकृत कार्ड और कागज़ या कंक्रीट जैसी मिश्रित सामग्री बनाई जाती रही है। जबकि, इसका उपयोग नैनोसेल्यूलोज़ के निष्कर्षण के लिए भी किया जा सकता है। जिससे सेल्यूलोस आधारित चीजों के निर्माण में न सिर्फ तेजी लाई जा सकती है, बल्कि उसकी गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकती है। इसमें गाय का गोबर सबसे ज्यादा प्रभावी हो सकता है। ब्रिस्टल के एयरोस्पेस इंजीनियरिंग

पूरी दुनिया में आमतौर पर गोबर का उपयोग खाद या हरित ऊर्जा के लिए बायोगैस के स्रोत के रूप में किया जाता है, लेकिन ब्रिस्टल और एडिनबर्ग विश्वविद्यालयों के सहयोग से स्कॉटलैंड के ग्रामीण कॉलेज में हुए एक अध्ययन ने गोबर के कई उपयोगों की राह खोल दी है। यहां के वैज्ञानिक दरअसल जुगाली करने वाले मवेशियों से बेहतरीन खाद पाने की तकनीक पर अध्ययन कर रहे थे। इसी अध्ययन में उन्होंने पाया कि गोबर की क्षमता का अब तक सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया गया है या फिर उस ओर दुनिया ने ध्यान नहीं दिया है।

विभाग ने गोबर में प्राप्त रासायनिक कंपोजिट को कई तरह से पुनर्चक्रित करके प्लास्टिक के साथ–साथ फिर से प्राप्त प्राकृतिक फाइबर के विभिन्न वर्गों का उपयोग करके भी बनाया जा सकता है। **वैज्ञानिकों के अनुसार**–"नैनो सेल्यूलोस जैव–आधारित पदार्थ है, जिसमें बहुत ही रोचक विशेषताएँ हैं। हमें इस बात के प्रमाण मिले हैं कि खाद से प्राप्त सुदृढ़ीकरण भी गैर–अपशिष्ट स्रोतों से प्राप्त सुदृढ़ीकरण से बने समान मौजूदा कंपोजिट जैसी यांत्रिक विशेषताएँ प्रदान कर सकता है।"

वैज्ञानिकों का कहना है कि गोबर से व्यवहार्य जैव–आधारित सामग्री बनाने के लिए सिंथेटिक जीव वैज्ञानिक रास्तों पर विचार किया जाएगा, तथा सामग्री के उत्पादन को एक टिकाऊ, परिपत्र और स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला की ओर ले जाया जाएगा।

आदिकाल से ही भारत में गाय को सोने की खान कहा जाता रहा है। इन पंक्तियों के लेखक के रिश्ते के एक गोवंश प्रेमी बाबा रिखिदेव चौबे कहा करते थे कि गाय के पेट में सवा किलो सोना होता है। गोमूत्र पर हुए शोध और आयुर्वेदिक दवाओं में उसके इस्तेमाल से दुनिया परिचित हो ही चुकी है। गाय के दूध को अमृत हमारे यहां प्राचीनकाल से ही बताया जाता रहा है। लेकिन अब वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं कि गाय का दूध सचमुच में अमृत ही है। ब्राजील के शोधकर्ताओं ने हाल ही में गाय की

एक नस्ल विकसित करने में सफलता पाई है। उसके दूध में उन्होंने पाया कि मानव के लिए जरूरी इंसुलिन और उसे बनाने वाले प्रोइंसुलिन विद्यमान हैं। साफ है कि इस गाय के दूध के जरिए दुनिया में महामारी की तरह फैल रही मधुमेह की बीमारी पर काबू पाने में प्राकृतिक रूप से सफलता मिल सकती है। आमतौर पर मधुमेह के रोगी को दूध वर्जित हो जाता है। लेकिन ब्राजील का यह अध्ययन बताता है कि गाय के दूध में मिले इंसुलिन के जरिए मधुमेह पर पूरी तरह काबू पाया जा सकता है। *पिछले मार्च में इस शोध के नतीजे बायोटेक्नोलॉजी जर्नल में प्रकाशित भी हो चुके हैं। कुछ ऐसे ही नतीजे अमेरिका के इलिनोइस यूनिवर्सिटी के शोध में भी मिले हैं।* यहां के पशु वैज्ञानिक मैट व्हीलर के नेतृत्व में शोधकर्ताओं ने एक ऐसी जेनेटिकली परिष्कृत गाय तैयार की है, जिसके दूध में मानव इंसुलिन पाया गया है। यह शोध भी बायोटेक्नोलॉजी जर्नल में प्रकाशित हो चुका है। यह शोध भारत की इसी धारणा को स्थापित करता है कि गाय का दूध ना सिर्फ अमृत है, बल्कि वैश्विक स्तर पर इंसुलिन की आपूर्ति की चुनौती का सामना करने के लिए बड़ा संसाधन हो सकता है।

हजारों साल से गाय को लेकर हमारी जो सांस्कृतिक मान्यताएं हैं, गायों के गोबर पर हुए ये शोध उन्हें वैज्ञानिक आधार दे रहे हैं। इससे साफ है कि हम अपनी मान्यताओं पर कायम रहे, लेकिन उनके तार्किक आधार हमारी विस्मृति का हिस्सा बन गए। हमारे पुरखों ने जो भी परंपरा डाली, जो भी मान्यता विकसित की, उसके पीछे कोई– न–कोई वैज्ञानिक और तार्किक आधार जरूर रहा। यूरोप और अमेरिका के वैज्ञानिकों के ये नए शोध एक तरह से उसी तार्किकता का विस्तार है। इसे आधुनिक भारत की सेकुलरवादी सोच को भी स्वीकार करना होगा। तात्कालिक राजनीति के झांसे में आकर हमें अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं को कूड़ा–मगज और अवैज्ञानिक मानने से बचना होगा। गाय सदियों से हमारी माता रही है, इस मान्यता को खुले दिल से स्वीकार करना होगा। गाय की महत्ता पहले से ही स्थापित है, बस उसे सिर्फ दिल से समझना और अपनाना होगा, तभी हम गाय के पेट में स्थित सवा किलो सोने की खदान का तार्किक फायदा हासिल कर पाएंगे।

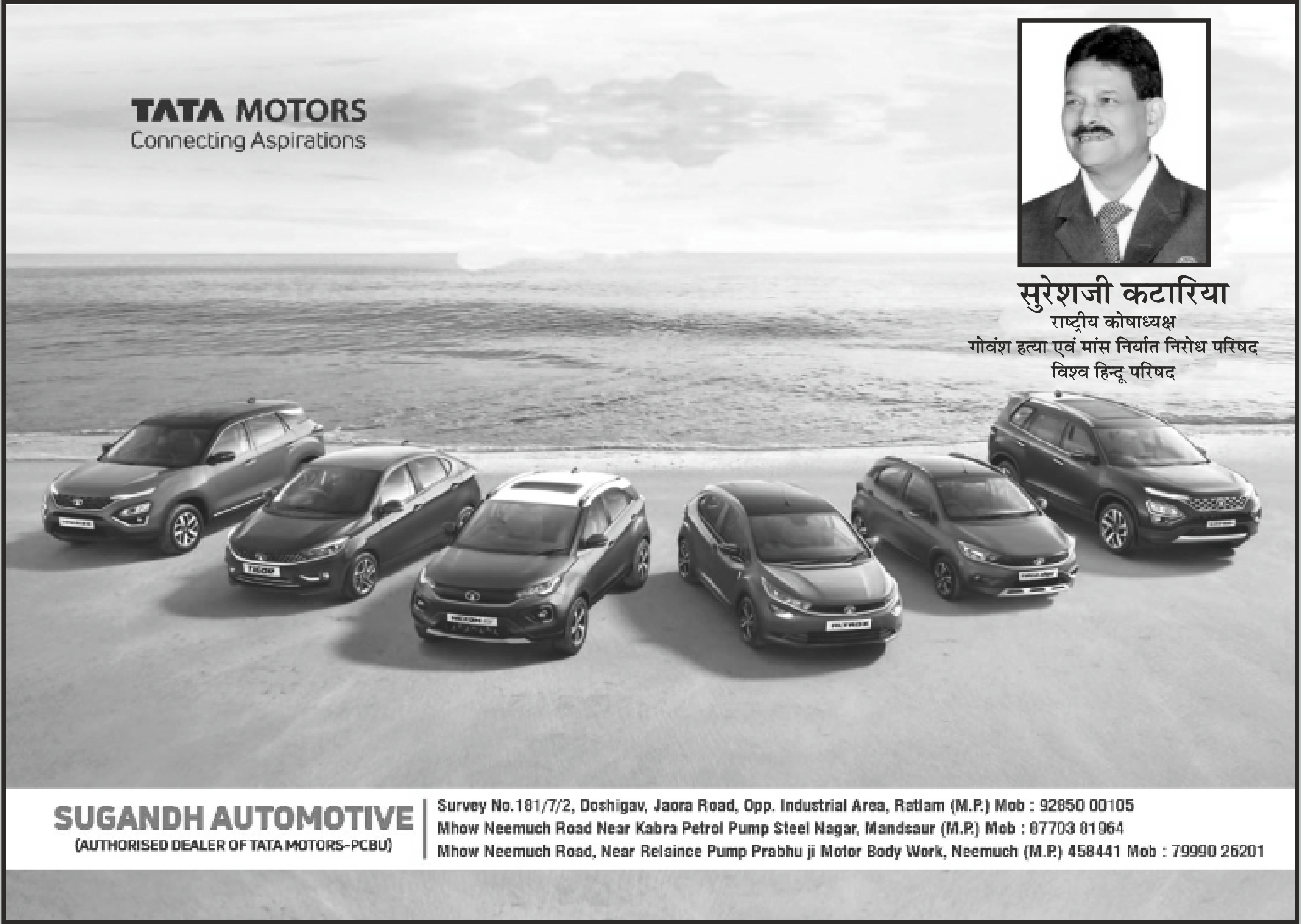

TATA MOTORS
Connecting Aspirations
सुरेशजी कटारिया
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद
विश्व हिन्दू परिषद
SUGANDH AUTOMOTIVE
(AUTHORISED DEALER OF TATA MOTORS-PCBU)
Survey No.181/7/2, Doshigav, Jaora Road, Opp. Industrial Area, Ratlam (M.P.) Mob : 92850 00105
Mhow Neemuch Road Near Kabra Petrol Pump Steel Nagar, Mandsaur (M.P.) Mob : 87703 81964
Mhow Neemuch Road, Near Relsince Pump Prabhu ji Motor Body Work, Neemuch (M.P.) 458441 Mob : 79990 26201

मधु भूतड़ा 'अक्षरा'

पद्मा गाय

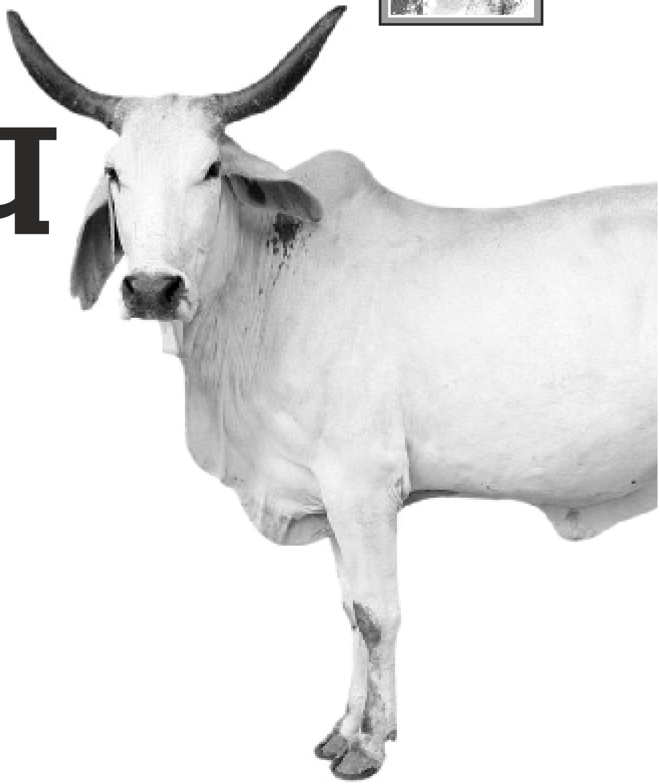

दिव्य आत्मा जो मनुज में ही नहीं, प्राणियों में भी होती है। ऐसी ही हैं पावन गोमाता, जिनके दुग्ध का सेवन श्री कृष्ण किया करते थे, जिसका उल्लेख पौराणिक काल के शास्त्रों से प्राप्त होता है। पद्मा गाय कौन–सी होती है, आइए जानते हैं। जहां तक विवरण मिलता है, उसके अनुसार 100000 लाख गौ के दूध को 10000 को पिलाते हैं,10000 के दूध को 100 गौ को पिलाते हैं,100 गौ के दूध को 1 गौ को पिलाते हैं और उस एक गौ से जो बछड़ी होती है, वह पद्मा गाय कहलाती है। यह आज के भागम भाग की जिंदगी में और गायों के अभाव में इसकी कितनी यथार्थता संभव हो सकती है, यह विचारणीय है। ऐसी गौ का बछड़ा जिस भूमि में मूत्र त्याग करता है, उसका वैज्ञानिक महत्व इतना बड़ा है कि कोई बंध्या स्त्री उसे सूंघ ले तो उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हो जाती है। कहते हैं की नंद बाबा के यहां पर एक लाख गाएं हुआ करती थीं और नंद बाबा और श्री कृष्ण उसी दुग्ध का सेवन करते थे, जिसके कारण उनके मुख मंडल पर ओज, चमक और स्निग्धता इतनी होती थी कि हर कोई उनकी सुंदरता पर मोहित हो जाता था, देह हृष्ट–पुष्ट और आंखों का तेज बरकरार रहता था।

श्री कृष्ण जी के द्वारा राक्षसी पूतना का मोक्ष के बाद उनका पद्मा गाय के मूत्र से बाल अभिषेक किया गया, पूर्णमासी, रोहिणी, यशोदा एवं गोपियों के द्वारा गौशाला में ले जाकर शुद्धि की गई। रोहिणी जी ने कुजली कर, प्यार से गोमाता को सहला कर, यशोदा जी ने कन्हैया को गोद में बिठा कर और पूर्णमासी ने गाय की पूंछ से झाड़ा लगा कर नजर उतार दी, जिसे आज भी मान्यता स्वरुप दिव्य नामों द्वारा झाड़ा लगाया जाता है और गोमाता के चरणों की लाल रज को श्री कृष्ण की देह पर मल कर उन्हें शुद्ध किया गया और आज वर्तमान में भी गोमाता के चरणों की धूलि को मस्तक पर लगाने से रोग–दोष व समस्त पापों का नाश होता है, इसी भावों के साथ हिंदू धर्म जुड़ा है। गौ सेवा परम सेवा जानते हुए पता नहीं कुछ इंसान इतने क्रूर कैसे हो सकते हैं, जो गोरक्षा की बजाय गोभक्षक बन जाते हैं। परमात्मा की इस सृष्टि में गाय का जन्म वरदान है। औरोक्स गाय की पूर्वज नस्ल थी, जो विलुप्त हो गई, पर आज जो भी नस्लें हैं, उन्हें सहेज कर, सम्मान पूर्वक जीने का अधिकार देना हमारा दायित्व है।

भागवत पुराण के अनुसार सागर मंथन के समय दैवीय कामधेनु निकली और वो पूजनीय हुई। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गाय में देवी–देवताओं का वास होता है, जिसे पूजने से परमात्मा का आशीर्वाद मिलता है।

''सेवा पूजा गाय की, यही मनुज का फर्ज।
गौ रक्षा तू कर सदा, जीवन का यह कर्ज।।''
भागवत पुराण में लिखा, गौ पद्मा अलौकिक।
चरणों की लाल रज से, हो पावन आंतरिक।।

गऊ माता को किसी भी रूप में किसी के द्वारा भी पूजा जाए, वह नमन वंदन योग्य है। जय गोमाता की।

विजय कुमार (निदेशक, विश्व संवाद केन्द्र, देहरादून)

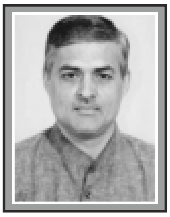

आर्थिक समृद्धि का आधार : गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन

हमारे ऋषियों ने गाय को केवल धर्म के आधार पर ही महत्व नहीं दिया, अपितु यह कृषिप्रधान भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। ट्रैक्टर के बढ़ते प्रयोग ने बैलों को बेकार कर दिया है। अतः किसान इसके प्रति उदासीन हो गया है। केवल दूध की आमदनी के आधार पर गाय रखना कठिन है। इसी कारण गोवंश की अवैध बिक्री और हत्या होती है।

आज देश के अरबों रु. विदेशी रासायनिक खादों पर खर्च हो रहे हैं; पर इनसे खेत की ताकत क्रमशः घटती है। हर साल और अधिक खाद डालनी पड़ती है। फसल शुरू में तो बढ़ती है; पर फिर रुक जाती है। अन्न, सब्जी और फलों में मिले रसायनों का जहर प्राणियों और मनुष्यों के शरीर में जा रहा है। इससे अनेक घातक रोग फैल रहे हैं तथा पर्यावरण की भारी हानि हो रही है।

रासायनिक खाद की हानियों से बचने का उपाय है गोबर से बनी केंचुआ खाद, नाडेप खाद, कम्पोस्ट खाद, सी.पी.पी, मटका खाद, अमृत पानी, सींग की खाद, सींग की सिलिका खाद, जीवामृत आदि। इनके लिए खर–पतवार तथा गुड़, दाल का आटा, दही, मिट्टी आदि घरेलू चीजों की ही जरूरत होती है। इनसे अपनी जरूरत पूरी कर सकते हैं तथा शेष से पैसा कमा सकते हैं। गोबर गैस के प्रयोग से रसोई के सब काम हो सकते हैं। घर में प्रकाश, पम्पिंग सेट, चारा मशीन, थ्रेशर, आटा चक्की, जेनरेटर आदि चला सकते हैं। गोबर गैस संयंत्र से निकलने वाली स्लरी (गोबर का घोल) सर्वश्रेष्ठ खाद होती है। अपने प्रयोग के बाद बची खाद से धन कमा सकते हैं। गोबर गैस में से मीथेन अलग कर सी.एन.जी की तरह उससे वाहन चलाने के सफल प्रयोग हुए हैं। इससे डीजल, पैट्रोल तथा गैस पर खर्च होने वाले खरबों रु. की विदेशी मुद्रा की बचत हो सकती है। इससे पर्यावरण को नुकसान भी नहीं पहुंचता।

गोबर से दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुएं बन रही हैं। इनसे भी धन कमा सकते हैं। जैसे हवन सामग्री, धूप बत्ती और पाउडर। उबटन, बरतन साफ करने वाला पाउडर, मच्छर अगरबत्ती, आग, पानी एवं रेडियोधर्मी विकिरण से सुरक्षित खपरैल, जो कैंसर और श्वांस रोग बढ़ाने वाली एस्बस्टस शीट का विकल्प है। रेडियोधर्मी विकिरण से सुरक्षित डिस्टेम्पर पेंट, पूजा लेप आदि। गोमूत्र से शैम्पू, डेटोल, टूथपेस्ट, आफ्टर शेव लोशन, साबुन, दाढ़ी बनाने वाली क्रीम, चेहरे की क्रीम, फिनाइल, शौचालय क्लीनर आदि बन रहे हैं।

पंचगव्य से नेत्र और कानों के रोग, कैंसर, हृदयरोग, मधुमेह, दाद और खुजली निवारक बाम, महिला रोगों की दवाएं, श्वांसरोग, पशुओं के खुरपका, मुंहपका, गलाघोंटू आदि रोगों की दवाएं बन रही हैं। अल्प पूंजी, स्थान और प्रशिक्षण से इनके उद्योग स्थापित कर धन कमा सकते हैं। इससे घर में सबको रोजगार मिलेगा। अनेक यंत्र डीजल या बिजली के बिना केवल बैल से चल सकते हैं। जैसे विद्युत जनित्र, चारा मशीन, आटा चक्की, तेलघानी, थ्रेशर, पम्पिंग सेट, छोटा ट्रैक्टर, बैलगाड़ी आदि। इनके प्रयोग से बैल की शक्ति का लगातार उपयोग होगा। गोवंश का संरक्षण और संवर्द्धन धार्मिक विषय के साथ–साथ देश की समृद्धि का आधार भी है। इसमें अपना, परिवार का और देश का हित सुरक्षित है।

कपिल मुनि संस्थान

जी.टी. रोड करपिया बेवर मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) 205301 फोन : 8130724888, 9411851552

Email : kapilmunigroup@gmail.com **Website :** www.bkmpgc.com, www.kmcabewar.in

मेजर स्व. युधिष्ठिर सिंह
संस्थापक

शैलेन्द्र सिंह 'विल्टन'
अध्यक्ष/सचिव

आदेश कुमारी
संस्थापिका

शिलान्यास मा. श्री चंद्रशेखर जी
प्रधानमंत्री 1990

B. Tech, M. Tech
MBA, MCA, LLB
D-Pharma, B-Pharma , M-Pharma
Bsc Nursing, Ph.D etc

जनरल बी.के. सिंह द्वारा
मेजर युधिष्ठिर सिंह जी का अभिनंदन

संस्थान

01. कपिल मुनि आश्रम करपिया बेवर मैनपुरी।
02. भारतीय कपिलमुनि पी.जी. कालेज करपिया बेवर मैनपुरी।
03. कपिलमुनि चिल्ड्रन्स एकेडमी करपिया बेवर मैनपुरी।
04. भैरों सिंह उर्मिला सिंह कालेज गनेशपुर फरूखाबाद।
05. कपिलपुनि फार्म्स करपिया बेवर मैनपुरी।
06. कपिलमुनि एलीमेन्ट्री स्कूल बेवर मैनपुरी।
07. मेजर युधिष्ठर सिंह मैमोरियल लॉ कालेज करपिया बेवर मैनपुरी।
08. मेजर युधिष्ठ सिंह मैमोरियल डेन्टल कालेज करपिया बेवर मैनपुरी।
09. मेजर युधिष्ठर सिंह मैमोरियल फिजीकल एजूकेशलन कालेज करपिया बेवर मैनपुरी।
10 कपिलमुनि एग्रो फूडस कोल्ड स्टोरेज करपिया बेवर मैनपुरी।
11. कपिलमुनि एग्रो फूडस वैजीटेवल कोल्ड करपिया बेवर मैनपुरी।
12. कपिलमुनि एग्रो फूडस कोल्ड स्टोरेज कोल्ड मैनपुरी।
13. कपिलमुनि राष्ट्रीय रोड कन्स्ट्रक्सन्स नोयडा, उत्तर प्रदेश।

कैम्प आफिस
शैलेन्द्र कुमार सिंह 'विल्टन' (एड.) हाईकोर्ट
अध्यक्ष, गोविज्ञान परीक्षा समिति
कार्यकारणी सदस्य भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद

कार्पोरेट आफिस
मनोज कुमार (प्रबन्ध निदेशक)
कपिल मुनि हाउस, आर.एन.73, सेक्टर 62 नोएडा

BRING FEARLESS TO YOUR GAME

I can face a speeding ball and not flinch. I can hold a bowler's stare and not blink.
In the heat of battle, reputations can be built or destroyed in the blink of an eye.
But I never surrender to pressure - or to mind games.
My crease is my domain and my eleven opponents are no match for me.
I like setting targets, chasing targets and being the target.
I'm not afraid to be the hero or the villain.
I will stand strong, even when teammates fall.
My game is bold, brave and rebellious and I have 40 years of heritage behind me.
I am DSC. ***I am Fearless.***

DSC FEARLESS

DELUX SPORTS COMPANY
91-1871-505600, 505601
dsc@deluxsports.com

www.dsc-cricket.com
www.facebook.com/DSCcricket
www.twitter.com/DSCcricket
www.instagram.com/dscfearless

Sri Sri Jagadguru Shankaracharya Mahasamsthanam,
Dakshinamnaya Sri Sharada Peetham, Sringeri - 577139

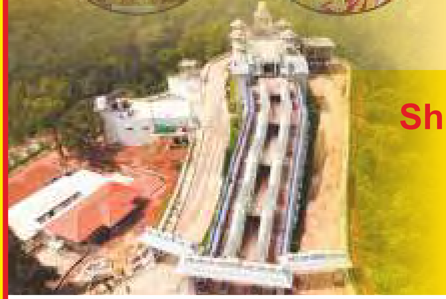

Shree Kanakdurga, Shree Nagalakshmi Ammavari Mandiram

Kanakadurga Cross Roads, Basheerbagh
Hyderabad- 500029
Ph. : 040-2323 7431, 2323 0858

Guruseva Dhurinda, Padmasri **Dr. V. R. Gouwri Shankar** (CEO & Administrator, Sri Sharda Peetham, Sringeri) Advisor Committee	**M. Rama Raju** Chairman	**Kasi V. Rao** Branch Head

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

Jai Gomatha.....

Gavo Rakshathi Rakshitaha..

Best Compliments from

Kallem Navajeevan Reddy

Corporator, Hayathnagar Division..
Greater Hyderabad Muncipal Corporation,
Hyderabad (Telangana)

नारायण कृषक उत्थान सहकारी समिति मर्यादित

विश्व हिन्दू परिषद-गोरक्षा विभाग
भारतीय गोवंश रक्षण-संवर्द्धन परिषद द्वारा संचालित

आत्म दीपो भव

नारायण फार्म हाउस, सालारपुर, निकट ट्रांसलैम एकैडमी,
मवाना रोड, मेरठ (उ.प्र.) फोन : 6395705510

भारत सरकार की कौशल विकास योजना के भावानिर्देशानुसार

पशुधन को स्वरोजगार का माध्यम बनाने हेतु सुयोग्य निर्देशन

परम पूज्य स्वामी विवेकानंद सरस्वती
जीकुलाधिपति गुरूकुल प्रभात आश्रम
टीकरी भोला झाल मेरठ (उ.प्र.)

- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा भारतीय नस्लों का संवर्द्धन
- प्राथमिक पशु उपचार
- नस्ल सुधार एवं टीकाकरण
- बीमारियों की रोकथाम
- गौशाला प्रबन्धन
- सचल पशु चिकित्सालय की व्यवस्था
- मधुमक्खी पालन
- औषधीय पौधों की जानकारी
- पंचगव्य औषधि प्रशिक्षण केन्द्र
- गोवंश आधारित जैविक खेती प्रशिक्षण केन्द्र

डॉ. कृष्णपाल सिंह
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद
BVSC & AH (Pant Nagar)
सेवा निवृत उपनिदेशक
पशु पालन एवं डेयरी विभाग (हरियाणा)
मो. 8057570055, 9416134205

।। श्री सुरभ्यै नमः ।।
अशोक छापड़िया
प्रांतीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय टोली सदस्य
भारतीय गौ वंश रक्षण संवर्धन परिषद
संयोजक
सुरभी शोध एवं विकाश केंद्र
बिच्छुबहाली, कांटाबांजी (ओड़िशा)
CHHAPADIA SALES
AUTHORISED DISTRIBUTOR
LG
Contact : 94370- 39778 (Ashok Chhapadia)
Address : Kantabanji, Dist. - Balangir, Pin - 767039 (Odisha)

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
मुकेश अग्रवाल
न्यासी, गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद
अध्यक्ष, गोकुलम सेवा न्यास (गौशाला)
ग्राम खजुरीया, इन्दौर मो. 9827541114
दारुका ट्रेडर्स
पशु आहार निर्माता
ग्राम पिगडम्बर ए.बी. रोड, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

चित्तौड़गढ़ डेयरी
सरस
चित्तौड़गढ़-प्रतापगढ़
दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.
6 किमी, उदयपुर रोड, डायमण्ड चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

श्री काली चरण शर्मा

ग्राम गौ सेवक

ग्राम+पो. - पहावटी, जिला - अलिगढ़
उत्तर प्रदेश - 202143

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

सोनू चौहान

ग्राम+पो. - ओगीपुर, जिला - अलीगढ़

आदर्श चौहान पिता सोनू चौहान अपने पुत्र के जन्मदिन में गौ विज्ञापन समर्पित करते हैं इनका कहना है कि मेरे परिवार पर गौ माता की असीम कृपा रहती है गौ सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

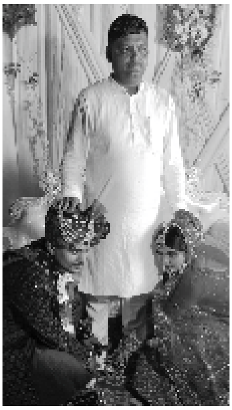

अमन गौतम पत्नी मनोरमा गौ माता की कृपा से हमारे बेटे की सुंदर सी जोड़ी गौ माता ने बनाई है मैया गौ माता इस पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें

श्री श्याम बाबू

ग्राम-नगला, पदम
पो-नगला पदम, जिला - अलीगढ़

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

राजकुमार चौहान

ग्राम-भोगपुर, पोस्ट-भगतपुर, जिला-अलीगढ़

मैं सभी सनातनियों से निवेदन करूंगा गौ माता की सेवा करना प्रारंभ करें गौ माता की कृपा से मुझे पुत्र प्राप्त हुआ है

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

आईपीसी की धारा 272
दूध में मिलावट पर आजीवन कारावास

क्षीरं सात्म्यं क्षीरमाहुः पवित्रं
क्षीरं मङ्गल्यं क्षीरमायुष्यमुक्तम्।
क्षीरं वर्ण्यं क्षीरमाहुश्च केश्यं
क्षीरं सन्धानं क्षीरमाहुर्वयस्यम्।।

काश्यपसंहिता के कल्पस्थान में **"भोजनकल्प"** नामक अध्याय में खाद्य—विज्ञान का वर्णन मिलता है, जिसमें कहा गया है — "दूध आत्मा को बल देने वाला है, यह पवित्र है, दूध मङ्गल करने वाला है और आयुवर्द्धक है। दूध शरीर की कान्ति को बढ़ाने वाला है, बालों को बढ़ाने वाला है। दूध हड्डियों को जोड़ने वाला और यौवन प्रदान करने वाला है।"

"दूध जीवन दाता है"। "चरक संहिता" में कहा गया है **"क्षीरं जीवयति"** और इस जीवन दाता दूध को हम जानबूझकर विष बनाने का कार्य कर रहे हैं, मात्र अपने स्वार्थ के लिए। कल्पना कीजिए यदि दूध न हो तो कहाँ से दही, छाछ, मक्खन, घी आएगा; कैसे मानव कल्याण व प्रकृति की रक्षा हेतु होम—यज्ञ संपन्न होंगे; आज विश्व में सबसे अधिक पसंद किए जाने वाला पेय चाय—कॉफी किस प्रकार बनाई जाएगी; यहाँ तक कि त्योहारों व विशेष आयोजनों पर बनाई जाने वाली खीर व सैकड़ों प्रकार की स्वादिष्ट मिठाइयाँ कैसे बनेंगीं? दूध के बिना ये सब नहीं होगा, न सेहत होगी न स्वाद!

चिंता का विषय यह है कि भारत 208,984,430 टन के कुल उत्पादन के साथ विश्व का सबसे बड़ा देश बन गया है। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अनुसार "भारत दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है जो वैश्विक दूध उत्पादन में 24.64 प्रतिशत का योगदान देता है।" वैश्विक स्तर पर योगदान देने वाला भारत अपने ही घर में लोगों को विष दे रहा है। ऐसा क्यों?

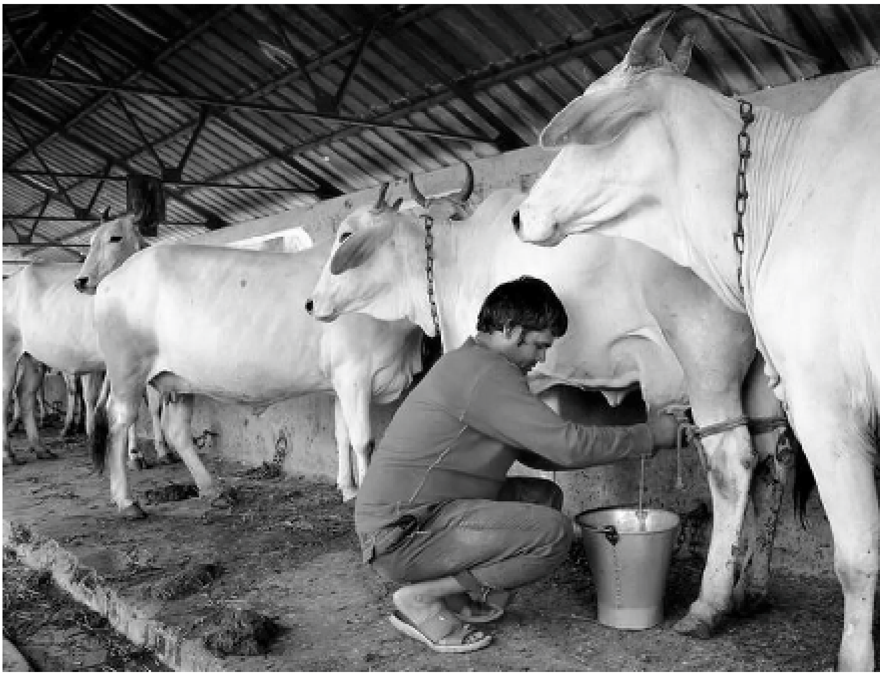

दूध व दूध से बने उत्पादों में आज मिलावट की इतनी घटनाएँ सामने आ रही हैं कि मिलावट खोरों के विरुद्ध अभियान चलाने की आवश्यकता पड़ गई। त्योहारों का देश भारत, जहाँ का जीवन मिठाइयों के बिना फीका है और इन्हीं मिठाइयों में आज ज़हर मिलाया जा रहा है। त्योहारों पर दूध और मिठाइयों की बढ़ती माँगों को पूरा करने और अधिक पैसा कमाने की लालसा में दुकानदार मिलावट कर रहे हैं। अतः इस मिलावट को रोकने के लिए त्योहारों के दौरान केंद्र सरकार की एजेंसी भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने राज्यों के खाद्य संरक्षा विभागों और भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के सभी क्षेत्रीय निदेशकों को मिलावट खोरों के खिलाफ अभियान चलाने के निर्देश दिए गए। इसमें सभी राज्यों के प्रमुख बाजारों में मिलावट की जाँच करने के लिए फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स मोबाइल वैन की व्यवस्था की गई जिससे यह पता लगाया जा सके कि बाजार में बने उत्पाद खाने योग्य हैं या नहीं।

दूध में मिलावट सदा से होती आई है, पहले मात्र पानी मिलाया जाता था परंतु आज यूरिया, डिटर्जेंट, फार्मेलिन, कास्टिक सोड़ा, बोरिक एसिड, हाइड्रोजन पराक्साइड, शुगर और मेलामाइन जैसे कई केमिकल प्रचुर मात्रा में मिलाए जाते हैं। दूध में साबुन, डिटर्जेंट, यूरिया, स्टार्च और फॉर्मेल्डिहाइड मिलाना तो आज आम बात हो गई है। यही कारण है कि आज नए–नए रोगों के नाम सामने आ रहे हैं। ये रोग न बच्चों को छोड़ते न ही बड़ों को। मिलावटी दूध के लंबे समय तक सेवन से जठरांत्र संबंधी (पेट दर्द, सूजन, दस्त, कब्ज, उल्टी में खून आना आदि), गुर्दे की क्षति, कैंसर जैसी भयानक बीमारियों का खतरा बढ़ता जा रहा है। भारतीय खाद्य एवं मानक प्राधिकरण (FSSI) के अनुसार देश में कृत्रिम और मिलावटी दूध का व्यवसाय बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

गत 'जनवरी में भारत के डेयरी हब, गुजरात के खाद्य एवं औषधि नियंत्रण प्रशासन के अधिकारियों ने नवसारी के एक प्रसंस्करण संयंत्र से 13,000 किलोग्राम से अत्यधिक मिलावटी घी को जब्त किया। परीक्षण के बाद इसमें पशु–मूल की चर्बी और पाम ऑयल से बना पाम ओलीन एवं अन्य हानिकारक पदार्थों की मिलावट पाई गई। इसी प्रकार, कर्नाटक के तुमकुर जिले में मिठाई बनाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले दूध में 12000 किलोग्राम नकली उत्पादों को जब्त किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के हानिकारक वनस्पति तेल और सोया की मिलावट की गई थी।' हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों से दूध में मिलावट की खबरें आती रहती हैं। कुछ समय पहले उत्तराखंड के दूध उत्पादक सहकारी संघ द्वारा उत्पादित दूध 'आंचल' में मेलामाइन नामक जहरीले रसायन मिलाए जाने का मामला सामने आया। यह रसायन किडनी को खराब कर सकता है और कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी को पैदा करता है। यह एक कार्बनिक रसायन है जो प्लास्टिक बनाने के काम आता है। इस प्रकार देश के विभिन्न क्षेत्रों से दुग्ध उत्पादन में मिलावट की खबरें समय–समय पर आती ही रहती हैं। हद तो तब पार हो गई जब विश्व में जाने–माने प्रतिष्ठित मंदिर तिरुपति बालाजी के प्रसाद 'लड्डू' में प्रयोग होने वाले घी में कथित रूप से गोमांस की चर्बी, मछली का तेल, सूअर की चर्बी एवं अन्य वनस्पति तेल की मिलावट पाई गई।

आज मानवता खोती नज़र आ रही है। पहले का व्यक्ति अपना हर

कार्य निःस्वार्थ भाव से मानव कल्याण हेतु करता था परंतु आज का व्यक्ति अपने लाभ के लिए किसी की भी बलि दे सकता है। वह स्वार्थ में इतना अंधा हो गया है कि मानवता को ही भूलता जा रहा है। वह यह भूल चुका है कि उसका प्रत्येक कर्म उसके जीवन खाते में जमा हो रहा है।

देश में दूध का 70 प्रतिशत व्यवसाय असंगठित ढांचा संभाल रहा है। देश के दूध उत्पादन में 96 हजार सहकारी संस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। 14 राज्यों में अपनी सहकारी दुग्ध संस्थाएँ हैं, जहाँ लाखों लीटर का दुग्ध संग्रह होता है। व्यक्ति इन संस्थाओं पर विश्वास करके दूध खरीदता है। यदि यही संस्थाएँ मिलावट करने लगेंगीं तो देश में दूध की गुणवत्ता समाप्त ही हो जाएगी। उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल में दूध या खाद्य–पेय पदार्थों में मिलावट किए जाने वाले पर आईपीसी की धारा 272 में बदलाव कर आजीवन कारावास दण्ड का प्रावधान है। अन्य राज्यों में भी कानून है परंतु वे इतने कठोर नहीं हैं। अतः इस प्रकार के सख्त कानून बनाए जाने की आवश्यकता है कि मिलावटखोरों के अंदर डर पैदा हो और मिलावटी कारोबार बंद हो सकें।

जब हम अपने बुजुर्गों को देखते हैं तो वे हृष्ट–पुष्ट रहकर 90–100 वर्ष जिए हैं, परंतु आज की पीढ़ी में छोटी–सी आयु में ही अनेक रोगों ने आकर अपना घर बना लिया है। इसका सबसे बड़ा कारण है मिलावटी भोज्य पदार्थ, क्योंकि आज शुद्धता कहीं बची ही नहीं। इस शरीर को निरोगी और ऊर्जावान रखने वाला सबसे आवश्यक अमृत रूपी 'दूध' में ही मिलावट है तो अच्छे स्वास्थ्य की कल्पना करना व्यर्थ है।

आज व्यक्ति को जागरूक होने की आवश्यकता है। इस मिलावटी बाजार को जो बाहर और स्वयं के अंदर स्थापित हो चुका है, उसे मिटाने की आवश्यकता है। समाज के हर व्यक्ति को सबसे पहले अपने मन को शुद्ध करने की आवश्यकता है; जब मन शुद्ध होगा तभी कर्म शुद्ध हो सकते हैं; कर्म शुद्ध होंगे तभी किसी समाज का विकास हो सकता है और इसी विकास पर निर्भर है "देश की उन्नति"; अन्यथा, भारत "विश्व गुरु" बनने का सपना मात्र कल्पना बनकर ही रह जाएगा... । घर पर ही परीक्षण द्वारा दूध और दूध उत्पादों में आम मिलावट का पता लगाने के तरीके :–

1. दूध में पानी – 'इसका पता दूध की एक बूंद को पॉलिश की हुई तिरछी सतह पर डालने से लगाया जा सकता है। शुद्ध दूध की बूंद धीरे–धीरे बहती है और अपने पीछे एक सफेद निशान छोड़ती है, जबकि पानी मिला हुआ दूध बिना कोई निशान छोड़े तुरंत बह जाता है।'

2. दूध में स्टार्च – 'इसमें आयोडीन टिंचर या आयोडीन घोल की कुछ बूंदें डालें। नीला रंग आना स्टार्च की उपस्थिति को दर्शाता है। आयोडीन घोल मेडिकल स्टोर में आसानी से उपलब्ध है।'

3. दूध में यूरिया – 'एक टेस्ट ट्यूब में एक चम्मच दूध लें। इसमें आधा चम्मच सोयाबीन या अरहर पाउडर डालें। टेस्ट ट्यूब को हिलाकर सारी सामग्री को अच्छी तरह मिला लें। 5 मिनट बाद इसमें लाल लिटमस पेपर डुबोएँ। आधे मिनट बाद पेपर हटा दें। दूध का रंग लाल से नीला होना यूरिया की मौजूदगी को दर्शाता है।'

4. दूध में डिटर्जेंट – '5–10 मिली. सैंपल को बराबर मात्रा में पानी के साथ हिलाएँ। झाग डिटर्जेंट की मौजूदगी को दर्शाता है।'

5. सिंथेटिक दूध – 'सिंथेटिक दूध का स्वाद कड़वा होता है, उँगलियों के बीच रगड़ने पर साबुन जैसा अहसास होता है और गर्म करने पर पीला हो जाता है। सिंथेटिक दूध सफेद रंग, पानी, पेंट, तेल, क्षार, यूरिया और डिटर्जेंट आदि मिलाकर बनाया जाता है।'

6. सिंथेटिक दूध – 'यूरियाज़ स्ट्रिप्स का उपयोग करके दूध की जाँच आसानी से की जा सकती है। यूरियाज़ स्ट्रिप्स में रंगीन चार्ट दूध में मौजूद यूरिया की मात्रा का पता लगाने में मदद करता है। यूरिएज स्ट्रिप एंजाइमेटिक परख पर आधारित एक बायोस्ट्रिप है।'

7. ग्लूकोज/इनवर्ट शुगर – 'डायसेट्रिक स्ट्रिप की एक पट्टी लें और उसे 30 सेकंड से 1 मिनट तक दूध में डुबोएँ। यदि पट्टी का रंग बदलता है तो इसका मतलब है कि दूध के नमूने में ग्लूकोज है। यदि पट्टी के रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो ग्लूकोज अनुपस्थित है। दूध में चीनी की चाशनी मिलाने से ग्लूकोज का उल्टा प्रभाव पड़ता है, जिससे उसका गाढ़ापन और स्वाद बढ़ जाता है।'

8. खोआ और उसके उत्पाद में स्टार्च – 'नमूने की थोड़ी मात्रा को थोड़े पानी के साथ उबालें, ठंडा करें और उत्पाद में आयोडीन घोल की कुछ बूंदें डालें। नीला रंग बनना स्टार्च की उपस्थिति को दर्शाता है।'

9. छेना या पनीर में स्टार्च – 'नमूने की थोड़ी मात्रा को थोड़े पानी में उबालें, ठंडा करें और आयोडीन घोल की कुछ बूंदें डालें। नीला रंग बनना स्टार्च की उपस्थिति को दर्शाता है।'

10. दूध में मेलामाइन – 'धूप में रखने पर दूध का पैकेट फूलकर गुब्बारा हो जाता है।'

SHREE SADBHAVNA SEVA SANSTHA TRUST

- Free Treatment of Stray animals on sight
- Hospitalization of accident & pregnancy cases
- Save cows from slaughtering
- We are serving from 2007 Free of charge
- Donations Exempted under Section 80G

We are serving IN VASAI, VIRAR NALASOPARA CITIES

वैद्य गोपाल कृष्ण सोलंकी (पंचगव्य चिकित्सक)

पर्यावरण रक्षक : गैया मैया

यह कोई रहस्य नहीं है कि हम जलवायु संकट का सामना कर रहे हैं। कई वर्षों से यह खतरनाक स्तर पर है और अब इसके परिणाम हमें झेलने पड़ रहे हैं। वैज्ञानिक समुदाय में इस बात पर व्यापक सहमति है कि हाल के वर्षों में दुनिया का तापमान खतरनाक दर से बढ़ा है और यह वृद्धि मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों के कारण है। विशेष रूप से वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए मुख्यतः ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है – ये यौगिक ग्रीनहाउस में कांच की तरह काम करते हैं, गर्मी को रोकते हैं और वातावरण को गर्म करते हैं। इन ग्रीनहाउस गैसों में सबसे आम कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) है। जबकि दुनिया भर की सरकारों ने कार्बन उत्सर्जन के स्तर को कम करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई हैं, इनमें से कई प्रयास औद्योगिक और अन्य मानव–चलित गतिविधियों पर केंद्रित हैं।

ग्लोबल वार्मिंग (विश्व का तापमान) बढ़ने के साथ दुनियाभर में रेगिस्तान अपना आकार बढ़ा रहे हैं। यहां तक कि खुद सहारा मरुस्थल हर साल लगभग 45 किलोमीटर की रफ्तार से फैल रहा है। दुनिया के सारे बड़े रेगिस्तानों में फैलाव देखा जा रहा है। जैसे चीन और मंगोलिया में फैला हुआ गोबी मरुस्थल हर साल करीब 6 हजार वर्ग कि.मी. का दायरा बढ़ा रहा है। ऐसे में साइंटिस्ट (वैज्ञानिक) चेता रहे हैं कि यही हाल रहा तो दुनिया में उपजाऊ जमीन कम और रेगिस्तान ही रेगिस्तान हो जाएंगे, जहां लोगों की जिंदगी बहुत कठिन हो जाएगी।

हम आगे कार्बन पृथक्करण (कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन/ Carbon Sequestration) के विषय की जानकारी प्राप्त करेंगे और इसमें गोमाता किस प्रकार सहयोगी हैं यह भी समझेंगे। गोमाता हमें भोजन के अलावा भी कई तरह के लाभ प्रदान करने के लिए अथक परिश्रम करती हैं। वे विभिन्न तरीकों से टिकाऊ पर्यावरण को बढ़ावा देने में मदद करती हैं, ग्लोबल वार्मिंग और मरुस्थलीकरण जैसी समस्याओं को हल करने में भी मदद करती हैं।

कार्बन डाइऑक्साइड सबसे अधिक उत्पादित ग्रीनहाउस गैस है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन (Carbon Sequestration) वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को पकड़ने और संग्रहीत करने की प्रक्रिया है। यह वैश्विक जलवायु परिवर्तन को कम करने के लक्ष्य के साथ वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड

की मात्रा को कम करने का एक तरीका है। कार्बन पृथक्करण के ज़रिए ग्रीनहाउस प्रभाव और जलवायु परिवर्तन को कम किया जा सकता है।

गैया मैया का गोबर और गोमूत्र पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत उपयोगी है। वेदों में कहा गया है कि वनों और कृषियोग्य भूमि की रक्षार्थ गायों को चरने के लिए खुला छोड़ा जाना चाहिए। अंग्रेजों के भारत में आने से पहले देश में वनक्षेत्र काफी विस्तारित था, जो पर्यावरण और वर्षा को सुरक्षित और नियमित बनाए रखता था। साथ ही कृषि भूमि भी काफी उपजाऊ हुआ करती थी। दुर्भाग्यवश अंग्रेजों की नीतियों के कारण गायों का वनों में चरने जाना प्रतिबंधित कर दिया गया और गोमांस का व्यापार बढ़ाने के लिए कत्लखानों को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। दुष्परिणामस्वरुप आज देश का वनक्षेत्र कम होता जा रहा है और कृषि भी बर्बाद हो रही है। आज वैज्ञानिकों ने सिद्ध भी कर दिया कि देशी गाय जब गोबर गोमूत्र करती है तो वहाँ घास उगती है, इस घास पर एक जीवाणु पाया जाता है जिसे 'स्युडोमोनास सैरिन्गी' (Pseudomonas Syringae) कहते हैं। गर्मी के दिनों में यह वायुमण्डल में बादलों की ऊंचाई तक चला जाता है और जब बादल आते हैं तो ये जीवाणु पानी को जमने पर मजबूर कर देता है तथा बर्फ के क्रिस्टल बनाता है और ये जमे हुए बर्फ के क्रिस्टल आपस में जुड़कर भारी होने लगते हैं तथा अंत में नीचे गिरने लगते हैं । नीचे वायुमण्डल में ताप अधिक होता है, अतः इसकी बूदें बनने लगती हैं और बारिश के रुप में धरती पर गिरती हैं। आज के युग में देशी गायों की संख्या में कमी के कारण ही वर्षा में भी कमी आयी है। वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि वनों के संरक्षण में गायों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस बात को प्रमाणित करने में ***'एलन सेवरी'*** का नाम उल्लेखनीय है।

गायों के वन में विचरने से गोचर और वन क्षेत्र हरे–भरे रहते हैं, जिससे पर्यावरण का संरक्षण होता है। गाय का गोबर और गोमूत्र गाय के पैरों से मिट्टी में जब अच्छी तरह से मिल जाते हैं, तब ऐसी मिट्टी वर्षा के जल को समेट कर रखती है, बह कर जाने नहीं देती। जिस भूमि में गायें विचरण करती हों वह भूमि अपनी आर्द्रता/नमी बनाए रखती है और हरी भरी रहती है। ऐसे वन क्षेत्र मरुस्थल नहीं बनते। इस प्रकार जितनी अधिक गायें भूमि पर घूम–घूम कर चरते हुए गोबर छोड़ेंगीं, उतनी ही भूमि की वर्षा के जल को रोकने की क्षमता बढ़ती है। इसके साथ ही भूमि में कार्बन डाइऑक्साइड गैस को रोकने की क्षमता बढ़ती है, जिसके परिणामस्वरूप ओजोन आच्छादन (ओजोन गैस की परत) सुरक्षित होता है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रकार गौओं की संख्या बढ़ा कर गोचरों में छोड़ने के साथ–साथ अन्य गैर पारम्परिक ऊर्जा के स्रोत जैसे कि सौर ऊर्जा के उपयोग से विश्व में पर्यावरण की पूर्णरूप से सुरक्षा सम्भव हो सकेगी। ***ऋग्वेद में बंजर भूमि को गायों द्वारा कृषि योग्य बनाने की बात कही गयी है।*** वैज्ञानिकों की मानें तो गाय के गोबर में विटामिन बी–12 अच्छी मात्रा में पाया जाता है। यह रेडियोधर्मिता को भी सोख लेता है।

आज मोबाइल फोन से निकलने वाली रेडिएशन को इसकी मदद से रोका जा सकता है। हम जितना गोमाता के निकट रहेंगे उतने ही स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। जिन घरों की दीवारों पर गाय के गोबर और मिट्टी का लेप कई वर्षों से हुआ है। इन दीवारों पर बीते कई वर्षों में न तो कोई मकड़ी का जाल दिखा है और न ही कभी छिपकली दिखी है। घर और दफ्तर की गोबर मिट्टी से लिपी दीवारों के बीच रह कर एक सात्विक अहसास महसूस किया जाता है। इन दीवारों का रख–रखाव भी बहुत आसान होता है। उत्तरप्रदेश के कानपुर क्षेत्र की गोशाला सोसाइटी के पांच कर्मचारियों ने एक ऐसी गोज्योति बनाई है, जिसकी बैटरी महज चार सौ ग्राम गाय के मूत्र से चार्ज होती है और चार सौ घंटे लगातार उजाला बिखेरती है। इसे तैयार करने में महज 3500 रूपए खर्च आए और चार सौ ग्राम गाय के मूत्र से पूरे 4 सौ घंटे बल्ब जलता है।

गोमूत्र के इस अनुंसधान से आई.आई.टी और एच.बी.टी.यू जैसे उच्च तकनीकी संस्थान भी हतप्रभ हैं। गोशाला सोसायटी ने बीते कुछ वर्ष पहले गोबर से सीएनजी तैयार की थी, जिससे सफलतापूर्वक कार चलायी जाती है। अगर सरकार गो–ज्योति को प्रोत्साहित करे तो देश की वे झोपड़ियां भी सहजता से रोशन हो सकती हैं जहां अभी बिजली की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आगामी होलिका दहन में हमें अधिक–से–अधिक गोबर के कंडों या गोबर काष्ठ का प्रयोग करना चाहिए।

बायो गैस (गोबर गैस) : एक गोबर गैस प्लांट से सात करोड़ टन लकड़ी बचाई जा सकती है अर्थात साढ़े तीन करोड़ वृक्षों को जीवन दान। साथ ही तीन करोड़ टन उत्सर्जित होने वाली CO_2 को रोका जा सकता है। खाद–गोबर गैस प्लांट से निकली गोबर की स्लरी से कम्पोस्ट खाद व केंचुआ खाद बनाई जाती है। गाय के गोबर के कंडे का धुआं मच्छर भगाने के काम आता है। गाय सींगों द्वारा ऊर्जा प्राप्त करती है। यह प्राकृतिक ऊर्जा हेतु एंटीना जैसे होते हैं। गाय कि मृत्यु हो जाने के 45 वर्ष बाद तक ये सुरक्षित बने रहते हैं। इसका प्रयोग सिलिकॉन खाद बनाने में किया जाता है।

गोमूत्र कीटनाशक : प्रकृति में मौजूद 99 प्रतिशत कीट जीवाणु कृषि प्रणाली के मित्र हैं जिन्हें हमने जहरीले रसायनों द्वारा मार डाला है। गाय के गोबर + गोमूत्र + वनस्पतियों से मिलाकर बने कीटनाशक मित्र जीवाणुओं को नष्ट नहीं करते हैं। गोमूत्र या खमीर छाछ से बने कीटनाशक (एक गाय का 100 एकड़ भूमि) फसल को कीटों से बचा सकता है और एक गाय का गोबर 7 एकड़ भूमि को खाद दे सकता है।

गोमाता के मूत्र का उपयोग भी मिट्टी के गुणों में सुधार करता है और उसे पौधों के लिए उत्तम खाद में परिणत करता है। यदि हमें जलवायू परिवर्तन से भारत को बचाना है तो देशी गायों को बचाना ही होगा। भारतीय नस्ल की देसी गाय हर समस्या का समाधान है और विदेशी जर्सी जानवर हर समस्या का कारण है।

प्राकृतिक उर्वरक : गाय का गोबर एक शक्तिशाली प्राकृतिक उर्वरक है जो मिट्टी को समृद्ध बनाता है, स्वस्थ पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देता है। इससे रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम हो जाती है, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

ईंधन उत्पादन : कुछ क्षेत्रों में गाय के गोबर का उपयोग बायोगैस व सीएनजी (एक अक्षय ऊर्जा स्रोत) का उत्पादन करने के लिए किया जाता है। यह न केवल एक स्थायी ऊर्जा समाधान प्रदान करता है बल्कि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में भी मदद करता है।

भूमि प्रबंधन : चरने वाली गायें चरागाहों को बनाए रखने और अतिवृद्धि को रोकने में मदद करती हैं। उनके चरने के तरीके पौधों की विविधता को बढ़ावा देते हैं और घास के मैदानों और चरागाहों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं, जो महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र हैं। गोमाता के गोबर का उपयोग मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। गोबर में समृद्ध गुण होते हैं जो मिट्टी को पोषण प्रदान करते हैं और उसकी फसलों की उत्पादकता को बढ़ाते हैं। इसके अलावा, गोमाता के मूत्र का उपयोग भी मिट्टी के गुणों में सुधार करता है और उसे पौधों के लिए उत्तम खाद में परिणत करता है। यदि हमें जलवायू परिवर्तन से भारत को बचाना है तो देशी गायों को बचाना ही होगा। भारतीय नस्ल की देसी गाय हर समस्या का समाधान है और विदेशी जर्सी जानवर हर समस्या का कारण है।

RADIANT®

Where Promise Delivers!

Radiant Controls & Automation Pvt. Ltd.

રેડિયન્ટ કંટ્રોલ્સ એન્ડ ઓટોમેશન પ્રા. લિ.

Shed No. 2, Mansi Estate, 780, Pramukh Industrial Estate,
Nr. Canara Bank, Rakanpur, Ta. Kalol, Dist : Gandhinagar-382721.

Phone : 7046026483/4 | E-mail : info@radiantcontrols.in | Website : radiantcontrols.in

CIN No.: U33120GJ2005PTC47161
GST No.: 24AADCR2530C1Z1

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अयोध्या प्रसाद

जैविक कृषि प्रमुख
गोरक्षा-लखनऊ ग्रामीण

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

महावीर मोदी
अध्यक्ष - बिहार प्रांत
9334113999

भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद

सुधा प्रधान (स्वतंत्र लेखिका)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार बन रहा है गोधन

देश की अर्थव्यवस्था में हिस्सेदारी बढ़ाने को जरूरी है टेक्नोलॉजी का उपयोग

हमारी परंपराओं और संस्कृति में जिस प्रकार नारी को अन्नपूर्णा का दर्जा प्राप्त है उसी तरह प्राणियों में गाय को भी इसी श्रेणी में रखा गया है। धर्मशास्त्र तो इसे परमात्मा की पोषण शक्ति के रूप में व्याख्यायित करते हैं। इसी प्रकार आयुर्वेद ने तो गाय को एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राणी माना है। गाय का दूध मानव शरीर के लिए श्रेष्ठ पोषण तत्व है ही, इसका मूत्र/गोबर भी चिकित्सकीय दृष्टि से बहुत अधिक उपयोगी हैं।

भारत में गायों के प्रति लगाव वैदिक काल से है। इसकी प्रमुख वजह यह है कि उस वक्त गाय को समृद्धि और उर्वरता के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था। प्राचीनकाल से ही भारत वर्ष में गाय का सांस्कृतिक व आर्थिक महत्व रहा है। गाय को सदैव पालनहार के तौर पर देखा गया। इसीलिए हमारे देश में गोवंश पालन की परंपरा रही है। समाज जैसे–जैसे आधुनिकता की तरफ बढ़ा, गोपालन ग्रामीण भारत तक सीमित रह गया। आज भी गोपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। सही मायनों में गाय संसाधनों से इतनी अधिक परिपूर्ण है कि किसी भी परिवार के लिए यह आय का एक वैकल्पिक स्रोत हो सकती है। इसलिए गाय–गोवंश को गोधन भी कहा जाता है।

गोधन के इसी महत्व को देखते हुए भारत में प्रत्येक काल में शासकों ने पशुधन के पालन में गाय को सर्वाधिक महत्व दिया। यहां तक कि मुगल काल के शासकों ने भी इसके संरक्षण के लिए कदम उठाये। औरंगजेब को छोड़कर अधिकांश मुगल शासकों के शासन काल में गाय को मारने पर रोक

लगी रही। यद्यपि अंग्रेज शासनकाल में अधिकारियों ने भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के इस महत्वपूर्ण अंग को चोट पहुँचाने की कोशिश में गोहत्या पर लगी रोक को हटा लिया था। लेकिन स्वतंत्र भारत में पुनः एक बार गोधन के महत्व और उसकी सांस्कृतिक पूजनीयता को बरकरार रखते हुए लगभग सभी प्रदेशों में गोहत्या पर रोक लगा दी गई जो अभी तक चली आ रही है। वैसे इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि शताब्दियों से गाय भारतीय कृषक समाज में अभिन्न हिस्सा रही है। यह न केवल किसान और उसके परिवार को दूध और दुग्ध उत्पादों के जरिए पोषण प्रदान करती है बल्कि कृषि कार्यों व परिवहन के लिए पशु–शक्ति भी उपलब्ध कराती है। इतना ही नहीं उसके दैनिक जीवन में ईंधन से लेकर अन्य कार्यों के लिए गोबर से भी सहयोग करती है।

समाज में स्वतंत्रता के बाद, सरकार ने गायों और मवेशियों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए, जिससे डेयरी क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसका नतीजा यह हुआ है कि भारत आज दुग्ध उत्पादन के मामले में दुनिया में पहले स्थान पर आ गया है। देश में वैश्विक दुग्ध उत्पादन का 18 प्रतिशत उत्पादन होता है। अगर आंकड़ों के लिहाज से देखें तो भारत के डेयरी उद्योग का आकार करीब 137 अरब डालर का है। इसका लाभ देश के 10 करोड़ से अधिक किसानों को होता है और यह करीब 7.5 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त पशुधन क्षेत्र भारत के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में 25 प्रतिशत का योगदान देता है।

गाय के अर्थशास्त्र को समझने के लिए आवश्यक है कि पहले हम भारतीय परिवेश में गोधन के महत्व को समझें। जैसा कि ऊपर कहा गया है, वैदिक काल से ही ग्रामीण क्षेत्र में इसे संपन्नता के प्रतीक के तौर पर देखा जाता रहा है। समाज में घर में गाय की संख्या किसी भी परिवार की समृद्धता का सूचक होती थी। देश में इस वक्त गोवंश की संख्या करीब तीस करोड़ है। इतनी बड़ी संख्या में गोधन ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था की रफ्तार को नई दिशा दे सकता है। वर्तमान में भी यदि गोपालन को बढ़ावा दिया जाए तो यह किसी भी परिवार की आर्थिक संपन्नता में सहायक हो सकता है। गोधन से मिलने वाले विभिन्न उत्पादों की मांग भी आज उतनी ही है जितनी पहले थी। अगर कुछ बदला है तो सिर्फ इन उत्पादों के इस्तेमाल का तरीका। गाय से मिलने वाले दूध की ही बात करें तो वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि भैंस के मुकाबले गोरस अधिक शक्तिशाली और गुणकारी होता है। मात्रा में कम होने के कारण गाय के दूध की कीमत भी अधिक मिलती है। कम वसा होने की वजह से गाय का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक उपयोगी होता है। डेरी उद्योग में गाय का दूध व दही एक विशिष्ट उत्पाद की तरह माने जाते हैं। इन उत्पादों को अब बड़े डेरी ब्रांड शहरी बाजार में ऊँचे भाव पर बेच रहे हैं। इन उत्पादों की मांग भी इन बाजारों में बहुत अधिक है। स्वास्थ्यवर्धक होने के नाते गाय के दूध का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।

दूध के बाद गाय से मिलने वाला दूसरा महत्वपूर्ण उत्पाद है उसका गोबर। गोधन पर अध्ययन करने वाले और पशुधन नीति में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले डॉ. लक्ष्मीनारायण मोदी ने सरकार को 1995 में ही सलाह देते हुए कहा था, "गाय और बैल का गोबर व मूत्र जैविक खाद के अनिवार्य तत्व हैं। साथ ही इनका उपयोग आवासीय इमारतों के निर्माण, फर्श व दीवारों की कोचिंग के लिए भी किया जा सकता है ताकि मच्छर–मक्खियों को दूर रखा जा सके। साथ ही यह बायो गैस का भी महत्वपूर्ण स्रोत है।

इसके अतिरिक्त कई तरह की पारंपरिक औषधियों में भी गोबर व मूत्र का उपयोग होता है।" धार्मिक–सांस्कृतिक दृष्टि से गाय के गोबर को पवित्र माना गया है। इसका इस्तेमाल न केवल धार्मिक कार्यों बल्कि घरों में भी होता है। बैक्टिरियारोधी होने के चलते घर में इसका लेपन चिकित्सकीय दृष्टि से भी लाभकारी है। पुरातन काल से हमारे समाज में घर को गोबर से लीपने की परंपरा रही है। खेती में इसका खाद के तौर पर इस्तेमाल के बारे में सब परिचित ही हैं। जैविक खेती के लिए यह श्रेष्ठ खाद मानी जाती है। इससे बनायी जाने वाली खाद जमीन की उर्वरक क्षमता को बहुत तेजी से बढ़ाती है। गोबर के उपले और खाद बनाने के लिए गोबर की बिक्री किसानों की आमदनी का एक बड़ा स्रोत हो सकता है।

वर्तमान समाज खासतौर पर शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का रुझान प्रकृति की तरफ बढ़ रहा है। अधिकांश लोग जैविक और परंपरागत तरीके से बने उत्पादों का इस्तेमाल कर रहे हैं। विशेषकर पूजा आदि की सामग्री में गोधन से बनने वाले उत्पादों के प्रति रुचि बढ़ रही है। गाय के गोबर से बनी वस्तुएं जैसे अगरबत्ती, हवन सामग्री, धूप, उपले आदि की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है। जहां तक गोबर के औद्योगिक उपयोग का सवाल है, राष्ट्रीय कामधेनु आयोग का मानना है कि गाय के गोबर से मोबाइल फोन के लिए ऐसे चिप बनाये जा सकते हैं जो मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडियेशन को कम करते हैं। इससे किसानों की आय में वृद्धि होगी। इसके चलते इन उत्पादों के निर्माण के लिए लघु उद्योग में इकाइयों की संख्या बढ़

रही है। ऐसी इकाइयों की स्थापना के लिए सरकार की तरफ से भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

गाय के गोबर के अन्य औद्योगिक उपयोगों में बायोगैस उत्पादन भी शामिल है। गाय के गोबर का उपयोग एनारोबिक पद्धित के माध्यम से बायोगैस के रूप में अक्षय ऊर्जा के स्रोत के रूप में किया जाता है। इसी तरह गाय के गोबर की खाद पोषक तत्वों से भरपूर होती है, जो इसे फसलों के लिए एक बेहतरीन जैविक खाद बनाती है। गाय के गोबर का उपयोग हस्तनिर्मित कागज बनाने के लिए भी किया जाता है, जिससे ग्रामीण कारीगरों को रोजगार मिलता है। साबुन और सौंदर्य प्रसाधन के क्षेत्र में गाय के गोबर का उपयोग प्राकृतिक साबुन, शैंपू और अन्य सौंदर्य उत्पादों के उत्पादन में किया जाता है।

गोबर के साथ–साथ गोमूत्र भी कई विशेषताओं से युक्त होने के कारण विभिन्न उत्पादों में उपयोग होता है। यह न केवल किसानों की जमीन को कीटनाशकों से बचाने के काम आता है बल्कि उर्वरकों के विषैले प्रकोपों से भी बचाता है। ग्रामीण ही नहीं शहरों में महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले कई कॉस्मेटिक उत्पादों में भी इसका भरपूर उपयोग हो रहा है। यही वजह है कि गोमूत्र को महाऔषधि बताया गया है। इसका उपयोग कई प्रकार से किया जाता है। गाय के मूत्र का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल कीटनाशक और कवकनाशी बनाने के लिए किया जाता है। गाय के मूत्र का उपयोग कुछ दवाओं के उत्पादन में किया जाता है, जैसे कि कैंसर और मधुमेह के लिए। गाय के मूत्र का उपयोग अस्पतालों और घरों में प्राकृतिक कीटाणुनाशक के रूप में किया जाता है। और तरल उर्वरक के रूप में किया जाता है, जो पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देता है। गोमूत्र के विभिन्न औषधीय उपयोग भी हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में गाय के मूत्र का उपयोग मधुमेह, कैंसर और त्वचा रोगों सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। साथ ही गाय के मूत्र में जीवाणुरोधी गुण होते हैं, जो कुछ बैक्टीरिया के खिलाफ प्रभावी होते हैं। गाय के मूत्र में सूजन–रोधी गुण होते हैं, जो सूजन और दर्द को कम करता है। गाय से मिलने वाले इन सभी अवयवों को पंचगव्य के नाम से

जाना गया है। गाय के गोबर, मूत्र, दूध, घी और दही का मिश्रण का उपयोग विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार के लिए किया जाता है। पंचगव्य में इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभाव होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देते हैं।

देश के ग्रामीण परिवारों की आर्थिकी में गाय की उपयोगिता में तो वृद्धि हो रही है किंतु इसके रास्ते में कई चुनौतियां भी आ रही हैं। मसलन गुणवत्ता नियंत्रण। इसके विस्तार के लिए आवश्यक है कि गोबर और मूत्र आधारित उत्पादों की गुणवत्ता और मानकीकरण सुनिश्चित की जाए। इसी तरह गोबर और मूत्र आधारित उद्योगों के लिए एक नियामक ढाँचा स्थापित करके भी विभिन्न उत्पादों की विश्वसनीयता में वृद्धि की जा सकती है। यह आवश्यक है कि इन उत्पादों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए इनके उत्पादन को बढ़ाया जाए। यह भी आवश्यक है कि देश में बेहतर रोग प्रबंधन की व्यवस्था हो ताकि खुरपका और मुंहपका जैसी बीमारियों के नियमित प्रकोप से गायों को बचाया जा सके ताकि उनका स्वास्थ्य प्रभावित न हो। गायों के खान–पान पर भी पर्याप्त ध्यान देना होगा क्योंकि अपर्याप्त गुणवत्ता वाला चारा और आहार मवेशियों के विकास में बाधा डालता है। वैसे देश की मौजूदा सरकार गाय के स्वास्थ्य और किसानों की आमदनी में वृद्धि की दिशा में इनके महत्व को समझती है। यही वजह है कि सरकार कई माध्यमों से काम कर रही है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन का उद्देश्य देशी मवेशियों की नस्लों का संरक्षण और विकास करना है, जबकि राष्ट्रीय डेयरी योजना दूध उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है। इसी प्रकार पशुपालन अवसंरचना विकास निधि पशुपालन क्षेत्र में अवसंरचना विकास का समर्थन करती है।

निष्कर्ष

भारत की गाय अर्थव्यवस्था इसकी ग्रामीण और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है। भले ही इस क्षेत्र में चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन विकास और वृद्धि के अवसर भी प्रचुर हैं। सर्वोत्तम वैश्विक प्रथाओं को अपनाकर, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर और सरकारी पहलों का समर्थन करके, भारत वैश्विक गाय अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनकर अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है।

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

Dr. Sunil Gupta Ji
M/s. Prisha Habitate Solutions Pvt. Ltd

D-57, Manohar Puram, Bangali More, Kankhal, Haridwar-249408 (UTTARAKHAND)
Ph-01334-251256, Mob-9411100002, 9897942593

वैद्य संघमित्रा दास (श्री आनंदम आयुर्वेद)

गो-घृत की स्वास्थ्य संवर्धन और रोग निवारण में अहम् भूमिका

गाय के घी, जिसे आयुर्वेद में "गो–घृत" के नाम से जाना जाता है, भारतीय चिकित्सा शास्त्र में अपनी औषधीय विशेषताओं के लिए अत्यंत प्रतिष्ठित है। यह न केवल स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक है, बल्कि अनेक बीमारियों को दूर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गो–घृत का उपयोग भारतीय घरों में सदियों से होता आया है और आयुर्वेद में इसके गुणों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए अतिलाभकारी माना गया है। इस लेख में गो–घृत के विभिन्न उपयोग, इसके आयुर्वेदिक दृष्टिकोण और रोग निवारण में इसकी भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने में गो–घृत की भूमिका

आयुर्वेद में रोग प्रतिरोधक क्षमता को "बल" कहा जाता है। गो घृत और ओज समधर्मी होने के कारण यह माना जाता है कि गो–घृत शरीर में ओज को बढ़ाता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता का मुख्य स्रोत है। ओज एक प्रकार की ऊर्जा होती है, जो शरीर के सारे धातुओं के सारांश है, शरीर की संपूर्ण क्षमता और जीवन शक्ति को बनाए रखने में सहायक होती है। गो–घृत का नियमित सेवन शरीर को बाहरी संक्रमणों, जीवाणुओं और वायरस से लड़ने में सक्षम बनाता है। शिशुओं से लेकर वृद्धों तक, सभी के लिए गो–घृत एक उत्तम औषधि मानी गई है जो शरीर के प्राकृतिक प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करती है।

आयुर्वेद में गो–घृत का महत्व

आयुर्वेद के अनुसार हमारे शरीर में तीन प्रमुख दोष होते हैं – वात, पित्त, और कफ। ये दोष संतुलित अवस्था में हों तो शरीर स्वस्थ रहता है और इनका असंतुलन रोगों का कारण बनता है। गो–घृत का उपयोग विशेष रूप से वात और पित्त दोष को संतुलित करने में किया जाता है, जबकि कफ दोष को स्थिर रखने में भी यह सहायक होता है। यह स्निग्ध, शीतल, और मधुर गुणों से युक्त होता है, जो शरीर को शांति, स्थिरता, और ऊर्जा प्रदान करता है। इसके सेवन से शरीर के ओज (जीवन शक्ति) का संवर्धन होता है, जो समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

मानसिक और स्नायु संस्थान के लिए गो–घृत के लाभ

गो–घृत का सेवन मस्तिष्क की कार्यक्षमता और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन से मानसिक शांति और संतुलन बना

रहता है। विशेष रूप से बच्चों और बुजुर्गों के लिए यह लाभकारी होता है, क्योंकि यह मानसिक तनाव को कम करके एकाग्रता और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। आधुनिक विज्ञान भी यह मानता है कि गाय के घी में आवश्यक फैटी एसिड्स होते हैं जो मस्तिष्क की कोशिकाओं के पुनर्निर्माण और विकास में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, यह स्नायु संस्थान को पोषण देता है और अवसाद, चिंता, एवं अन्य मानसिक समस्याओं को कम करने में सहायक है।

पुराना गो-घृत और उसके औषधीय गुण

आयुर्वेद में पुराने गो–घृत, जिसे "पुराण घृत" कहा जाता है, को विशेष औषधीय गुणों से युक्त माना गया है। पुराण घृत का उपयोग स्नायु संस्थान के विकारों, मनोविकारों, और श्वास रोगों के उपचार में किया जाता है। कई पुराने आयुर्वेदिक ग्रंथों में वर्णन किया गया है कि 10 वर्षों या अधिक पुराने गो–घृत का उपयोग विषनाशक के रूप में भी किया जा सकता है। इसके सेवन से शरीर में विषैले तत्वों का नाश होता है और यह जीवनी शक्ति को बढ़ाता है। आयुर्वेद में इसे संजीवनी का दर्जा दिया गया है, जो शरीर में नयी ऊर्जा और शक्ति का संचार करता है।

त्वचा रोग, घाव और जलने पर गो-घृत का उपयोग

गो–घृत का बाह्य प्रयोग त्वचा रोगों, जलने के घावों, ताजे घावों, और विषाक्तता में लाभकारी होता है। इसकी शीतलता और मृदुता त्वचा को शांत करने में सहायक होती है। जलने के घावों पर गो–घृत का तुरंत प्रयोग दर्द और जलन को कम करने में सहायक है और यह त्वचा की कोशिकाओं को पुनः जीवित करने में मदद करता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में घावों को ठीक करने के लिए गो–घृत को विशेष मान्यता प्राप्त है। इसके नियमित उपयोग से घाव जल्दी भरते हैं और संक्रमण का खतरा भी कम हो जाता है।

प्रजनन स्वास्थ्य में गो-घृत का योगदान

गो–घृत प्रजनन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह शुक्र धातु को बढ़ाता है और प्रजनन अंगों में शक्ति और स्थिरता प्रदान करता है। आयुर्वेद में गो–घृत का उपयोग बांझपन की समस्या के समाधान के लिए भी किया जाता है। इसका नियमित सेवन महिलाओं और पुरुषों दोनों के प्रजनन स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता है और संतानोत्पत्ति की क्षमता में वृद्धि करता है।

पाचन तंत्र और अग्नि संवर्धन में गो-घृत की भूमिका

आयुर्वेद में पाचन अग्नि को शरीर का मुख्य आधार माना गया है। यह माना जाता है कि स्वस्थ पाचन अग्नि संपूर्ण शरीर के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक होती है। गो–घृत का सेवन पाचन अग्नि को तीव्र करता है और शरीर में चयापचय (मेटाबोलिज्म) की गति को बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन से पाचन क्रिया सुधरती है और पेट से संबंधित विकारों में राहत मिलती है। गो–घृत का सेवन शरीर की पाचन प्रणाली को सुदृढ़ बनाता है और इसके सेवन से भोजन का सही प्रकार से अवशोषण होता है।

ओजवर्धक (जीवन शक्ति संवर्धन) के रूप में गो-घृत

आयुर्वेद में ओज को व्यक्ति के

जीवन की ऊर्जा माना गया है। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, मानसिक शांति, और शारीरिक स्थिरता का स्रोत है। गो–घृत का नियमित सेवन शरीर में ओज को बढ़ाता है, जिससे व्यक्ति का संपूर्ण स्वास्थ्य और जीवन शक्ति में वृद्धि होती है। इसके सेवन से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और व्यक्ति मानसिक रूप से स्थिर रहता है। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए लाभकारी है, जिनका मानसिक और शारीरिक परिश्रम अधिक होता है।

आधुनिक अनुसंधान द्वारा प्रमाणित गो–घृत के लाभ

आधुनिक अनुसंधान ने भी गो–घृत के विभिन्न लाभों को प्रमाणित किया है। इसके उपयोग से शरीर में अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) का स्तर बढ़ता है और हृदय रोगों का खतरा कम होता है। इसके साथ ही यह शारीरिक और मानसिक थकान को दूर करता है। गाय के घी में ओमेगा–3 फैटी एसिड, एंटीऑक्सिडेंट्स, और विटामिन ए, डी, ई, और के होते हैं, जो शरीर के विकास, रोग प्रतिरोधक क्षमता, और मस्तिष्क के कार्यों को बेहतर बनाते हैं।

निष्कर्ष

गो–घृत एक ऐसा अनुपम उपहार है, जो शरीर के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने और रोगों को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से यह न केवल वात और पित्त को संतुलित करता है, बल्कि कफ को स्थिर रखता है, मानसिक शांति और स्थिरता प्रदान करता है, पाचन को सुधारता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यह तंत्रिका तंत्र, प्रजनन स्वास्थ्य, और त्वचा के लिए भी अत्यंत लाभकारी है। इसलिए, गो–घृत को हमारे दैनिक आहार में शामिल करना स्वस्थ जीवन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

पवित्र–पावन पर्व "दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाए

BIO CARE PATHOLOGY LAB
Fully Authomated Computerized Lab
Dedicated to Quality, Committed to Care
Proprietor
Sonu Kumar

Near : Jaharana Mor, Main Road Chandous (Aligadh)
Mobile : 8057389748, 9058688223
Email : sonu77rose@gmail.com

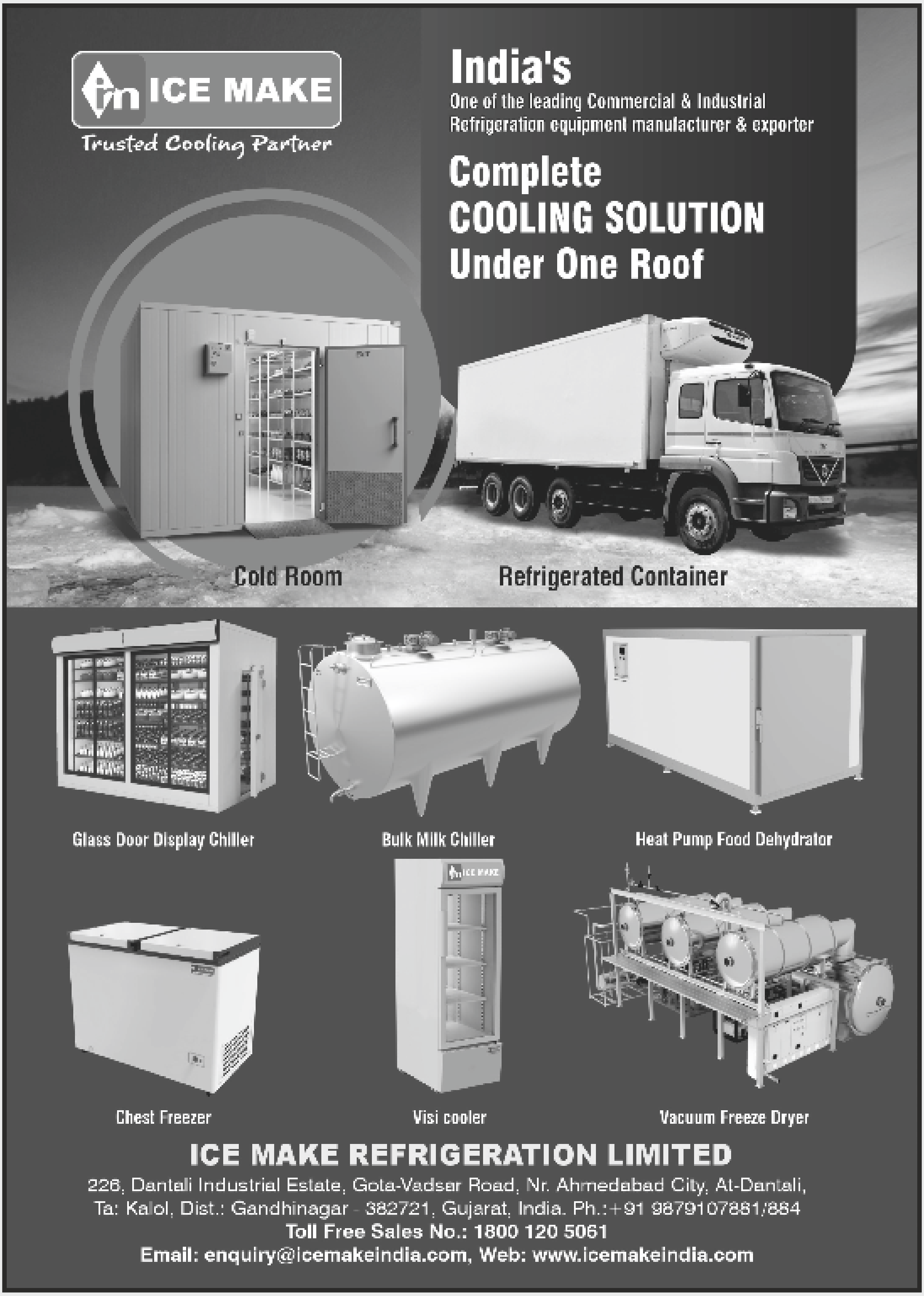
ICE MAKE
Trusted Cooling Partner
India's
One of the leading Commercial & Industrial
Refrigeration equipment manufacturer & exporter
Complete
COOLING SOLUTION
Under One Roof
Cold Room
Refrigerated Container
Glass Door Display Chiller
Bulk Milk Chiller
Heat Pump Food Dehydrator
Chest Freezer
Visi cooler
Vacuum Freeze Dryer
ICE MAKE REFRIGERATION LIMITED
226, Dantali Industrial Estate, Gota-Vadsar Road, Nr. Ahmedabad City, At-Dantali,
Ta: Kalol, Dist.: Gandhinagar - 382721, Gujarat, India. Ph.:+91 9879107881/884
Toll Free Sales No.: 1800 120 5061
Email: enquiry@icemakeindia.com, Web: www.icemakeindia.com

प्रो. अनु पाण्डे

शहर के लिए तीन स्तंभ गौशाला

एक कारगर विकल्प

गाय मानव आवास में और उसके आसपास उसकी उपस्थिति मानव कल्याण के लिए आवश्यक है। तीन स्तंभ मॉडल भारत की गायों की भलाई और उसकी देखभाल करने के लिए गाय के मालिक, सरकार और भारत के दयालु नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी पर आधारित है। तीन स्तंभ में तीन हितधारक हैं – गाय का मालिक, सरकार और दयालु नागरिक।

शहरीकरण की वजह से गोचरभूमि खत्म हो गयी हैं जिसके कारण शहरों की गायें रोड पर बैठी मिलती हैं और आए दिन हादसे का शिकार बनती हैं। ये गायें ज्यादातर दुधारू होती हैं जिनके मालिक उनका दूध निकालने के बाद उनको चरने के लिए छोड़ देते हैं। पर चरने वाली भूमि तो रही नहीं तो उसकी जगह वह कूड़े दान का कूड़ा और प्लास्टिक खाती हैं और रोड पर घूमती रहती हैं। ज्यादातर ऐसी गायों का पेट आस –पास के रहने वाले दयालू नागरिक के दिए हुए गौ ग्रास से ही भरता है। हाल ही में 15 दिन का श्राद्ध और 9 दिन का नवरात्र बीता है। इन दिनों रोज लोग गाय को भोजन कराते हैं। हमारे हर व्रत, त्योहार में गाय की पूजा होती है और उसको अपने हाथों से भोजन कराना बहुत शुभ माना जाता है। आज भी कई दयालू नागरिक रोज गो–ग्रास निकालते हैं और अपने हाथों से गोमाता को खिलाते हैं।

अकसर हम गाय के मालिक को दोष देते हैं कि वह गाय को क्यों सड़क पर छोड़ देता है। हाँ, वह गलत है पर सच्चाई ये है कि उसके लिए गाय सेवा नहीं मेवा है और उसकी जीविका का साधन भी। हम गाय के प्रति हो रहे अन्याय और क्रूरता को खत्म करना चाहते हैं और उसका विकल्प गोशाला में देखते हैं। परंतु किसकी गोशाला? नगर निगम की? ये तो ऐसा होगा जैसे गाय आसमान से गिरी और खजूर पे अटकी। सोचिए, अगर हम पाश्चात्य देशों की तरह अपनी गायों को शहर से बाहर किसी नगर निगम की गोशाला में भेज दें तो क्या हम इस तरह रोज गोग्रास

अपने हाथों से खिला सकेंगे? हमारे व्रत त्योहार गाय के बिना पूर्ण होंगे? और सबसे बड़ा प्रश्न क्या गाय निगम की गोशाला में सुरक्षित होगी? क्या उसको भर पेट भोजन मिलेगा? उसका उपचार सही से होगा? सिवाय सरकार पर अर्थिक बोझ को बढ़ाने और नगर निगम में भ्रष्ट लोगों को गाय के नाम पर पैसा कमाने के अलावा ऐसी गोशाला का गाय के लिए कोई खास फायदा नहीं दिखता। गाय न तो नगर निगम की गोशाला में सुरक्षित है और न लालची मालिक के पास। वह सिर्फ दयालू नागरिकों के बीच सुरक्षित है।

गाय एक पूज्यनीय जीव है और उसका हमारे आस–पास रहना, हमारे वातावरण में रहना, हम सभी के लिए कल्याणकारी है। इसीलिये हमको कुछ ऐसे विकल्पों पर सोचना होगा जिससे गोमाता पर क्रूरता न

हो और उसका मालिक भी गाय से अपनी जीविकोपार्जन कर सके। और ये तभी संभव है जब दयालू नागरिक गोशाला को गाय के मालिक और नगर निगम के साथ मिलकर चलायें। इन्ही सब बातों पर चिंतन करते हुए और अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर मैंने एक मॉडल तैयार किया है।

गाय धरती माता पर सबसे पूजनीय प्राणी है, विशेषकर भारतीय गाय जिसकी पूजा की जाती है और कहा जाता है कि इसमें मनुष्यों की बीमारी के लिए उपचार के सभी गुण होते हैं। इसलिए मानव आवास में और उसके आसपास उसकी उपस्थिति मानव कल्याण के लिए आवश्यक है। **तीन स्तंभ** मॉडल भारत की गायों की भलाई और उसकी देखभाल करने के लिए गाय के मालिक, सरकार और भारत के दयालु नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी पर आधारित है। तीन स्तंभ में तीन हितधारक हैं – गाय का मालिक, सरकार और दयालु नागरिक।

यह मॉडल 10 से 20 गायों के समूह को रखने के लिए आवासीय कॉलोनियों के बाहर भूमि के छोटे समूहों का उपयोग करने की वकालत करता है, जिनका रखरखाव और संचालन नगर निगम, गाय के मालिक और दयालु नागरिकों द्वारा सामूहिक रूप से किया जाएगा। इससे न केवल गाय सुरक्षित होगी बल्कि वह दयालु नागरिकों की निगरानी में रहेगी और सरकार पर वित्तीय बोझ भी कम होगा। इसके अलावा कॉलोनी के निवासियों को शुद्ध और स्वस्थ दूध उपलब्ध होगा। दूध बेचकर मालिक को पैसे भी मिलेंगे। गोमूत्र और गोबर का उपयोग निवासियों द्वारा पूजा पाठ एवं पौधों और पेड़ों में कीटनाशक और जैविक उर्वरक के रूप में भी किया जा सकेगा।

गाय के गोबर का उपयोग बायो गैस उत्पन्न करने के लिए भी किया जा सकेगा। इससे रोजगार क्षमता और राजस्व दोनों बढेगा। पर ये तभी संभव है जब तीनों हितधारक अपने कर्तव्य पूरी निष्ठा के साथ करें। प्रत्येक हितधारक के कर्तव्य कुछ इस प्रकार होंगे :–

नगर निगमों/सरकारी निकायों के कर्तव्य

1. निगम गाय के मालिकों की पहचान करें और उनकी गायों को टैग करें और गायों के विवरण जैसे कि उनका नाम, लिंग, उम्र, रंग, शरीर का वजन, ऊंचाई एक रजिस्टर मैं लिखें और इसके साथ–साथ ये सारे विवरण ऑनलाइन पशुपालन विभाग में भी पंजीकृत करें।
2. निगम आवश्यक संख्या में गायों को स्वस्थ स्थिति में रखने के लिए मालिकों के पास कितनी

जगह है इसका आकलन करने के लिए गाय मालिकों के घरों का भौतिक निरीक्षण करे। उदाहरण के लिए, यदि किसी मालिक के पास 20 गायें हैं, लेकिन उसके घर में 5 से अधिक गायों को रखने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है तो निगम उसे अपने घर में केवल 5 गायों को रखने की सीमा निश्चित करे। और बाकी 15 को उससे ले लिया जाए और एक गौशाला में रखा जाए जिसे 3 हितधारकों (मालिक, निगम और नागरिक) द्वारा सामूहिक रूप से चलाया जाए।
3. निगम ऐसे क्षेत्रों की पहचान करें जहां 10 से 20 गायों को रखने के लिए गौशालाएं बनाई जा सकें। ये क्षेत्र फ्लाईओवर के नीचे, मेट्रो स्टेशनों के पास, अप्रयुक्त पार्क, कचरा यार्ड, बंजर भूमि आदि हो सकते हैं। चुना गया क्षेत्र गाय के मालिक के निवास के पास होना चाहिए।
4. एक बार क्षेत्र की पहचान हो जाने के बाद निगम 10 से 20 गायों को रखने के लिए एक गौशाला बनाएगा और उस मालिक को गौशाला आवंटित करेगा जिसकी गायें हैं। मालिक को शपथ पत्र देना होगा कि वह गाय को गौशाला में ही दुहेगा और निगम तथा क्षेत्र के दयालु नागरिकों की अनुमति के बिना गायों को कहीं भी नहीं ले जाएगा। गौशाला की साफ–सफाई और रख–रखाव की जिम्मेदारी भी उनकी होगी, ऐसा न करने पर उन्हें दंडित किया जाएगा।
5. गाय द्वारा क्रूरता मुक्त दूध देने के लिए निम्लिखित दिशानिर्देश बनाएं जयेंगे जिनका मालिक सख्ती से पालन करेगा –

दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए गाय को ऑक्सीटोसिन नहीं दिया जाएगा। यह न केवल गाय के लिए बल्कि उसके दूध का सेवन करने वाले इंसानों के लिए भी हानिकारक है। गायों पर जबरन प्रजनन

और कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से प्रजनन की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रसव के बाद बछड़ा मां के पास रहेगा और बछड़ा एक महीने का होने तक मानव उपभोग के लिए दूध नहीं लिया जाएगा। इसके बाद जैसे–जैसे बछड़ा बड़ा होगा मानव उपभोग के लिए दूध की मात्रा बढ़ सकती है। बूढ़ी गायों और बैलों को उनके मरने तक गौशाला में ही रखा जाएगा। गाय के जन्म और मृत्यु का ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य होगा। निगम अपने पशु चिकित्सा विभाग के साथ गायों के स्वास्थ्य और उनके टीकाकरण और दवा आदि के लिए गौशाला की नियमित निगरानी और निरीक्षण करेगा।

यदि मालिक गौशाला में साफ–सफाई और स्वच्छता नहीं रखता है और दिशानिर्देशों का पालन नहीं करता है तो निगम उसको दंडित कर सकता है। कोई भी मालिक ऑक्सीटोसिन, कृत्रिम गर्भाधान या गाय को गौशाला से बाहर निकालते हुए पाया गया तो उसे गंभीर दंड दिया जाएगा। निगम अपने पशु चिकित्सा विभाग के साथ मालिक द्वारा अपने घर में रखी गई गायों की स्वच्छता और स्वास्थ्य की नियमित निगरानी और निरीक्षण करेगा। मालिक के पास रखी गई गायों के लिए भी ऊपर दिए गए दिशानिर्देशों का कठोरता से पालन किया जाएगा।

गाय के मालिक के कर्तव्य

मालिक अपने घर में पाली गई गायों की उचित देखभाल करें। गायों को अच्छी तरह से खाना खिलायें और किसी भी परिस्थिति में उनको छोड़ें नहीं। यदि गायें बीमार, कुपोषण और अस्वस्थ पाई गईं तो निगम द्वारा गायों को जब्त कर लिया जाएगा और सामूहिक गौशालाओं में रखा जाएगा। यदि मालिक गायों

गाय हमारी माता है और उसमें 33 कोटी देवी देवताओं का वास होता है, लेकिन आज पांच सौ वर्ष से ज्यादा हो गए गोमाता का अपमान और शोषण होते हुए। भारत 1947 में आज़ाद तो हो गया लेकिन पश्चात्य मानस से आज भी प्रभावित है। भारत उस दिन आज़ाद माना जायेगा जिस दिन हर गली मोहल्ले में गौशालाएं होंगीं और गोमाता और नंदी को पूजा जायेगा। उनके आशीर्वाद से ही भारत समृद्धि और खुशहाली की ओर अग्रसर हो पायेगा।

को छोड़ता हुआ पाया गया तो उसे निगम द्वारा कड़ी सजा/दंड दिया जाएगा।. यह मालिक की जिम्मेदारी होगी कि अतिरिक्त गायें जो उसके अपने घर में नहीं रखी जा सकतीं, उन्हें वे खुद आवंटित गौशाला में ले जाएं। इससे गायों और बैलों को गौशाला में ले जाने की परिवहन लागत बचेगी। इसके अलावा गायों और बैलों को ले जाना अकसर उनके लिए बहुत दर्दनाक और पीड़ादायक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में वे बहुत बार घायल भी हो जाते हैं। चूंकि मालिक उनसे परिचित होता है इसलिए वो उन्हें आसानी से गौ– शाला पहुंचा सकते हैं बिना उनको मानसिक और शारीरिक चोट पहुंचाए। निगम द्वारा आवंटित गौशाला में साफ–सफाई बनाये रखें। गौशाला में ही गाय का दूध दुहें। गौशाला में रहने वाली गायों को निगम एवं नागरिकों की अनुमति के बिना गौशाला से बाहर नहीं ले जा सकें। गायों को रखने के दिशा–निर्देशों का सख्ती से पालन करें। गायों और बैलों के जन्म और मृत्यु का पंजीकरण करवाएं।

दयालु नागरिकों के कर्तव्य

(दयालु नागरिकों का प्रतिनिधित्व आरडब्ल्यूए/एओए या/और ऐसे निवासियों द्वारा किया जा सकता है जो अपने क्षेत्र में प्रतिदिन गायों और बैलों को खाना खिलाते हैं और उनकी देखभाल करते हैं) दयालु नागरिक गौशालाओं में रहने वाली गायों और बैलों को भोजन और पानी उपलब्ध करा सकते हैं। वे गौशालाओं की साफ–सफाई और स्वच्छता की निगरानी में निगम की सहायता कर सकते हैं। नागरिक चिकित्सा उपचार, भोजन और अन्य विविध खर्चों पर योगदान कर सकते हैं। नागरिक निगरानी कर सकते हैं कि मालिक दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन कर रहा है या नहीं, अन्यथा वे मालिक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने के लिए निगम को इसकी रिपोर्ट कर सकते हैं। गाय के गोबर, दूध और मूत्र का कैसे समाज में लाभकारी उपयोग हो उसके लिए भी मालिक के साथ मिलकर नये और कारगर विकल्प ढूंढ़ सकते हैं।

गाय हमारी माता है और उसमें 33 कोटी देवी देवताओं का वास होता है, लेकिन आज पांच सौ वर्ष से ज्यादा हो गए गोमाता का अपमान और शोषण होते हुए। भारत 1947 में आज़ाद तो हो गया लेकिन पश्चात्य मानस से आज भी प्रभावित है। भारत उस दिन आज़ाद माना जायेगा जिस दिन हर गली मोहल्ले में गौशालाएं होंगीं और गोमाता और नंदी को पूजा जायेगा। उनके आशीर्वाद से ही भारत समृद्धि और खुशहाली की ओर अग्रसर हो पायेगा।

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय गौवंश रक्षण–संवर्धन परिषद
विश्व हिन्दू परिषद, पंजाब प्रान्त

नवनीत शर्मा
प्रांत प्रमुख

कन्हैया लाल प्रोहित
प्रांत अध्यक्ष

विनय वशिष्ट
प्रांत मंत्री

जारी कर्ता:- गो रक्षा प्रांत समिति M. 73553-61135, 94171-73221

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

Neeraj Aggarwal
Prantiya Mantri, Delhi Prant
Mobile : 9312195397

Address : KC - 56, Sec. - 01, DSIDC Industrial Area, Bawana, Delhi - 110039

GUPTA INDUSTRIES
Manufacturer : Paper Glass, Paper Napkin, Paper Bowl, Pizza Box, Paper Plate and Dona Mob. - 9315036700

शारदा मेहता (स्वतंत्र लेखिका)

गोधन का धार्मिक वैज्ञानिक माहात्म्य

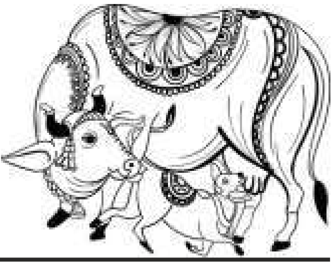

पुरातनकाल से ही गाय को अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है, जैसे गोमाता, धेनु, सुरभि, गऊ, गैया, गाय, पयस्विनी, भद्रा, रोहिणी, दोग्धा आदि। धार्मिक महत्व के अनुसार गाय पूजनीय है। दीपावली पर्व के पूर्व गोवत्सद्वादशी तथा दीपपर्व के पश्चात् गोवर्धन पूजा के दिन गोधन का पूजन किया जाता है। भारतीय घरों में प्रतिदिन गाय के लिये एक रोटी अवश्य निकाली जाती है।

पुरातनकाल से ही गाय को अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है, जैसे गोमाता, धेनु, सुरभि, गऊ, गैया, गाय, पयस्विनी, भद्रा, रोहिणी, दोग्धा आदि। धार्मिक महत्व के अनुसार गाय पूजनीय है। दीपावली पर्व के पूर्व गोवत्सद्वादशी तथा दीपपर्व के पश्चात् गोवर्धन पूजा के दिन गोधन का पूजन किया जाता है। भारतीय घरों में प्रतिदिन गाय के लिये एक रोटी अवश्य निकाली जाती है। गाय की स्वामिभक्ति की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। महर्षि वसिष्ठ की एक प्रसिद्ध गाय थी जिसका नाम शबला था। एक बार विश्वामित्र अपनी सेना तथा गाएँ लेकर वसिष्ठ जी के आश्रम में आए। वे सभी भूख और प्यास से व्याकुल थे। गुरु वसिष्ठजी ने उन सभी के लिए भोजन व्यवस्था करने के लिए सोचा। ऐसी परिस्थिति में शबला गाय ने बड़ी सूझ–बूझ के साथ सुस्वाद भोजन की व्यवस्था कर दी। सभी ने तृप्त होकर भोजन किया। शबला की स्वामिभक्ति देखकर विश्वामित्र जी ने वसिष्ठजी से शबला उन्हें देने का

आग्रह किया। जब वसिष्ठजी ने देने में असमर्थता व्यक्त की तो विश्वामित्रजी के सैनिक शबला को ले जाने लगे। शबला ने अपनी दिव्य शक्ति से अनेक सैनिक उपस्थित कर दिये और उन्होंने विश्वामित्र के सैनिक नष्ट कर दिये 'यह थी शबला गौ की स्वामिभक्ति'

इन सब के अतिरिक्त गाय का वैज्ञानिक महत्व भी है। गो–धन से प्राप्तः प्रत्येक वस्तु मानव जीवन में अति आवश्यक है।

दूध – गाय के दूध में प्रोटीन, विटामिन्स, कार्बेज मिनरल्स आदि पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं। मानव शरीर की हड्डियों को गाय के दूध से पर्याप्त में पोषण प्राप्त होता है। इसीलिये वर्तमान समय में चिकित्सक भी गो दुग्ध सेवन की सलाह देते हैं।

गोबर, गोमूत्र – वैज्ञानिक तथा चिकित्सकीय दृष्टि से लाभकारी है। ये पदार्थ वातावरण को शुद्ध करते हैं। गोमूत्र और गोबर चर्म रोग को नष्ट करने में सहायक हैं।

घी, दही और छाछ – गाय का घी कब्ज एसीडिटी, नकसीर आदि में औषधी के रूप में उपयोगी है। यह शक्तिवर्धक भी है! गाय के दूध से निर्मित दही प्रतिदिन सेवन करने से शरीर रोग मुक्त हो जाता है। दही से निर्मित पंचामृत 'दही, दूध, घी, शहद, शकर' एक बहुत ही स्वास्थ्य वर्धक पेय है। पूजन में इसका उपयोग किया जाता है। छाछ भी पाचक पेय है। उदर रोग में यह एक औषध है। इसमें भुना हुआ जीरा, सेंधा या काला नमक डाल कर ग्रहण किया जाता है। हवन में गाय के घी का उपयोग करने से प्राण वायु शुद्ध होती है। पर्यावरण दोष मुक्त हो जाता है।

चमड़ा – गाय का चमड़ा भी उपयोग में लिया जाता है। इससे पर्स खिलौने आदि निर्मित किये जाते हैं। इसके निर्माण से विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है। इतने उपयोगी प्राणी की देखभाल, उनका उचित स्वास्थ्य परीक्षण, उनके खाद्य पदार्थों जैसे घास खली, गुड़, बाटा की शुद्धता आदि पर भी पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय–समय पर उनकी गुणवत्ता पर ध्यान देना भी आवश्यक है। साधु–सन्तों तथा नगर निगमों द्वारा जो गौशालाएँ संचालित की जाती हैं, वहाँ भी चिकित्सकीय व्यवस्था उचित न होने से गंदगी पसरी रहती है। इस मातृस्वरूपा गौ के स्वास्थ्य पर ध्यान देने से इसकी महती सेवा होगी।

गोहत्या – गोधन पर अत्यधिक अत्याचार दृष्टिगत हो रहे हैं। प्रतिदिन अत्यधिक निरपराधी गायों को बूचड़खाने में तस्करी के माध्यम से भेजी जा रही हैं। यह एक अक्षम्य अपराध है। गोमाँस को अवैध रूप से डिब्बा–बन्द करके विदेशों में भेजा जाता है जिसके खिलाफ तत्काल सरकार द्वारा तस्करों के खिलाफ कार्यवाई की जानी चाहिए। यह अवैधानिक कृत्य है।

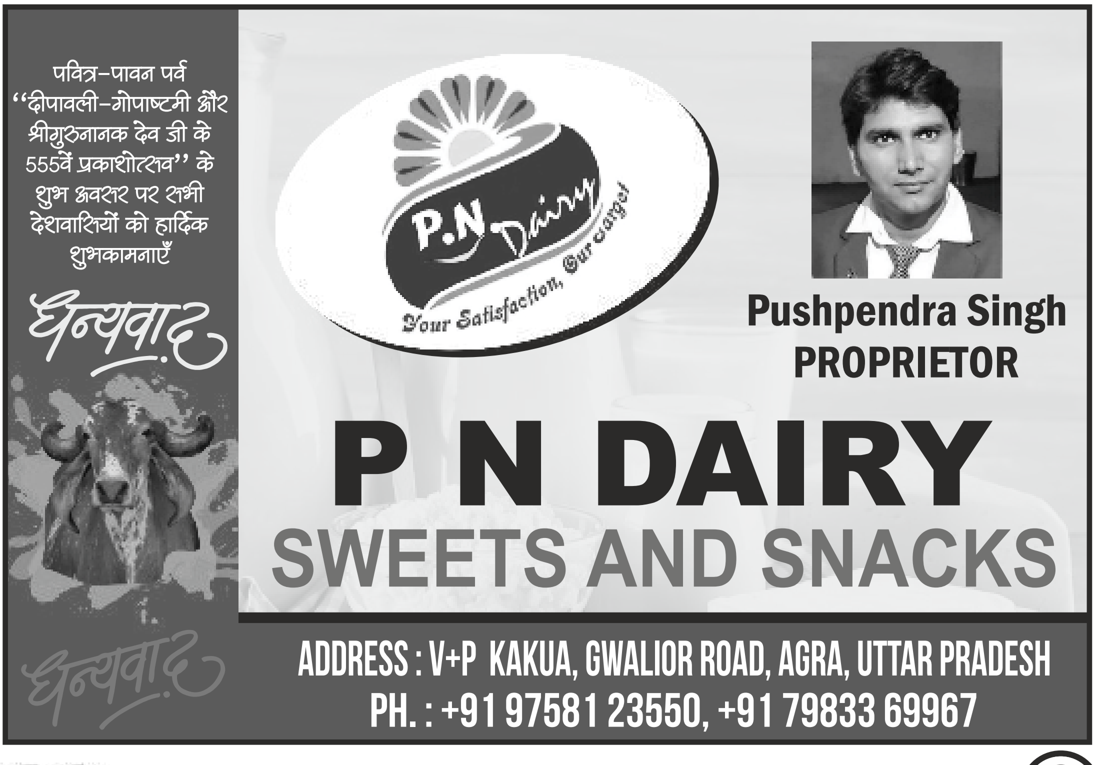

दु:ख ही सुख का मूल

दुःख भी ईश्वर का दुर्लभतम उपहार है। वह इसे उसे ही प्रदान करता है, जो उसका नितांत अपना है, जिसको वह तपा–तपा कर पारस बनाना चाहता है और मनुष्य के रूप में उसकी प्रतिभा, शक्ति, सामर्थ्य का भरपूर उपयोग कर उसके इस जीवन को श्रेष्ठतम बनाना चाहता है। जीवन की परीक्षाओं में वही श्रेष्ठतम होता है, जो अत्यंत श्रमशील होकर इस देह का भरपूर दोहन कर अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है। यह देह तो किसी विशेष कार्य के लिए उस ईश्वर से संविदा पर निर्धारित समय के लिए मिला हुआ एक घोड़ा है। इस देह रूपी घोड़े की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित होकर जिसने इसकी सेवाओं का श्रेष्ठतम उपयोग कर लिया, उसने इहलोक से परलोक तक का मार्ग सुधार लिया। वहीं जो इसमें असमर्थ हो गया वह ईश्वर के इस दुर्लभतम उपहार के सुफलों से कई जन्मों के लिए वंचित हो जाता है।

दुःखों के गहन जंगल के नीचे ही शाश्वत सुखों की उर्वरा–धरती कर्मशील व्यक्ति की आतुरता से प्रतीक्षा करती रहती है। ज्ञान का प्रवेश द्वार दैहिक दुःखों की वैतरणी पार कर ही खुलता है। इस दुःखों की वैतरणी को पार करने के दो ही मार्ग हैं–या तो शारीरिक श्रम की दृढ़ता एवं तैरने में प्रवीणता अथवा श्रेष्ठ एवं निपुण गुरु की कृपा से उसकी नाव में बैठकर उस पार हो जाना। उस पार के दिव्य लोक तक पहुंचने के लिए अन्य कोई मार्ग इस सृष्टि में सुलभ नहीं है।

अतः दुख संसार से बिदकने, रोने, रूठने अथवा अपने विगत के कर्मों पर पश्चाताप करने का उपकरण नहीं, बल्कि यह तो एक दुर्लभतम अनुज्ञा (परमिट) पत्र है देवत्व और ईश्वर कृपा का सान्निध्य, दर्शन तथा सत्संग पाने का। उसके निकट या कृपा प्रासाद में वही प्रविष्ट कर सकता है, जिसके पास यह अनुज्ञा पत्र प्राप्त हो अथवा जिसने इस दुर्लभ जीवन में गहन तप, जप और साधना की हो। इस तरह हम प्रभु का सान्निध्य प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। सच ही कहा गया है दुःख ही सुख का मूल है।

– सोशल मीडिया

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

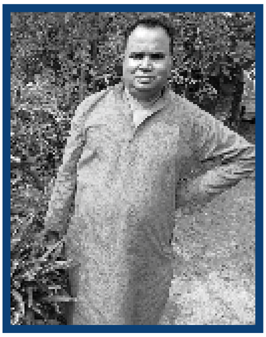

हरिशंकर मौर्य

(अधिवक्ता) हाईकोर्ट इलाहाबाद, लखनऊ बेंच

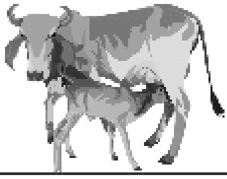

- 100 बीघा भूमि पर गौशाला की स्थापना।
- 40 बीघा भूमि पर गौशाला स्थापना, मंदिर स्थापना, अस्पताल स्थापना,
- गौमाता के लिए चरही एवं नांद प्रत्येक गौमाता के लिए प्रथक-प्रथक स्थापित होंगी।
- 30 बीघा भूमि पर गौमाता के लिए चारा ।

पवित्र-पावन पर्व ''दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

MR. SARWAN KUMAR GARG JI

Chairman

Gosewa Ayog, Haryana

House no. 738, Sector-12A, Panchkula-134118 (HARYANA)Mob-09315865500

पवित्र-पावन पर्व ''दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

किशोर वाटलिया

सह प्रमुख, गोरक्षा विभाग, उत्तर गुजरात प्रांत

मो. 7567849349

AALPHA GIR GAY GAUSHALA, NR. KARNAVATI EYES HOSPITAL -OGNAJ -KARNAVTI -GUJARAT

शशांक शेखर

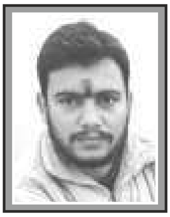

गोवंश रक्षार्थ कानून (संशोधित)

अभी तक केंद्रीय स्तर पर कौन-कौन से कानून हैं, जो गोमाता की सुरक्षा के लिए हमारे कार्यकर्ताओं के लिए काफी उपयोगी साबित हो सकते हैं। देश भर में हमारे कार्यकर्ता गोवंशों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं और दिनरात गोवंशों को तस्करों के चंगुल से छुड़ाने के लिए प्राणों की बाजी लगाकर काम करते हैं, परन्तु उचित कानूनी जागरूकता के आभाव में उनका प्रयास अकसर विफल हो जाता है, खासकर ऐसे राज्यों में जहाँ गोरक्षा के लिए कठोर कानूनों का आभाव है वहां न्यायिक प्रक्रिया में कार्यकर्ताओं को विफलता हाथ लगती है।

गोचर भूमि, हमारी गौपालक-गोपालन संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और यह भूमि हमारे पूर्वजों के द्वारा गोवंशों के चारण के लिए समर्पित की गई थी। भारत में लाखों गोवंशों की देखभाल और संरक्षण के लिए समर्पित गौशालाएं भी इस संस्कृति का हिस्सा हैं। इन गौशालाओं के लिए पूर्वकाल में बड़ी मात्रा में भूमि समर्पित की गई थी ताकि गोवंशों को चारा, पानी और अन्य आवश्यकताओं में कोई कमी न हो। लेकिन वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि गौशालाओं और गोवंशों की स्थिति काफी बिगड़ चुकी है। इसका मुख्य कारण है गोचर भूमि का अतिक्रमण और उसके उपयोग का स्वरूप बदलना। कई स्थानों पर गोचर भूमि पर व्यावसायिक केंद्र, आवासीय कॉलोनियां और अन्य निर्माण कार्य किए जा रहे हैं, जो कि माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशों के विपरीत हैं।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

माननीय उच्चतम न्यायालय ने गोचर भूमि के उपयोग में बदलाव को केवल और केवल आपवादिक परिस्थितियों में ही अनुमति दी है, और इसके लिए ग्राम सभा का प्रस्ताव और मुखिया/ग्राम प्रधान की अनुमति आवश्यक है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि गोचर भूमि पर कोई अवैध कब्जा न हो और उसका उपयोग गोवंश पालन के लिए ही हो।

अब यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम गोचर भूमि को संरक्षित करें और गोवंशों के लिए इसे उपलब्ध कराएं। इसके लिए हम सूचना के अधिकार (RTI) अधिनियम का उपयोग कर सकते हैं और क्षेत्रीय स्तर पर यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि कितनी भूमि गोचर भूमि के रूप में छोड़ी गई है और कितनी भूमि गौशालाओं को दी गई है। इसके बाद हम भूमि की वास्तविक स्थिति, लोकेशन और स्थिति की

जानकारी एकत्रित करके संबंधित अधिकारियों जैसे अंचलाधिकारी, तहसीलदार, अनुमंडल अधिकारी, कलेक्टर या उपायुक्त को पत्र लिख सकते हैं और अतिक्रमण को हटाने की मांग कर सकते हैं।

यदि अधिकारियों द्वारा हमारे आवेदन पर कोई संज्ञान नहीं लिया जाता है तो हम सीधे माननीय उच्च न्यायालय में रिट याचिका दाखिल कर सकते हैं और गोचर भूमि पर किए गए अतिक्रमण को हटवाने की कार्रवाई कर सकते हैं। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण उदाहरण है–जगपाल सिंह बनाम पंजाब राज्य (Civil Appeal No–1132/2011 / SLP (Civil) No–3109/2011), जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकारों को आदेश दिया था कि गोचर भूमि पर अवैध कब्जे को खाली किया जाए और भूमि को गौशाला के लिए पुनः समर्पित किया जाए।

जहां गोचर भूमि नहीं है, वहां हम उपायुक्त या कलेक्टर को आवेदन देकर सरकारी खाली पड़ी भूमि, जो गौचारण के लिए उपयुक्त हो, उसे गोचर भूमि के रूप में नोटिफाई कराने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रकार, यह हम सभी की जिम्मेदारी बनती है कि हम गोवंशों के संरक्षण के लिए गोचर भूमि को सुरक्षित रखें और उसके उपयोग को सुनिश्चित करें।

हमारे समाज में गोपालन की संस्कृति को पुनः स्थापित करना और गोवंशों के लिए उचित पर्यावरण सुनिश्चित करना केवल एक कानूनी और प्रशासनिक कार्य नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। हम यदि इस दिशा में सक्रिय रूप से काम करते हैं तो न केवल गोवंशों को संरक्षण मिलेगा, बल्कि यह हमारी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी को भी दर्शाता है। हमें अपनी गौपालक–गोपालन संस्कृति को संरक्षित करने और गौशालाओं के लिए समर्पित भूमि के अतिक्रमण को हटाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए, ताकि हमारे भविष्य की पीढ़ी भी इस महान परंपरा को जीवित रख सके

गोरक्षा सम्बन्धी कुछ नए प्रावधान और न्यायिक निर्णय

भारत वर्ष में गोवंश को अत्यंत पूज्य और अघ्न्य माना गया है, क्योंकि हमारी सनातन संस्कृति में गीता, गंगा और गाय को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। ये तीनों तत्व न केवल हमारी धार्मिक परंपराओं का प्रतीक हैं, बल्कि हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मूल आधार भी हैं। गाय को हम माता के रूप में सम्मानित करते हैं और इस सम्मान का गहरा संबंध हमारे जीवन से जुड़ी हर एक परंपरा से है। यही कारण है कि भारत में गोवंश को लेकर हमेशा विशेष ध्यान और सहेजने का प्रयास किया गया है। इतिहास में एक समय ऐसा था जब ब्रिटिश साम्राज्य के द्वारा गोवंशों की चर्बी का उपयोग कारतूसों में किया गया था और यही बात हमारे स्वतंत्रता संग्राम का एक कारण बनी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने गोवंशों की रक्षा के लिए संघर्ष किया और उनका सपना था कि स्वतंत्र भारत एक ऐसा देश बने, जहाँ गोवंश हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध हो और गाय–गोवंश बिना भय के विचरण कर सकें। महात्मा गांधी ने भी इस बात का संकल्प लिया था कि स्वतंत्रता के बाद कलम की पहली नोंक से गोवंश हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा और भारतमाता के माथे से यह कलंक हमेशा के लिए मिटा दिया जाएगा।

लेकिन दुर्भाग्यवश, यह सपना जल्दी ही धराशायी होता दिखा और सांप्रदायिक विद्वेष के कारण हमारा देश बंट गया। संविधान निर्माण के समय महात्मा गांधी का यह स्वप्न पूरा नहीं हो पाया और गोवंशों की सुरक्षा संविधान में नीति निर्देशक सिद्धांतों के रूप में तो आई, लेकिन इसे कानूनी रूप से लागू करने के लिए सरकार को बाध्य नहीं किया जा सकता था। इसके बावजूद, हमारे संत–महात्माओं और आन्दोलनकारियों ने गोमाता–गोवंश की रक्षा के लिए कई कड़े कदम उठाए और सरकार को गोरक्षा के लिए कानून बनाने पर विवश किया। लेकिन आज भी भारत की पूरी भूमि गोहत्या के पाप से मुक्त नहीं हो पाई है। हम आज भी एक केन्द्रीय गोरक्षा कानून का इंतजार कर रहे हैं।

हालाँकि, तकनीकी दृष्टिकोण से देखा जाए तो गोरक्षा संबंधित विषय **"पशु संरक्षण, संरक्षण और सुधार" के अंतर्गत राज्य सूची का विषय है,** और इस पर राज्य सरकार को कानून बनाने का अधिकार है। लेकिन भारतीय संविधान के अनुच्छेद 48 के अनुसार, राज्य की जिम्मेदारी है कि वह गाय और बछड़ों की हत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून बनाए। यही नहीं, सर्वोच्च न्यायालय ने भी गुजरात राज्य बनाम मिर्जापुर मोती कुरैसी केस (AIR 2006 SC 212) में यह माना कि राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का पालन करते हुए गोवंशों की रक्षा के लिए कानून बनाना राज्य का मौलिक दायित्व है और यह नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों के समान ही महत्वपूर्ण है।

अब यदि केंद्र सरकार इस दिशा में कदम बढ़ाए और गोवंशों की रक्षा के लिए कानून बनाए तो यह एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा। इसके लिए वह तकनीकी रूप से सक्षम हो सकती है और यह कानून न केवल गोवंशों की सुरक्षा करेगा, बल्कि हमारी सनातन संस्कृति और परंपराओं को भी पुनः स्थापित करेगा। हमारे देश भर में कार्यकर्ता गोवंशों की रक्षा के लिए दिन–रात संघर्ष कर रहे हैं, जान की बाजी लगाकर तस्करों से गोवंशों को छुड़ाने का काम कर रहे हैं। लेकिन अकसर उचित कानूनी जागरूकता की कमी के कारण, उनका प्रयास विफल हो जाता है। विशेषकर उन राज्यों में जहाँ गोरक्षा के लिए कठोर कानूनों का अभाव है। न्यायिक प्रक्रिया में भी कार्यकर्ताओं को कई बार असफलता मिलती है, क्योंकि यहाँ के न्यायिक अधिकारियों, अभियोजन अधिकारियों और पुलिस प्रशासन तक को गोवंशों की सुरक्षा संबंधी कानूनों का ज्ञान नहीं है।

यह समय की आवश्यकता है कि हम सभी कार्यकर्ता इस मुद्दे पर जागरूक हों और कानूनी अधिकारों की शक्ति से गोवंशों की रक्षा के लिए संघर्ष करें। इसके लिए हमें उन केंद्रीय कानूनों और नियमों का ज्ञान होना चाहिए, जो गोवंशों की रक्षा करते हैं। यदि हम इन कानूनों को सही ढंग से समझें और उनका उपयोग करें तो हम गोमाता–गोवंश की रक्षा कर सकते हैं। भारत में गोवंशों के संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण केंद्रीय कानून हैं, जैसे–पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960, पशु संरक्षण विधेयक और गोहत्या निषेध अधिनियम, जिनका

पालन सुनिश्चित करने के लिए कार्यकर्ताओं को जागरूक होने की जरूरत है। इन कानूनों के प्रति जागरूकता कार्यकर्ताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि वे न्यायिक प्रक्रिया के द्वारा गोमाता–गोवंश की रक्षा कर सकें। गोवंशों की रक्षा सिर्फ एक कानूनी मुद्दा नहीं है, यह हमारी संस्कृति और सभ्यता का सवाल है। हम सभी को मिलकर इस मुद्दे पर काम करना होगा, ताकि हमारे देश में गोवंशों की सुरक्षा हो सके और हमारी सनातन संस्कृति का सम्मान बना रहे। इस दिशा में हर कार्यकर्ता का योगदान अनमोल है और जब तक हम एकजुट होकर इस प्रयास को आगे बढ़ाते रहेंगे तब तक हमारी गोमाता–गोवंश की रक्षा सुनिश्चित रहेगी। मैं पूरे भारत में पशु रक्षा सम्बन्धी कुछ केन्द्रीय कानून एवं उससे सम्बंधित तकनीकी बातों की जानकारी इस आलेख में प्रस्तुत कर रहा हूँ ताकि पाठकों को कानूनी पहलुओं की जानकारी मिले जिससे गोमाता के संरक्षण के कार्यों में उन्हें सहायता मिलेगी, जोकि निम्नलिखित हैं :–

भारत का संविधान, पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960,पशु अतिचार अधिनियम 1871, एवं भारतीय न्याय संहिता 2024, पशु परिवहन नियम 1978, पशुओं के पांव से परिवहन सम्बन्धी नियम 2001 के साथ–साथ नरेन्द्र मोदी सरकार के द्वारा पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत पशु क्रूरता निवारण (केस विषयक पशुओं की देख–रेख सम्बन्धी) नियम 2017, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाज़ार विनियमन) नियम 2017, केन्द्रीय मोटर वाहन नियम 1989 यथा संशोधित 2016 नियम 125 E के साथ–साथ देश के विभिन्न उच्च न्यायालयों एवं उच्चतम न्यायालय के द्वारा समय–समय पर निर्णित वाद विनिश्चय आदि।

प्रायः देखा जाता है कि ट्रकों में गोमाता–गोवंश को बेरहमी से भरकर ट्रक को पूरी तरह से ढंककर, उनकी पूंछ नाक और सींघों को एक छोटी रस्सी से बांधकर बिलकुल अमानवीय दशा में परिवहन कर कत्लखाने भेजा जाता है, जो कि प्रायः पशु परिवहन नियम 1978 प्रावधानों का घोर उल्लंघन है। उक्त नियम के अनुसार पशुओं के परिवहन का कुछ मानक है जो कि निम्नवत है। पशु परिवहन नियम 1978 का नियम 56 के अनुसार यह देखना चाहिए कि क्या?

- ❖ वाहन पशु परिवहन के लिए उपयुक्त है या नहीं? इसके अलावा वाहन की अंदरूनी सतह गैर–फिसलन वाली चटाई से ढंकी होनी चाहिए

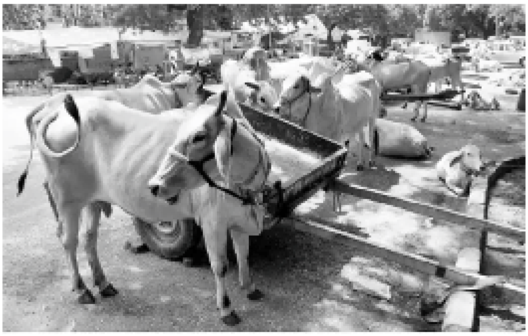

- ❖ पशु–परिवहन करने हेतु सामान्य वाहन के अंदर की चारों तरफ की सतहें गद्देदार होना आवश्यक हैं तथा वाहन का निचली सतह फिसलन से मुक्त होनी चाहिए
- ❖ किसी भी बड़े ट्रक में 6 से अधिक पशुओं का परिवहन नहीं किया जा सकता
- ❖ वाहन पर पशुओं के परिवहन करते वक्त किसी भी तरह का अन्य माल नहीं ढोया जा सकता है
- ❖ गोवंशों का मुंह इंजन की तरफ होना चाहिए
- ❖ इसके अलावा परिवाहक के पास इस आशय का चिकित्सीय प्रमाण पत्र होना चाहिए की पशु परिवहन के लिए उपयुक्त हैं
- ❖ साथ ही वाहन पर बड़े–बड़े बोल्ड अक्षर में लिखा होना चाहिए कि वाहन के अंदर कितने गोवंश हैं तथा कहां से कहां ले जाये जा रहे हैं
- ❖ वाहन पर प्राथमिक उपचार तथा पशुओं के भोजन पानी का पर्याप्त इंतजाम होना चाहिए
- ❖ वाहन पर बीमार पशुओं का परिवहन नहीं किया जा सकता, बड़े और छोटे पशुओं को एक साथ परिवहन नहीं किया जा सकता है साथ ही साथ गर्भवती गोमाताओं को सामान्य पशुओं से अलग परिवहन करने का नियम है

साथ ही साथ केन्द्रीय मोटर वाहन नियम 1989 यथा संशोधित 2016 नियम 125 E जो कि नए संशोधनों के साथ आई है कि पशु (live stock) को ढोने के लिए वाहनों का अलग से परमिट लेना पड़ेगा, अगर कोई भी वहां इसका उल्लंघन करेगा तो उसकी परमिट रद्द कर दी जाएगी, साथ ही पशु परिवन नियम 1978 यथा संशोधित 2001 के नियम 97 के अनुसार जीव जंतु कल्याण बोर्ड के द्वारा अधिकृत कोई भी पशु कल्याण संगठन ऐसे वाहन के अनुज्ञप्ति रद्द करने के लिए सम्बंधित क्षेत्राधिकार वाले परिवहन विभाग को लिख सकता है और तब तक नियम 97(2) के अनुसार वाहन पर से उतारे गए गोवंशों की अभिरक्षा न्यायालय के आदेश आने तक तत्काल किसी पशु कल्याण संगठन को दिया जायेगा। इसके अलावा कभी–कभी कार्यकर्ताओं के समक्ष यह भी समस्या आती है कि गोवंश हजारों की संख्या में पैदल तस्करी करके ले जाए जाते हैं। ऐसे में उन्हें कैसे जब्त करवाया जा सके, तो इसके लिए हमें पशुओं के पांव से परिवहन सम्बन्धी नियम 2001 को देखना चाहिए जिसके अनुसार –

- ✓ नवजात बच्चे और रुग्ण पशुओं का परिवहन नहीं किया जाना चाहिए
- ✓ पैदल ले जाए जाने वाले पशुओं के साथ प्राथमिक उपचार की व्यवस्था होनी चाहिए
- ✓ पशुओं को एक बार में 5 किलोमीटर से ज्यादा पैदल नहीं चलाया जा सकता
- ✓ पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रमाणपत्र पशु स्वामी को साथ लेकर चलना होगा
- ✓ पशुओं को सूर्योदय के पहले तथा सूर्यास्त के बाद नहीं चलाया जा सकता है

✓ पशुओं के लिए पर्याप्त चारा पानी तथा ठहराने का प्रबंध भी होना चाहिए

अगर कोई भी व्यक्ति उपरोक्त प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए गोवंशों का परिवहन करता है तो उसके ऊपर पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 की धारा 11 के तहत मुक़दमा दर्ज कराकर गोवंशों को जब्त करवाना चाहिए, परन्तु कार्यकर्ता इस बात का विशेष ध्यान रखें की पशुओं के प्रति क्रूरता का मसला प्रमुखता से उभरकर प्रथिमिकी में आये तभी हम गोवंशों की न्यायिक प्रक्रिया के द्वारा जान बचा सकते हैं।

प्राथमिकी, प्रक्रिया एवं गोवंशों के पुनर्वास सम्बन्धी प्रावधान

पशु अधिकारों के लिए काम करने वाले कार्यकर्ता इस बात का भरपूर प्रयास करें कि गोवंशों की तस्करी का मसला जैसे ही उनके संज्ञान में आये तत्काल नजदीकी थाने में उसकी सुचना दें, यदि थानेदार कार्रवाई नहीं करता तो तुरंत वरिष्ठ पदाधिकारी को सूचना देते हुए साथ–साथ में कंट्रोल रूम को जो प्रायः सभी स्थान पर 112 नंबर होता है को डायल कर सूचना दें तथा अधिकारियों की निष्क्रियता के बारे में भी अवगत कराएँ, परन्तु किसी भी स्थिति में कानून व्यवस्था को अपने हाथ में न लें। साथ ही यदि वाहन कार्यकर्ताओं के द्वारा रोका जाता है तो वाहन तस्करों और गोवंशों को नजदीकी पुलिस चौकी इंचार्ज को सौप दें और अपने नाम से मुक़दमा दर्ज कराएँ तथा ऐसे ही गवाह भी बनें ताकि न्यायालय में गोवंशों की तरफ से अपना पक्ष रखने का अधिकार बना रहे। इस बात का भी ध्यान रहे की प्राथमिकी में अतिशय क्रूरता की बात आये साथ ही यह भी बात आनी चाहिए कि गोवंश हत्या के उद्देश्य से ले जाए जा रहे थे तथा प्राथमिकी में गोवंशों के क्रूरता पूर्वक परिवहन के मामले में यह भी बात प्राथमिकी में आनी चाहिए कि गोवंश इस प्रकार अमानवीय परिवहन के कारण अंदरूनी चोट तथा अगर बाहर कोई चोट लगी हो तो वह बात भी प्रमुखता से आनी चाहिए ताकि भारतीय न्याय संहिता की भी धाराएँ उसमें लगायी जा सकें। साथ ही वहां पर लादे गए गोवंशों के स्वामित्व सम्बन्धी कागजात भी न दिखाये जाने पर प्राथमिकी में इस बात की भी चर्चा करें कि गोवंश चोरी कर हत्या के उद्देश्य से क्रूरतापूर्वक ले जाए जा रहे थे तथा यह भी चर्चा करें कि गोवंशों की तस्करी पशु तस्करी में शामिल आदतन अपराधियों के द्वारा की जा रही थी, जिनका काम चोरी के गोवंशों को हत्या के उद्देश्य से राज्य से बाहर तस्करी करना है, ताकि तस्करों के ऊपर भारतीय न्याय संहिता की धारा 281,303,317(4),317(5) एवं 61(2) आदि गैरजमानतीय धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई की जा सके। अगर बड़े ट्रक में ले जाए जा रहे हों या राज्यों की सीमा पर पकडे गए हों तो पशु तस्करी की बात भी प्राथमिकी में लिखवानी चाहिए ताकि उस राज्य के कानून के अनुसार कठोरतम कार्रवाई पशु तस्कारों पर करायी जा सके।

पशु क्रूरता निवारण (केस विषयक पशुओं की देखरेख सम्बन्धी) नियम 2017

केंद्र सरकार ने वर्ष 2017 में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 की धारा 38 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए 23

मई 2017 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर उपरोक्त नियम को देश भर में लागू कर दिया। इस नियम में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अंतर्गत जब्त किये गए पशुओं की मुक़दमा लंबित रहने के अभिरक्षा तथा भरण पोषण सम्बन्धी बड़े ही प्रभावशाली प्रावधान किये गए हैं इस नियम के लागू होने के बाद पशु के वैध स्वामी को भी मुक़दमा लंबित रहने के दौरान पशु लौटाए नहीं जा सकते तथा तब तक पशुओं को नजदीक के किसी रुग्णवास, पिंजरापोल, एस पी सी ए पशु कल्याण संगठन या गोशाला की अभिरक्षा में ही दिया जा सकेगा तथा अभिरक्षा के पूर्व पशुओं का स्वस्थ्य परीक्षण एवं चिन्हांकन उस क्षेत्र के सरकारी पशु चिकित्सा अधिकारी से करवाया जायेगा। इतना ही नहीं, इस नियम के नियम 5 के अनुसार जब तक जब्त पशु ऐसे संगठन की अभिरक्षा में रहेंगे उनके भरण पोषण का पूरा खर्च अभियुक्त स्वामी तथा अन्य अभियुक्त मिलकर वहां करेंगे तथा न्यायालय के संतुष्टि के लिए युक्तियुक्त मूल्य का बंधपत्र निष्पादित करेंगे, जिन्हें हरेक 15 दिन पर आहरित किया जा सकेगा एवं बंधपत्र की राशि का 80 प्रतिशत व्यय हो जाने पर अतिरिक्त मूल्य का बंध पत्र का निष्पादन अभियुक्तों के द्वारा किया जा सकेगा।

अगर अभियुक्त स्वामी न्यायालय के आदेश के बाद भी तीन दिन तक ऐसे बंधपत्र का निष्पादन नहीं करता है तो जब्त पशु हमेशा के लिए उस संगठन के पक्ष में समपहृत हो जायेंगे जिनके पास पशुओं की अभिरक्षा दी गयी हैं अर्थात अभियुक्त हमेशा के लिए पशुओं पर से स्वामित्व का अधिकार खो देगा। इस नियम के नियम 8 के अनुसार यदि अभियुक्त पशुओं के प्रति क्रूरता का दोषी पाया जाता है तब भी उसके पशु हमेशा के लिए जब्त हो जायेंगे। पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 की धारा 29 पहले भी न्यायालय को यह विवेकाधिकार देती थी कि दोषी अभियुक्तों को उनके पशुओं के स्वामित्व से उन्हें वंचित कर सके, परन्तु नए नियम आने के बाद न्यायालय का पद मामलों में विवेकाधिकार समाप्त कर वदिया गया है तथा एक बार जब्त कर लिए जाने पर पशुओं को उनके स्वामी को भी तब तक नहीं लौटाया जा सकता जब तक की वे विचरण के बाद न्ययायालय द्वारा दोषमुक्त न हो जाएँ जो कि सर्वथा एक कठिन काम है।

हमारे गौरक्षक कार्यकर्ताओं को चाहिए कि गोवंशों को जब्त करवाने के बाद न्यायालय में उपरोक्त नियम के नियम 3,4,5 तथा 8 के तहत आवेदन लगाकर अभियुक्तों के द्वारा गोवंशों की मुक्ति के लिए लगाये गए आवेदन का विरोध अभियोजन अधिकारी (सरकारी वकील) की सहायत से या अपने खुद के वकील के माध्यम से करें तथा गौशाला को भरण पोषण का खर्च अभियुक्तों के द्वारा वसूल कर दें ताकि गौशाला में गोमाता–गोवंश का समुचित भरण–पोषण हो सके। इतना ही नहीं यदि मामले में कोई वहां भी जब्त हुआ हो तो वाहन को इस नियम 5(4)एवं (5) के तहत नीलामी करके भरण–पोषण का खर्च वसूलने का प्रावधान कर दिया गया है।

महत्वपूर्ण न्यायिक निर्णय

व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 का दांडिक प्रावधान काफी कमजोर है, ऐसे में तस्करों को कानून का भय नहीं होता तथा यहाँ की न्याय प्रक्रिया में इतने छिद्र हैं कि वे लोग इसका अनावश्यक लाभ उठा लेते हैं। हमारे देश के उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय ने कई ऐसे न्याय–निर्णय दिए हैं कि जो पशु कल्याण के क्षेत्रों में मील की पत्थर साबित हुए हैं। प्रत्येक पशु कल्याण कार्यकर्ता तथा गौरक्षकों को इन निर्णयों को कंठस्त कर लेना चाहिए क्योंकि ये निर्णय ही गोवंशो के लिए एक बड़े संबल हैं जो पशु अधिकार के क्षेत्र में मील के पत्थर साबित हुए हैं।

पशु अधिकार कार्यकर्ताओं या स्वैच्छिक संगठनो को सुने जाने का अधिकार (LOCUS STANDI)

locus standi एक तकनीकी मामला है प्रायः यह देखा जाता है कि पुलिस यदि खुद कार्रवाई करते हुए गोवंशों को जब्त करती है तो ऐसे में पशु पहले गोशाला पहुंचा दिए जाते हैं, परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् तस्कर न्यायालय से मुक्ति आदेश ले आते हैं और मजबूरन गोवंशों को मुक्त करना पड़ता है और व्यावहारिक रूप में गोवंश पुनः तस्करों के हाथ में जाकर उनकी हत्या कर दी जाती है। अभियोजन पक्ष मामले को ठीक ढंग से नहीं रख पाता अगर अपने कार्यकर्ता या गौशाला के प्रतिनिधि न्यायालय में गोवंशों के सुरक्षार्थ कुछ पक्ष रखना भी चाहते हैं तो तकनीकी रूप से वे रख नहीं पाते क्योंकि आपराधिक मामले में एक तरफ सरकार जिसका पक्ष अभियोजन अधिकारी (सरकारी वकील) रखता है तो दूसरी ओर खुद अभियुक्त जिसने की पशुओं के साथ अत्याचार किया हुआ होता है और हम पशु कल्याण कार्यकर्ता या गोरक्षक तकनीकी रूप से तृतीय पक्षकार (third party) होते हैं और दंड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 301 के अनुसार तृतीय पक्ष को आपराधिक मामले में पक्ष रखने का कोई अधिकार नहीं होता। परन्तु माननीय उच्च न्यायलय इलाहाबाद ने बाल गंगाधर त्रिपाठी बनाम उत्तर प्रदेश राज्य निर्णय तिथि 19 जनवरी 1996 में माननीय उच्च न्यायालय ने बालगंगाधर त्रिपाठी भारतीय गोवंश संरक्षण संवर्धन परिषद् के कार्यकर्ता थे तथा उन्होंने गोवंशों की मुक्ति सम्बन्धी मामले में सत्र न्यायालय में आवेदन देकर सुनवाई का अवसर देने की मांग की थी, परन्तु उनके आवेदन को सत्र न्यायालय के द्वारा खारिज कर दिया गया था। मामले को उन्होंने माननीय उच्च न्यायालय में सत्र नयायालय के आदेश को चुनौती दी जिस पर बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए कहा गया गया था कि "पशु राष्ट्र की सम्पदा हैं तथा यह राज्य का दायित्व है की उनकी रक्षा करे और यदि कोई तृतीय पक्ष सरकार के इस काम में पशुओं की रक्षार्थ उनकी मदद करने आता है तो उसको सुनवाई के अधिकार से वंचित करना अन्यायपूर्ण होगा। अतः यद्यपि आपराधिक विधि के सिद्धांत अनुमति नहीं देते, फिर भी पशु रक्षा के मामले में स्वैच्छिक संगठनों को सुनवाई के अधिकार हैं।

उसी तरह माननीय पटना उच्च न्यायालय ने भारतीय गोवंश संरक्षण संवर्धन परिषद् के बिहार के कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्र सिंह के आवेदन पर सरदार खान बनाम बिहार राज्य वगैरह CR- MISC NO–47517/2013 में माननीय उच्च न्यायालय ने एक कदम आगे बढ़कर यह निर्णय दे दिया कि पशु संरक्षण के मामले में "मामले से अनजान व्यक्ति को भी भारत के नागरिक होने के नाते यह अधिकार है कि पशुओं के क्रूरता के बचाव के लिए सभी संभव कानूनी मदद ले। साथ ही यह भी बताया की इन मामलो पशु ही वास्तविक पीड़ित होते हैं जिन्हें अपना पक्ष रखने का अधिकार है परन्तु दुर्भाग्यवश वे मूक होते हैं ऐसे में पशु कल्याण कार्यकर्ता उनका पक्ष रखने के कारण पीड़ित की परिभाषा में आते हैं अतः पशु संरक्षण के मामले में उन्हें सुनना आवश्यक है।

संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्रदत्त जीवन का अधिकार पशुओं को भी

माननीय उच्च न्यायालय ने जीव जंतु कल्याण बोर्ड बनाम ए नागराजा 7 मई 2014 के वाद में कई विशेष अनुमति याचिकाओं की एक साथ सुनवाई करते हुए के एस राधाकृष्णन एवं पिनाकी चन्द्र घोष की बेंच ने संविधान के अनुच्छेद 21 का उदार निर्वचन करते हुए इसे पशुओं तक के लिए उपलब्ध करा दिया। जिसके परिणाम स्वरुप किसी भी भारत के नागरिक को यह अधिकार हो गया की वह सीधे उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में गोवंशों एवं किसी भी पशुओं के इस मूलाधिकार के प्रवर्तन के लिए याचिका दायर कर सकता है। पशु क्रूरता निवारण (केस विषयक पशुओं के देख रेख सम्बन्धी) नियम 2017 के आलोक में ही पशुओं के अभिरक्षा एवं संलिप्त वाहनों के मुक्ति सम्बंधित विवादों का निपटारा – माननीय उच्चतम न्यायलय ने अखिल भारत कृषि गौसेवा संघ बनाम भारत संघ WP(C)NO–210/15 निर्णय तिथि 4 अगस्त 2017 एवं तीर्थ कुमार साहू एवं अन्य बनाम सैय्यद शमीम कादरी एवं अन्य SPECIAL LEAVE PETITION (CRIMINAL) DIARY NUMBER–21489/2019 निर्णय तिथि 5 जुलाई 2019 के मामले में माननीय उच्चतम न्यायलय ने उपरोक्त नियम की मान्यता देते हुए यह निर्धारित किया की पशुओं की अभिरक्षा, निष्पादन एवं वाहन के मुक्ति सम्बन्धी निर्णय लेते समय न्यायलय आवश्यक रूप से इनके प्रावधानों को ध्यान में रखेगा और उड़ीसा उच्च न्यायालय ने जीब बिकास परिषद् बनाम उड़ीसा राज्य एवं अन्य CRL MC No-199 of 2021 AND CRL MC No&828, 215, 219, 220, 740&780 of 2021 के मामले में माननीय उड़ीसा उच्च नयायालय ने 21 अक्तूबर 2021 को तीर्थो कुमार

साहू वाले निर्णय का हवाला देते हुए पशु क्रूरता निवारण (केस विषयक पशुओं के देख रेख सम्बन्धी) नियम 2017 के प्रावधानों का अनुपालन करना आवश्यक बताया तथा वाहन मुक्ति के आदेश को निरस्त कर दिया और वाहन मुक्ति के आदेश के निचले अदालत के फैसले को निरस्त कर दिया।

मामला लंबित रहने के दौरान पशुओं को स्वामी के पक्ष में भी मुक्त नहीं किया जा सकता

उत्तर प्रदेश राज्य बनाम मुस्तकीम एवं अन्य CRIMINAL APPEAL NO–282–287/ 2002 [2002(2) JIC 911 (SC), इस मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को अपास्त करते हुए यह आश्चर्य व्यक्त किया था कि कैसे एक उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति के द्वारा इस प्रकार का आदेश पारित किया जा सकता है तथा यह निर्णय दिया था कि जब तक अभियुक्तों के खिलाफ निचली अदालत में मामला विचरण में है तब तक पशुओं को गौशाला में ही रखा जायेगा एवं राज्य सरकार उनके भरण–पोषण सहित सम्पूर्ण दायित्व का निर्वहन करेगी। इस प्रकार अन्य कई संवेदनशील निर्णय भारत के उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायलय के द्वारा निर्णीत किये गए हैं। कार्यकर्ता किसी भी विशेष परिस्थितियों में हमारे विशेषज्ञ एवं संगठन के दयित्ववान अधिवक्ताओं की राय ले सकते हैं।

जब्त वाहन के स्वामी से वसूली जाएगी जब्त गोवंश के भरण–पोषण की राशि

पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के अंतर्गत पशुओं की देखभाल और भरण–पोषण से संबंधित विशेष नियम 2017 में जप्त किए गए गोवंशों की देखभाल और भरण–पोषण का स्पष्ट प्रावधान है। पशु क्रूरता निवारण केस विषयक पशुओं के भरण–पोषण सम्बन्धी नियम 2017 के नियम में यह निर्धारित किया गया है कि यदि कोई पशु अवैध तरीके से परिवहन किया जाता है और उसे जप्त कर लिया जाता है तो उसे

गौशाला या अन्य पशु कल्याण गृह में रखा जाएगा। इस संबंध में नियम 5(5) के अनुसार, जप्त किए गए गोवंशों के भरण–पोषण के लिए सभी संबंधित पक्षों को संयुक्त रूप से और पृथक रूप से जिम्मेदार ठहराया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि न केवल वाहन स्वामी, बल्कि पशु परिवहन में शामिल अन्य व्यक्तियों का भी यह दायित्व है कि वे गोवंशों के भरण–पोषण के लिए आवश्यक राशि का भुगतान करें।

न्यायालयों के आदेश

माननीय पटना उच्च न्यायालय ने अपने आदेश CR MISC 54293 / 2023 में देवकुंड गौशाला के पक्ष में 7,34,100 रुपये की राशि देने का आदेश पारित किया। इस आदेश में न्यायालय ने मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी के आदेश और अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश औरंगाबाद द्वितीय के निर्णय को उचित ठहराया, जिसमें जप्त गोवंशों के भरण–पोषण के लिए उक्त राशि का भुगतान का आदेश वाहन स्वामी को दिया गया था। इस आदेश के माध्यम से न्यायालय ने यह सुनिश्चित किया कि जप्त किए गए गोवंशों के भरण–पोषण में आए खर्च की जिम्मेदारी वाहन मालिक और अन्य संबंधित व्यक्तियों की होगी, जिनका इन मामलों में दायित्व निर्धारित किया गया था। इसके अतिरिक्त, महाराष्ट्र राज्य में भी कई न्यायालयों ने इस प्रकार के आदेश पारित किए हैं जहां गोवंशों के भरण–पोषण में हुई लागत की वसूली के लिए संबंधित पक्षों को दायित्व सौंपा गया है। यह आदेश सुनिश्चित करते हैं कि जप्त किए गए गोवंशों को उचित देखभाल मिले और उनकी देखभाल के खर्च का भुगतान सुनिश्चित किया जाए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने तीर्थ कुमार साहू बनाम सैयद शमीम कादरी एवं मेहर बानो बेगम बनाम असम राज्य के मामलों में पशु क्रूरता निवारण केस विषयक पशुओं के भरण–पोषण सम्बन्धी नियम 2017 के लागू होने का आदेश पारित किया है। इन आदेशों के माध्यम से न्यायालय ने यह सुनिश्चित किया है कि जप्त किए गए पशुओं के भरण–पोषण के खर्च की वसूली संबंधित पक्षों से की जाए, ताकि पशुओं के अधिकारों की रक्षा हो सके और उन्हें उचित देखभाल मिले। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों से यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार के नियमों का पालन करना केवल पशुओं के संरक्षण के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि पशु स्वामियों और अन्य संबंधित व्यक्तियों को उनके दायित्व का बोध हो और उन्हें इस दायित्व के तहत जिम्मेदार ठहराया जाए।

निष्कर्ष

पशु क्रूरता निवारण नियम 2017 और संबंधित न्यायालयों के आदेश यह सुनिश्चित करते हैं कि जप्त किए गए गोवंशों का भरण–पोषण ठीक से किया जाए और उनकी देखभाल के खर्च की वसूली संबंधित व्यक्तियों से की जाए। इस प्रक्रिया का उद्देश्य पशु अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें सभी प्रकार की क्रूरता से बचाना है। न्यायालयों के आदेश यह साबित करते हैं कि इस प्रकार के मामलों में कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाती है ताकि पशु क्रूरता और अवैध परिवहन के मामलों में सुधार हो सके।

E1 COMPLIANT

AN ISO 9001:2015
CERTIFIED COMPANY

CE

Ply STORY™

ISI

PRODUCT OF
MEGHALAYA

CRAFTING MEMORIES

TERMITE RESISTANT
BORER RESISTANT
FUNGUS RESISTANT
NO CORE GAP
MARINE GRADE
ECO FRIENDLY
WATER PROOF
PHENOL BONDED
100% MEGHALAYA PINE

PRODUCT RANGE

MR PLYWOOD, BWR PLYWOOD, BWP PLYWOOD, BLOCKBOARD,
SHUTTERING PLYWOOD, FLUSHDOOR.

AN ISO CERTIFIED COMPANY OF MEGHALAYA

WORKS
RIANGDO VENEERS PVT. LTD
BARAPANI INDUSTRIAL AREA
UMIAM, RI-BHOI,
MEGHALAYA - 793103, INDIA.

HEAD OFFICE
PANCHAJANYA BHAWAN,
BLOCK - B
BARTHAKUR MILL ROAD,
ULUBARI, GUWAHATI - 781007,
ASSAM, INDIA.

UNO. DEUCE

0361 2456237

www.plystory.com

KK Sharma

GST : 09EMIPS6938F1ZD

9917200512
9411424029

9917200512

Abhishek Rail And Roadlines

abhiroadlines@rediffmail.com

Abhishek Rail And Roadlines Pilibhit Road(पंडित जी का ढाबा) Nawabganj Bareilly UP

GSTIN : 09AERPG8912L1ZU

OEM on GEM

GeM

: 9412282860, 8209651412
9650230754

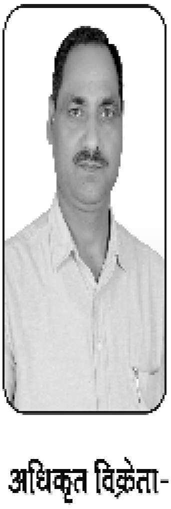

सिंह ग्रामोद्योग

An ISO 9001:2015 and BIFMA Certified Company

कार्यशाला- डी 9, औद्योगिक आस्थान, एटा

शिव शक्ति ग्रामोद्योग

GSTIN : 09AQYPS0(9)A1ZK

कार्यशाला- डी 8, औद्योगिक आस्थान, एटा

We deals in- Steel and Wooden Office Furniture and all types of Home Furniture

अधिकृत विक्रेता- interio MATTERSS Kurl-on

अधिकृत विक्रेता- refresh MATTRESS • PILLOWS • CUSHIONS

Prime Comfort Products (P) Ltd.
Greater Noida- 201308, U.P. India.

प्रो0 धर्मवीर सिंह गहलौत

Sanjay Raman (Vidyavachaspati)

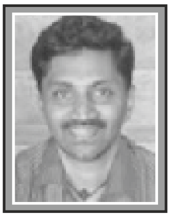

Women and Indigenous Cows

Empowering Rural Women through Dairy Farming

Dairy farming has long been a crucial part of rural livelihoods in India. In recent years, it has emerged as a powerful means of empowering rural women, especially when centered on the nurturing of indigenous cow breeds. Indigenous cows such as Gir, Sahiwal, Rathi and Red Sindhi not only hold immense agricultural, economic and environmental significance, but they are also instrumental in providing rural women a sustainable source of income, enhancing food security and fostering self-reliance.

Traditionally, women in rural India have played an integral role in household agricultural activities, particularly in animal husbandry and dairy farming. However, their contributions often went unrecognized due to deep-rooted gender norms and limited access to resources. This has begun to change with the expansion of dairy cooperatives and self-help groups (SHGs), which have provided women with platforms for collective action and access to financial services. Dairy farming with indigenous cows has become an area where women can exercise agency, make economic contributions and gain a stronger foothold within their communities.

Indigenous Cows and Their Importance

Indigenous cows are particularly well-suited for rural dairy farming due to their adaptability to local climatic conditions and resilience against diseases. Unlike exotic breeds like Jersey or Holstein, indigenous cows require less intensive care and are more sustainable for small-scale farmers. They are often raised using organic practices, with their dung and urine being used as natural fertilizers and pesticides. These cows produce A2 milk, which is known for its health benefits, including easier digestibility and fewer inflammatory properties than A1 milk, commonly produced by foreign breeds. For rural women, these benefits make indigenous cows a practical choice for dairy farming, providing an economic asset that is not only reliable but also environmentally sustainable.

Economic Empowerment through Dairy Farming

For rural women, owning and managing indigenous cows translates into direct economic empowerment. Dairy farming allows women to generate a regular income by selling milk and milk products such as curd, ghee and butter etc. The cooperative model, popularized by institutions like Amul, has given rural women access to organized markets, fair pricing and financial independence. These dairy cooperatives ensure that women receive timely payments for the milk they supply, providing them with steady income that can be reinvested in the household or used for personal needs.

The additional income from dairy farming has a transformative effect on rural households. Women who previously had little or no control over family finances now contribute significantly to household income, allowing them greater decision-making power. This economic

empowerment translates into improved standards of living, better education for children and enhanced health and nutrition for the entire family.

Enhancing Food Security and Nutrition

Beyond the direct income from dairy farming, the role of indigenous cows in improving household food security cannot be overstated. Milk is a critical source of nutrition, especially for families living in economically disadvantaged areas. Indigenous cows, with their high-quality A2 milk, provide a source of protein, calcium and essential vitamins. This contributes to better overall nutrition for the family, particularly for children and the elderly, who are most vulnerable to malnutrition. Women involved in dairy farming often allocate part of the milk produced for household consumption, ensuring that their families have access to fresh and nutritious food. Moreover, the sale of surplus milk and milk products generates income that can be used to purchase other food items, further improving food security. In this way, indigenous dairy farming creates a virtuous cycle, where income generation and nutrition support reinforce each other.

Environmental Sustainability and Organic Farming

One of the lesser-known aspects of indigenous dairy farming is its contribution to environmental sustainability. Indigenous cows are often integral to organic farming systems, where their dung and urine are used to produce bio-fertilizers and bio-pesticides. Women involved in dairy farming often adopt these practices, reducing their reliance on chemical fertilizers and pesticides, which can be expensive and harmful to the environment. This approach not only promotes sustainable agriculture but also helps preserve soil fertility and reduce input costs for rural farmers. Women are increasingly being recognized as stewards of sustainable farming practices and their role in dairy farming with indigenous cows aligns with this trend. By adopting eco-friendly techniques, they contribute to the long-term health of their agricultural ecosystems, making their farms more resilient to environmental shocks such as droughts and floods.

Empowerment through Self-Help Groups and Cooperatives

Self-help groups (SHGs) and dairy cooperatives have played a crucial role in empowering rural women through dairy farming. These groups provide a platform for women to pool their resources, share knowledge and access financial services such as microloans. For many women, joining an SHG is the first step towards entrepreneurship and financial independence. Through these groups, women are trained in dairy farming techniques, animal healthcare and marketing strategies. SHGs also provide access to credit, allowing women to purchase indigenous cows or invest in better infrastructure for milk production. This collective approach not only empowers women economically but also strengthens their social networks, giving them a sense of solidarity and shared purpose.

Challenges and the Way Forward

While dairy farming with indigenous cows has brought significant benefits to rural women, several challenges remain. Lack of access to veterinary services, inadequate infrastructure for milk storage and transportation and fluctuating milk prices can make dairy farming a difficult enterprise. Moreover, patriarchal norms in some areas still limit women's ownership of land and livestock, which can restrict their economic opportunities. To fully harness the potential of indigenous dairy farming as a tool for women's empowerment, it is quite essential to address these barriers. This can be achieved through better government policies that provide support for rural women in dairy farming, improved access to veterinary care and greater investment in rural infrastructure. Furthermore, educational campaigns that promote the nutritional and environmental benefits of indigenous cows can help raise awareness and encourage the adoption of these breeds.

Finally, dairy farming with indigenous cows has emerged as a powerful means of empowering rural women in India. Through this activity, women are not only improving their household incomes and food security but also gaining recognition as key contributors to their communities. As they take ownership of dairy enterprises, rural women are challenging traditional gender roles and creating a pathway toward financial independence, better nutrition and environmental sustainability. Indigenous dairy farming thus holds immense potential to drive social and economic change, making it a vital area for continued support and development.

Dr. Aastha Pathak

GOPASTHAMI
GAU POOJA MAHA-UTSAV

Sarva Kaama-dudhe Devi Sarva Teerthee-bhishechini |
Paavane Surabhi Shreshthe Devi Tubhyam Namostute ||

Meaning of the Maha Mantra :

Salutations to the great Goddess, The One who fulfills the wishes of the devotees, The One who lives as a seed in all cows, Salutations to the Mother of the Universe.

Gopashtami is celebrated on the Ashtami tithi of Shukla Paksha in the Kartik month. On this day, cows are worshiped. Gopashtami is a festival dedicated to worship and offer prayers to the cows. The individuals pay tribute to cow wealth (Godhan) and also show gratitude and respect to the cows which are regarded as the life giver. In Hindu culture, cows are called as 'Gau Mata' and are worshipped like the Goddess. The ritual of offering prayers and worshipping the calves and cows is similar to the festival of Govatsa Dwadashi which is celebrated in the regions of Maharashtra. Cows are regarded as the soul of Hindu religion and culture. They are considered as pure and are also worshipped like Hindu deities. As per the Hindu mythology, it is believed that the several deities, goddesses, and gods reside inside a cow and therefore they possess a special place in the Hindu religion. They are believed to be the owner of spiritual and divine qualities and are another form of Goddess Earth. As per the Hindu beliefs, the individuals who worship cow on the eve of Gopashtami are blessed with a happy life and good fortune. It also helps the devotees in realizing their desires. There are several stories which are associated with the celebration of Gopashtami. As per the Hindu scriptures, cows are considered as dearest to Lord Krishna. As per the beliefs, Gopashtami was the specific day when Nand Maharaj sent Lord Krishna and Lord Balaram for the very first time to herd the cows as they both entered into the Pauganda age i.e age between 6 to 10 years. And thus, from this particular day, they both were in charge to herd the cows. As per the legends, it is believed that Lord Indra because of his ego wanted to showcase his prowess to all the Vrindavan people. So, he decided to flood the entire region of Brij so that the people bow in front of the deity and therefore it resulted in seven day long torrential rains. Lord Krishna realized that the region and the people are in danger, so to save them he lifted the

Govardhan Parvat on his little finger to offer shelter to all the beings. On the eighth day, Lord Indra realized his mistake and the rains stopped. He sought forgiveness from Lord Krishna. Surbhi cow showered milk on Lord Indra and Lord Krishna and declared Lord Krishna as Govinda who is meant to be the Lord of cows. Though it was the eighth day which is called as Ashtami, that particular day is celebrated as Gopashtami. If we see the medical importance of various holy outcomes of cow, Cow milk is considered the nearest alternative to human milk for human newborns. Ayurveda, the greatest sciences of the Hindu society, talks in detail about a medicine for plants known as panchagavya, this is used to stimulate growth in plants. It is made out of cow milk, curd, clarified butter-ghee, cow's urine and cow dung. Sushruta Samhita an important Ayurvedic manuscript written over 5000 years ago, mentions in its section 45, Sutra (verse) no 217, 220 and 221 that cow urine is easily digestible, cures cough and colic problems, eczema, leucoderma and numerous other diseases. There are a few things to be done on Gopashtami. First and foremost the cows are decorated and offered jaggery, rice, water and grass to please their appetites. The people also tend to take a parikrama around the cows to protect and take care of all cows. It is also common practice to apply the soil from underneath the cow's feet on the forehead. This is known as Guadhuli. Guadhuli is applied to remove financial problems from one's life. Go-puja is done on gopasthami. Devotees visit the gosala, bathe and clean the cows and the gosala. Cows are decorated with cloth and jewellery before offering special ritual by the devotees. Special fodders are fed for good health and special drive is organized for its preservation. On this day, Sri Krishna puja and cow Puja is performed along with pradakshina to acquire blessing for a good and happier life. Devotees also pay special respect to cows for its utilities in daily life. Cows provide milk that helps in fulfilling the nutritional requirement of the people like a mother. This is why cows are held sacred and worshipped in Hindu religion as a mother. The glories of the cow and her protection are discussed by senior devotees. All of them feed the cows and take part in a feast near the gosala. The way gomata bless other just like that way; may this Gopasthami, Gomata bless us all with happiness and prosperity and fullfill our lives with love and joy.

गोपाष्टमी पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश अरोरा परिवार
मो. : 9009925081

विन्नी स्टेप्स इन्दौर
लेडिज, किड्स फूट वियर
फोन : 0731-2533530
582, एम.जी. रोड, अपोजिट बी.टी.सी., इन्दौर (मध्य प्रदेश)

विशेषता
गौरक्षक ही विक्रय करते हैं

गोपाष्टमी पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

M/S. VIMALA DEVI KARWA
CHARITABLE TRUST

64, NALINISETH ROAD,
KOLKATA-700007 (WEST BANGAL)

CA. Jasraj Shrishrimal, Advocate

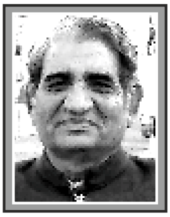

Animal Custody Rules 2017 and Section 325 of new BNS 2023

"ALL GAU MATA & PASHU PRANI LOVERS OUGHT TO KNOW"

SECTION 325 OF NEWLY ENACTED LAW BHARTIYA NYAYA SANHITA 2023 HAS REPLACED SECTION 428 AND 429 OF OLD INDIAN PENAL CODE. NEW SECTION EXTENDED THE SCOPE OF ANIMALS AND NOT ONLY LIMITED TO ELEPHANT, CAMEL, HORSE, MULE, BUFFALO, BULL, COW OR OX IRRESPECTIVE OF THEIR VALUE.

Central Govt., has framed very vital Rules for custody of animals during pendency of trial in the case by virtue of powers conferred on it by Section 38(1) of Prevention of Cruelty to Animals Act 1960, in short herein after referred as PCA Act. These Rules are called as Prevention of Cruelty to Animals (Case and Maintenance of Property Animals) Rules 2017.

These Rules are so critical and effective that now any body can save the animals of all kinds through out the length and breadth of country as these rules are uniformly applicable to whole of India unless amended by any State Legislature. Therefore all Gau Mata and Pashu Prani Lovers ought to know them, specially to save animals in Kerala and other States where there is no anti cow slaughter laws like in other States.

These Rules came into force from 23-5-2017. Object of these Rules was to strictly see that no cruelty is committed on animals as the PCA Act 1960 was enacted for the sole purpose of welfare of animals. The word animal means any living creature other than a human being.

Custody of Animals to Gaushalas:

Various types of cruelties are enumerated in section 11 of the PCA Act, Violators of said section 11 will be punished and animals on whom cruelty is committed, will be seized by Police.

Rule 3 of said Rules 2017 provides for custody of animals pending litigation and empowers the Magistrate to direct the animals to be housed at any animal welfare organization or Gaushala after, they are seized by Police. Thus, normally in case of cruelties committed on animals, they are to be given custody to A.W.O.S or Gaushala.

Rule 4 of said rules 2017 provides that the Magistrate while directing the payment of transport, maintenance and treatment charges to Gaushala shall use the rates prescribed by State animal welfare Board per day per animal as the minimum amount to be paid to Gaushala/AWO.

Rule 5 provides for forfeiting of animals, if the owner of animal is unable the execute the bond for transport, maintenance and treatment to cover all reasonable cost incurred and anticipated cost to be incurred by Gaushala or AWO within 3 days of direction issued by

Magistrate. Thus animals will be forfeited, if said Bond equal to cost is not executed. In most cases, offenders do not execute the Bond and as such magistrate may pass order for their forfeiture. AWO is entitled to draw the amount from said Bond every fortnightly equal to actual cost incurred for said purposes.

Sub rule 4 of above rule stipulates that when an vehicle is involved in the offence, magistrate may direct that the vehicle be kept as security. Sub rule 5 provides that the vehicle owner consigner, consignee, transporter, agent or any other person involved in violation shall be jointly and severally liable for the said cost of transport, maintenance and treatment. Sub rule 8 prescribe that the if owner and the accused, do not furnish bond due to their incapability, local authority may be directed to bear such costs and recover the same from said accused as arrears of land revenue.

Thus above Rules shall be brought to the knowledge of all Police officers, Magistrates or Lawyers to enable them to properly and effectively enforce the rules in the interest of welfare of mute, speechless, dumb and hapless animals.

Section 325 of newly enacted law Bhartiya Nyaya Sanhita 2023 has replaced section 428 and 429 of old Indian Penal Code. New section extended the scope of animals and not only limited to elephant, camel, horse, mule, buffalo, bull, cow or ox irrespective of their value. Said section 325 is extracted below for read reference.

Mischief by killing or maiming animal: "Whoever commits mischief by killing, poisoning, maiming or rendering useless any animal shall be punished with imprisonment of either description for a term which may extend to five years, or with fine, or with both." Thus, above section is very important and crucial to protect the animals who are subjected to severe cruelties every minute and Second by mighty human being though they have served them without any expectation.

पवित्र–पावन पर्व ''दीपावली–गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव'' के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

नगर पालिका परिषद सोरो द्वारा संचालित

कान्हा गौशाला

में गोवंशों के लिए पर्याप्त चारा, भूसा, चोकर, पीने का पानी, टीन शैड आदि की व्यवस्था है एवं बीमार गोवंशों की चिकित्सा पशु चिकित्साधिकारी सोरों द्वारा की जाती है।

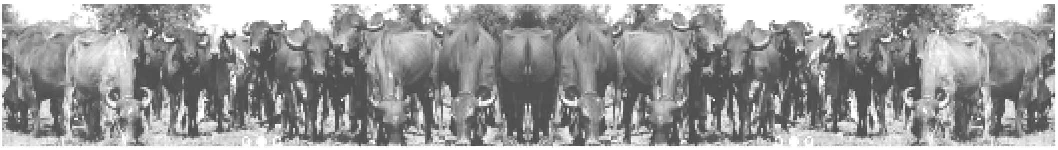

श्री रामेश्वरदयाल महेरे
अध्यक्ष,
नगर पालिका परिषद, सोरों, कासगंज (उ.प्र.)

श्री मुकेश कुमार
अधिशासी अधिकारी,
नगर पालिका परिषद, सोरों, कासगंज (उ.प्र.)

GYAN

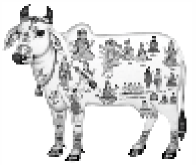

GS

उच्च कोटि के ईट एंव टाइल निर्माता

Building Your Dreams Into Reality

GYAN BRICK FIELD INT UDYOG

Contact : 9721144554, 9415128921

125/82, K-Block, Govind Nagar, Kanpur

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

विकास त्यागी

अधिशासी अभियन्ता

उत्तरीखण्ड गंगा नहर रुड़की हरिद्वार

नगर पालिक निगम, रतलाम (म.प्र.)
सर्वेक्षण
प्रहलाद पटेल
महापौर
आज ही सही वाला
सेप्टिक टैंक बनवाओ
चैक करो, क्या आपका सेप्टिक टैंक सही वाला है?
ताकि पानी, मल यानी मलासुर से दूषित ना हो
14420 पर कॉल करके
सेप्टिक टैंक और सीवर की सफ़ाई अधिकृत सफाईमित्र से ही कराएँ

AROME
अध्यात्म की
खुश्बू...
/ AromeWorld

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के
555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ
भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद,
(विश्व हिंदू परिषद पश्चिम महाराष्ट्र)
श्री महेंद्रभाई देवी, श्री अनिल जोरी, श्री विलास फाटक,
श्री वसंतराव रणपिसे, सौ सुनीताताई देशमुख
गोआधारित
पंचगव्य औषधी विक्री केंद्र
51 नारायण पेठ कबीर बाग पुणे 30 (महाराष्ट्र)

पवित्र-पावन पर्व "दीपावली-गोपाष्टमी और श्रीगुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाशोत्सव" के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

जिला पंचायत रतलाम

सदैव आपकी सेवा में उपस्थित

श्रीमती लाला बाई शंभू लाल चंद्रवंशी
अध्यक्ष, जिला पंचायत रतलाम

श्री केशुराम निनामा
उपाध्यक्ष, जिला पंचायत रतलाम

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय
सेवा सुशासन और जनकल्याण का अडिग संकल्प
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नागरिक सुविधा और राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए तकनीकी सुधार डिजिटलाइजेशन, ई-रिकॉर्ड के माध्यम से आम-जन के कार्यों को आसान बनाना और हितधारकों को सीधा लाभ देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।
सरकार ने सुशासन और नागरिक सेवा को प्राथमिकता देकर हर वर्ग का लाभ सुनिश्चित किया है।
इन अभूतपूर्व प्रयासों से मध्यप्रदेश अब उन्नति के नए युग में प्रवेश कर रहा है।
• नामांतरण, बंटवारा जैसे विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण के लिए सभी 55 जिलों में साइबर तहसील परियोजना लागू। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
• संपदा 2.0 रजिस्ट्री के लिए ई-पंजीयन एवं ई-स्टाम्पिंग की नवीन प्रणाली। दस्तावेजों के ऑनलाइन निष्पादन, शीघ्र आदि कार्य होंगे आसान।
• मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागीय समीक्षा बैठकों का आयोजन। कानून व्यवस्था के साथ बड़े पैमाने पर किए गए विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण।
• राजस्व महाअभियान के दोनों चरणों में 80 लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण।
• जिला, संभाग, तहसील आदि की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय।
• मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री अब स्वयं भरेंगे अपना इनकम टैक्स।
• प्रदेश की अंतर्राज्यीय सीमाओं पर 1 जुलाई, 2024 से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर रोड सेफ्टी एंड इन्फोर्समेंट चेकिंग पॉइंट की व्यवस्था शुरू।
• वारंट और समन की तामील के लिए ई-तकनीक का उपयोग प्रारंभ। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है।
• प्रदेश के किसी भी जवान के शहीद होने पर दी जाने वाली सहायता राशि में से 50% शहीद की पत्नी और 50% माता-पिता को देने का निर्णय।
• 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर शीघ्र अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू।
• बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को धूल चटाने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन।
• प्रदेश में थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी।
• शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35% आरक्षण।
• भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण।
D19171/24

प्रकृति के सम्मान का उत्सव
गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के लिए
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
की अभिनव पहल
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
प्रदेशभर की गौ-शालाओं में गोवर्धन पर्व का सामुदायिक आयोजन
प्रगति और पर्यावरण के प्रति सजगता की मिसाल बनता मध्यप्रदेश
• प्रदेश में संचालित 1,500 से अधिक गौ-शालाओं में 3.30 लाख गौ-वंश का पालन। शीघ्र ही लगभग 2,500 नई गौ-शालाएं प्रारंभ होंगी जिनमें 4.50 लाख गौ-वंश का पालन हो सकेगा।
• गौ-वंश के बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश 20 रुपये की राशि बढ़ाकर 40 रुपये की जा रही है।
• दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच एमओयू। आगामी 5 वर्षों में लगभग 12,000 दुग्ध समितियां 25 लाख लीटर दूध एकत्रित करेंगी।
• देश में सर्वाधिक 15 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती करने वाले मध्यप्रदेश में गौ-वंश को प्रोत्साहन देने की पहल से जैविक खेती उत्पादन बढ़ेगा।
• दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर ब्लॉक में एक 'वृंदावन ग्राम' बनेगा।
• गौ-शालाओं का बजट 150 करोड़ से बढ़ाकर 250 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष एवं मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना में 195 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।
• ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले CNG प्लांट की स्थापना।
D19171/24

JAISHREE INDUSTRIES LTD.

An ISO 9001:2008 Certified Co.

Leader in Indian Granite industry enjoys worldwide reputation as processors and suppliers of Premium Quality Granite, Slabs & Tiles.

(MARBLE & GRANITE DIVISION)

Tile Size Available

305 mm x 305 mm
406 mm x 406 mm
610 mm x 305 mm
610 mm x 457 mm
457 mm x 457 mm
610 mm x 610 mm

(MINERALS & CHEMICAL DIVISION)

Quartz Lumps

Quartz Powder

D-12, Rajouri Garden, New Delhi-110027, INDIA
Phone: +91-11-41444471/72/73. Fax: +91-11-41420985
E-mail: jaishreegranites@yahoo.co.uk
Website: www.jaishreegranites.com

Granite Plant: S.No. 1166, S. N. Padu (V), Chimakurthy Road, Dist. Prakasam, Ongole-523225 (A.P.)

Mineral Plant: Survey No. 23, 556, 557 & 558, National Highway No. 5, Bogulu Mandal, Bogulu Village Nellore- 524142 (A. P.)

ELIXIR
THE ELIXIR TOUCH
ELIXIR GROUP OF COMPANIES

DIVINE INDIA
INFRASTRUCTURE PVT. LTD.
A STEP TOWARDS BETTER FUTURE

At Elixir Group, we redefine real estate. With over 25 years of expertise and 10 million square feet developed, our commitment to quality and innovation makes us a trusted industry leader. **Our services encompass:**

- Real Estate Development
- Architecture & Project Management
- Construction & Engineering
- Facility Management
- Hospitality
- Co-Working Space
- Investment & Advise
- Commercial Leasing
- Development Operation & Management Partnership

GET IN TOUCH

Explore the future with Elixir Group. Contact us to begin your journey toward an iconic space today.

Email: info@elixirworld.in
Website: elixirworld.in

Head Office: Elixir Business Park, Sector-127, Noida -201304

Scan Me!

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 12-13
प्रकाशन तिथि : 09 दिसम्बर 2024

KAILASH GROUP OF HOSPITALS

E-mail : kailash.noida@kailashhealthcare.com, Website: www.kailashhealthcare.com

NABH ACCREDITED

0120-2 44 44 44 | 0120-2 22 22 22

Our identity is built on the — Healthcare par excellence — 40 YEARS OF TRUST — foundation of your trust.

CARDIOLOGY

Mr. Mohammad Mobin
I want to thank Dr. Satish Mathew who carried out an exceptional Open Heart Surgery for my unbearable chest pain. Thank you Kailash Hospital.

GENERAL & LAPAROSCOPIC SURGERY

Miss Nishi Singh
I was having gallbladder stones for which Dr. Rahul Dev performed an excellent stone removal surgery. I want to thank Kailash Hospital for exceptional care.

UROLOGY

Mr. Ramesh Kr. Chadda
Dr. Rana Kumar treated me of Hematuria. A patient-centric care from all doctors and nursing staff treated me the best way possible. I'm thankful to them.

GYNAECOLOGY

Mrs Jainab
Dr. Shikha Joshi in Kailash Hospital saved my life. I was having large Subserosal Fibroid Uterus and was in extreme pain. She is very cooperative and kind many thanks to her.

NEUROSURGERY

Master Sidharth A. Kumar (12-yrs)
I fell from the 9th floor while playing. Dr. Shrikant Sharma and his Neuro Team treated me exceptionally well and saved my life. I'm thankful to the entire team.

To Avail Kailash Homecare Services Contact nearest Kailash Hospital Branch

OUR STRENGTHS

- 9 Hospitals
- 2200+ Beds
- 600+ Consultant Doctors
- 30+ Operation Theatres
- 4 Cath Labs
- 500+ Dedicated Critical Care Beds
- 6500+ Committed Medical Staff

OUR SPECIALITIES

- Cardiology & CTVS
- Neurology & Neurosurgery
- Orthopaedic & Joint Replacement
- Urology & Nephrology
- Gastroenterology & GI surgery
- Mother & Child care

Sector-27 Noida 0120-2444444
Sector-71 Noida 0120-2222222
Kailash Deepak Hospital, East-Delhi 011-35353535
Greater Noida 0120-2322222
Dehradun 0135-2663000
Jewar 05738-273333
Khurja 05738-255555
NATUROPATHY GREATER NOIDA 0120-2327000
Kailash Health Village Sector-62, Noida 9999998801

Download Kailash Healthcare App

KailashHospitals | Kailash Healthcare | KailashHealth | KailashHealthcare

24 X 7 SERVICES: Emergency | Lab & Diagnostics | Blood Bank | Pharmacy | Ambulance

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक